भजन

अध्याय 1

1 धन्य अछि ओ आदमी जे अभक्तक सलाह मे नहि चलैत अछि आ ने पापी सभक बाट मे ठाढ़ अछि आ ने तिरस्कृत लोकक आसन मे बैसैत अछि।
2 मुदा परमेश् वरक धर्म-नियम मे हुनका प्रसन्नता होइत छनि। आ अपन नियम मे दिन-राति मनन करैत अछि।
3 ओ पानिक नदीक कात मे रोपल गाछ जकाँ होयत जे अपन समय मे फल दैत अछि। ओकर पात सेहो मुरझाएब नहि। ओ जे किछु करताह से फलित होयत।
4 अभक्त सभ एहन नहि अछि, बल् कि ओहि भूसा जकाँ अछि जकरा हवा भगा दैत अछि।
5 तेँ अभक्त सभ न्याय मे नहि ठाढ़ रहत आ ने पापी सभ धर्मी सभक मंडली मे।
6 किएक तँ परमेश् वर धार्मिक लोकक बाट जनैत छथि, मुदा अभक्तक बाट नाश भऽ जायत।

अध्याय 2

1 विधर्मी सभ किएक क्रोधित होइत अछि आ लोक सभ व्यर्थक कल्पना करैत अछि?
2 पृथ् वीक राजा सभ ठाढ़ भऽ गेलाह आ शासक सभ एक संग परमेश् वर आ हुनकर अभिषिक्त सभक विरुद्ध विचार-विमर्श करैत छथि।
3 हम सभ ओकर सभक पट्टी तोड़ि कऽ ओकरा सभक डोरी अपना सभसँ दूर फेकि दिअ।
4 जे आकाश मे बैसल अछि से हँसत, प्रभु हुनका सभक उपहास करत।
5 तखन ओ अपन क्रोध मे हुनका सभ सँ गप्प करत आ अपन घोर नाराजगी मे हुनका सभ केँ परेशान करत।
6 तइयो हम अपन राजा केँ अपन पवित्र सियोन पहाड़ पर राखि देलहुँ।
7 हम आज्ञाक प्रचार करब, परमेश् वर हमरा कहलथिन, ‘अहाँ हमर पुत्र छी। आइ हम तोहर जनम देलहुँ।
8 हमरा सँ माँगू, हम अहाँ केँ जाति-जाति केँ अहाँक उत्तराधिकारक रूप मे दऽ देब आ पृथ् वीक अन्त्य भाग अहाँक सम्पत्तिक लेल दऽ देब।”
9 लोहाक छड़ी सँ ओकरा सभ केँ तोड़ि दियौक। अहाँ ओकरा सभ केँ कुम्हारक बर्तन जकाँ टुकड़ा-टुकड़ा कऽ देब।
10 हे राजा सभ, आब बुद्धिमान बनू।
11 भय सँ परमेश् वरक सेवा करू आ काँपैत-काँपैत आनन्दित होउ।
12 पुत्र केँ चुम्मा लिअ, जाहि सँ ओ क्रोधित नहि भऽ जाय आ अहाँ सभ बाट सँ नाश भऽ जायब। धन्य छथि सभ जे हुनका पर भरोसा करैत छथि।

अध्याय 3

1 (दाऊदक एकटा भजन, जखन ओ अपन पुत्र अबशालोम सँ भागि गेलाह।) प्रभु, ओ सभ हमरा कोना परेशान करय बला अछि! बहुतो एहन अछि जे हमरा विरुद्ध उठैत अछि।
2 बहुतो एहन लोक अछि जे हमर प्राणक विषय मे कहैत अछि जे, “परमेश्वर मे हुनकर कोनो सहायता नहि अछि।” सेलाह।
3 मुदा, हे परमेश् वर, अहाँ हमरा लेल ढाल छी। हमर महिमा आ हमर माथ उठौनिहार।
4 हम अपन आवाज सँ परमेश् वर सँ पुकारलहुँ आ ओ हमरा अपन पवित्र पहाड़ी सँ बाहर निकलि कऽ सुनलनि। सेलाह।
5 हम हमरा सुति कऽ सुति गेलहुँ। हम जागि गेलहुँ; कारण, परमेश् वर हमरा सहारा देलनि।
6 हम दस हजार लोक सँ नहि डेराएब जे चारू कात हमरा विरुद्ध ठाढ़ भऽ गेल अछि।
7 हे प्रभु, उठू। हे हमर परमेश् वर, हमरा बचाउ, किएक तँ अहाँ हमर सभ शत्रु केँ गालक हड्डी पर मारि देलहुँ। अहाँ अभक्तक दाँत तोड़ि देलहुँ।
8 उद्धार परमेश् वरक अछि, अहाँक आशीष अहाँक प्रजा पर अछि। सेलाह।

अध्याय 4

1 (नेगिनोथक प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे हमर धार्मिकताक परमेश् वर, जखन हम पुकारैत छी तखन हमरा सुनू। हमरा पर दया करू आ हमर प्रार्थना सुनू।
2 हे मनुष् य-पुत्र, अहाँ सभ हमर महिमा केँ कतेक दिन धरि लज्जा मे बदलब? अहाँ सभ कतेक दिन धरि व्यर्थता सँ प्रेम करब आ पट्टा पर चढ़ब? सेलाह।
3 मुदा ई जानि लिअ जे परमेश् वर अपना लेल परमेश् वर केँ अलग कयलनि अछि।
4 भयभीत भऽ कऽ ठाढ़ रहू आ पाप नहि करू। सेलाह।
5 धार्मिकताक बलिदान चढ़ाउ आ परमेश् वर पर भरोसा करू।
6 बहुतो लोक कहैत छथि जे, “हमरा सभ केँ कोनो नीक के देखाओत?” प्रभु, अहाँ अपन मुँहक इजोत हमरा सभ पर उठाउ।
7 अहाँ हमरा हृदय मे आनन्दित होयब, जखन कि हुनका लोकनिक धान आ मदिरा बढ़ि गेल छलनि।
8 हम दुनू गोटे हमरा शान्तिपूर्वक सुति देब आ सुति जायब, किएक तँ अहाँ, परमेश् वर, हमरा मात्र सुरक्षित रहय दैत छी।

अध्याय 5

1 (नेहिलोतक प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे प्रभु, हमर बात पर कान करू, हमर ध्यान पर विचार करू।
2 हमर राजा आ हमर परमेश् वर, हमर पुकारक आवाज सुनू, किएक तँ हम अहाँ सँ प्रार्थना करब।
3 हे प्रभु, भोरे हमर आवाज सुनब। भोरे-भोर हम अपन प्रार्थना अहाँ लग राखब आ आँखि उठा कऽ देखब।”
4 अहाँ कोनो एहन परमेश् वर नहि छी जे दुष् टता मे प्रसन्न होइत छी।
5 मूर्ख अहाँक नजरि मे ठाढ़ नहि होयत, अहाँ सभ अधर्मक काज करयवला सँ घृणा करैत छी।
6 अहाँ पट्टा बजनिहार सभ केँ नष्ट कऽ दिअ, परमेश् वर खूनी आ धोखेबाज सँ घृणा करताह।
7 मुदा हम अहाँक दयाक भरमार सँ अहाँक घर मे आबि जायब।

8 हे परमेश् वर, हमर शत्रु सभक कारणेँ हमरा अपन धार्मिकता मे अगुवाई करू। हमर मुँह सोझे अपन बाट बनाउ।
9 किएक तँ हुनका सभक मुँह मे कोनो विश् वास नहि अछि। हुनका लोकनिक भीतरक भाग बहुत दुष्टता छनि; हुनका लोकनिक कंठ खुजल कब्र अछि। जीहसँ चापलूसी करैत छथि।
10 हे परमेश् वर, अहाँ ओकरा सभ केँ नष्ट करू। अपन-अपन विचार सँ खसि पड़य। हुनका सभक अपराधक भरमार मे ओकरा सभ केँ बाहर निकालि दियौक। किएक तँ ओ सभ अहाँक विरुद्ध विद्रोह कयने अछि।"
11 मुदा जे सभ अहाँ पर भरोसा करैत अछि, से सभ आनन्दित रहय, अहाँ हुनका सभक रक्षा करबाक कारणेँ ओ सभ सदिखन आनन्द सँ चिचियाबय।
12 हे परमेश् वर, अहाँ धर्मी केँ आशीष देब। अनुग्रह सँ ओकरा ढाल जकाँ घेरब।

अध्याय 6

1 (शेमिनिथ पर नेगिनोथक प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमरा अपन क्रोध मे डाँटि नहि दिअ आ ने अपन गरम नाराजगी मे हमरा ताड़ब नहि दिअ।
2 हे प्रभु, हमरा पर दया करू। हम कमजोर छी, हे प्रभु, हमरा ठीक करू। किएक तँ हमर हड्डी सभ परेशान अछि।
3 हमर प्राण सेहो बहुत परेशान अछि, मुदा अहाँ, हे प्रभु, अहाँ कतेक दिन धरि?
4 हे परमेश् वर, घुरि जाउ, हमर प्राण केँ बचाउ।
5 मृत् यु मे अहाँक स्मरण नहि होइत अछि।
6 हम अपन कुहरैत थाकि गेल छी। भरि राति हमरा हेलबाक लेल अपन बिछाओन बना दैत छी; हम अपन सोफा पर नोर सँ पानि दैत छी ।
7 दुखक कारणेँ हमर आँखि भस्म भऽ गेल अछि। हमर सभ दुश्मनक कारणेँ ई बूढ़ भ' जाइत अछि।
8 हे सभ अधर्म करऽ वला सभ, हमरा सँ हटि जाउ। किएक तँ परमेश् वर हमर कानबाक आवाज सुनने छथि।
9 परमेश् वर हमर विनती सुनलनि। हमर प्रार्थना परमेश् वर ग्रहण करताह।
10 हमर सभ शत्रु लज्जित होथि आ घोर परेशान होथि, ओ सभ घुरि कऽ अचानक लज्जित होथि।

अध्याय 7

1 (दाऊदक शिगियोन, जे ओ परमेश् वरक लेल गबैत छलाह, जे ओ बेनजामिनक कुशक वचनक विषय मे गबैत छलाह।) हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, हम अहाँ पर भरोसा करैत छी।
2 कहीं ओ हमर प्राण केँ सिंह जकाँ फाड़ि कऽ नहि फाड़ि देत, जखन कि उद्धार करयवला कियो नहि अछि।
3 हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, जँ हम ई काज कएने छी। जँ हमरा हाथ मे अधर्म अछि।
4 जे हमरा संग शान्ति मे रहनिहार केँ हम अधलाहक प्रतिफल दऽ देने छी। (हँ, हम ओकरा उद्धार कऽ देलहुँ जे बिना कारणे हमर शत्रु अछि।)
5 शत्रु हमर प्राण केँ सताबय आ ओकरा पकड़य। हँ, ओ हमर प्राण केँ पृथ्वी पर रौंदय, आ हमर आदर केँ धूरा मे राखय। सेलाह।
6 हे परमेश् वर, अपन क्रोध मे उठू, हमर शत्रु सभक क्रोधक कारणेँ उठू।
7 एहि तरहेँ लोकक मंडली अहाँ केँ चारू कात घुमाओत।
8 परमेश् वर लोक सभक न् याय करताह, हे परमेश् वर, हमर धार्मिकता आ हमर अखंडताक अनुसार जे हमरा मे अछि, हमरा पर न्याय करू।
9 ओ दुष्टक दुष्टताक अंत भऽ जाय। मुदा धर्मी केँ ठाढ़ करू, किएक तँ धर्मी परमेश् वर हृदय आ बागडोर परखैत छथि।
10 हमर बचाव परमेश् वरक अछि जे सोझ हृदयक लोक केँ उद्धार करैत छथि।
11 परमेश् वर धर्मी सभक न् याय करैत छथि आ परमेश् वर सभ दिन दुष् ट लोक पर क्रोधित रहैत छथि।
12 जँ ओ नहि घुमि जायत तँ ओ अपन तलवार चलाओत। ओ अपन धनुष मोड़ि कऽ तैयार कऽ लेने छथि।
13 ओ हुनका लेल मृत्युक साधन सेहो तैयार कयलनि अछि। सताबै वाला के खिलाफ अपन बाण लगाबै छै।
14 देखू, ओ अधर्मक संग प्रसव करैत अछि, आ दुष् टताक गर्भ धारण कऽ कऽ झूठ बाजलि।
15 ओ गड्ढा बनौलनि आ ओकरा खोदलनि आ ओहि खाधि मे खसि पड़लाह जे ओ बनौने छलाह।
16 ओकर दुष्टता ओकर माथ पर घुरि कऽ आओत आ ओकर हिंसक व्यवहार ओकरे पाट पर उतरि जायत।
17 हम हुनकर धार्मिकताक अनुसार परमेश् वरक स्तुति करब आ परमेश् वरक नामक स्तुति गाबब।

अध्याय 8

1 (गित्तीतक प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे हमर प्रभु परमेश् वर, अहाँक नाम समस्त पृथ् वी मे कतेक श्रेष्ठ अछि! जे अहाँक महिमा केँ आकाश सँ ऊपर राखि देलनि।
2 अहाँ अपन शत्रु सभक कारणेँ शिशु आ दूध पिलाबला सभक मुँह सँ सामर्थ् य निर्धारित कएने छी, जाहि सँ अहाँ शत्रु आ प्रतिशोध लेनिहार केँ शान्त कऽ सकब।
3 जखन हम अहाँक आकाश, अहाँक आँगुरक काज, चान आ तारा पर विचार करब, जे अहाँ निर्धारित केने छी।
4 मनुष् यक की होइत छैक जे अहाँ ओकरा पर चिंतन करैत छी? आ मनुष् यक पुत्र, जे अहाँ ओकरा पर पहुँचैत छी?
5 किएक तँ अहाँ ओकरा स् वर्गदूत सभ सँ कनेक नीचाँ बना देलियैक आ ओकरा महिमा आ आदरक मुकुट पहिरा देलियैक।
6 अहाँ ओकरा अपन हाथक काज सभ पर प्रभुत्व लगा देलियैक। अहाँ सभ किछु ओकर पएरक नीचाँ राखि देलहुँ।
7 सभ बरद आ बैल, हँ, आ खेतक जानवर।
8 आकाशक चिड़ै आ समुद्रक माछ आ समुद्रक बाट मे जे किछु गुजरैत अछि।
9 हे हमर प्रभु, अहाँक नाम समस्त पृथ्वी मे कतेक श्रेष्ठ अछि!

अध्याय 9

1 (मुथ्लाबेन पर प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हम अहाँक पूरा मोन सँ स्तुति करब। हम तोहर सभटा अद्भुत काज देखा देब।
2 हम अहाँ पर आनन्दित होयब आ आनन्दित होयब, हे परमात्मा, हम अहाँक नामक स्तुति गाबब।

3 जखन हमर शत्रु सभ पाछू घुमि जायत तखन ओ सभ अहाँक सोझाँ खसि पड़त आ नष्ट भऽ जायत।
4 अहाँ हमर अधिकार आ हमर मुद्दा कैँ निर्वाह केलहुँ। अहाँ सिंहासन पर बैसल सही न्याय करैत छी।
5 अहाँ जाति-जाति कैँ डाँटि देलहुँ, दुष्ट कैँ नष्ट कयलहुँ, ओकर नाम अनन्त काल धरि मेटा देलहुँ।
6 हे शत्रु, विनाशक अंत भ’ गेल अछि, आ अहाँ नगर सभ कैँ नष्ट कऽ देलहुँ। हुनका लोकनिक स्मारक सेहो हुनका सभक संग नष्ट भ' जाइत छनि।
7 मुदा परमेश् वर अनन्त काल धरि टिकल रहताह।
8 ओ संसारक न् याय धार्मिकताक अनुसार करताह, ओ लोक सभक न् याय सत् यता मे करताह।
9 परमेश् वर सेहो दबल-कुचलल लोकक शरणालय बनताह, विपत्तिक समय मे शरणार्थी बनताह।
10 जे सभ अहाँक नाम जनैत अछि, से सभ अहाँ पर भरोसा राखत, किएक तँ अहाँ परमेश् वर, जे सभ अहाँ कैँ तकैत अछि, तकरा सभ कैँ नहि छोड़लहुँ।
11 सियोन मे रहनिहार परमेश् वरक स्तुति गाउ।
12 जखन ओ खूनक लेल पूछताछ करैत अछि तँ ओकरा सभ कैँ मोन पाड़ैत अछि।
13 हे प्रभु, हमरा पर दया करू। जे हमरा घृणा करैत अछि, अहाँ जे हमरा मृत्युक फाटक सँ उठबैत छी, ताहि पर हम अपन कष्ट पर विचार करू।
14 हम सियोनक बेटीक फाटक मे तोहर सभटा स्तुति कऽ सकब।
15 गैर-यहूदी सभ ओहि गड्ढा मे डूबि गेल अछि जे ओ सभ बनौने छल।
16 परमेश् वर कैँ ओहि न् याय सँ चिन्हल जाइत छनि जे ओ जे न् याय करैत छथि, दुष्ट अपन हाथक काज मे फँसल छथि। हिग्गैओन। सेलाह।
17 दुष्ट सभ नरक मे बदलि जायत आ सभ जाति जे परमेश् वर कैँ बिसरि जायत।
18 किएक तँ जरूरतमंद सभ सदिखन बिसरल नहि जायत, गरीबक आशा सदाक लेल नष्ट नहि होयत।
19 हे प्रभु, उठू। मनुष्य हावी नहि होअय।
20 हे परमेश् वर, ओकरा सभ कैँ डरा दियौक, जाहि सँ जाति सभ अपना कैँ मात्र मनुख बुझि सकय। सेलाह।

अध्याय 10

1 हे प्रभु, अहाँ दूर किएक ठाढ़ छी? विपत्तिक समय मे अहाँ किएक नुका जाइत छी?
2 दुष्ट अपन घमंड मे गरीब कैँ सताबैत अछि, ओकरा ओहि षड्यंत्र मे पकड़ल जाय जे ओ सोचने छल।
3 किएक तँ दुष्ट अपन हृदयक इच्छाक घमंड करैत अछि आ लोभी कैँ आशीष दैत अछि, जकरा परमेश् वर घृणा करैत छथि।
4 दुष्ट अपन चेहराक घमंड सँ परमेश् वरक खोज नहि करत।
5 हुनकर बाट सदिखन दुखद रहैत छनि। तोहर न् याय ओकर नजरि सँ बहुत ऊपर अछि।
6 ओ मन मे कहने छथि, “हम नहि हिलब, किएक तँ हम कहियो विपत्ति मे नहि पड़ब।”
7 ओकर मुँह गारि-गरौबलि आ धोखा आ धोखा सँ भरल अछि, ओकर जीहक नीचाँ अधलाह आ व्यर्थता अछि।
8 गाम-गामक गुप्त स्थान मे बैसल अछि, गुप्त स्थान मे निर्दोषक हत्या करैत अछि, ओकर नजरि गरीब पर गुप्त रूप सँ रहैत अछि।
9 ओ अपन मांद मे सिंह जकाँ गुप्त रूप सँ पड़ल रहैत अछि, गरीब कैँ पकड़बाक लेल ओड़ल रहैत अछि, गरीब कैँ पकड़ि लैत अछि जखन ओ ओकरा अपन जाल मे खींचैत अछि।
10 ओ कुबड़ाइत अछि आ अपना कैँ नम्र करैत अछि, जाहि सँ गरीब लोक अपन बलवान सभक द्वारा खसि पड़य।
11 ओ मन मे कहने छथि, “परमेश्‍वर बिसरि गेल छथि। ओ कहियो नहि देखत।
12 हे प्रभु, उठू। हे परमेश् वर, हाथ उठाउ, विनम्र लोक कैँ नहि बिसरि जाउ।
13 दुष्ट सभ परमेश्‍वर कैँ किएक तिरस्कृत करैत अछि? ओ मोने-मोन कहने छथि, “अहाँ एकर माँग नहि करब।”
14 अहाँ देखलहुँ। किएक तँ अहाँ अपन हाथ सँ ओकर बदला लेबऽ लेल दुष् टता आ घृणा देखैत छी। अहाँ पिताहीनक सहायक छी।
15 अहाँ दुष्ट आ दुष्टक बाँहि तोड़ि दियौक, जाबत तक अहाँ कैँ कोनो नहि भेटत ताबत धरि हुनकर दुष्टता कैँ ताकैत रहू।
16 परमेश् वर अनन्त काल धरि राजा छथि।
17 परमेश् वर, अहाँ विनम्र लोकक इच्छा सुनलहुँ, अहाँ हुनका सभक मोन कैँ तैयार करब, अहाँ अपन कान कैँ सुनब।
18 अनाथ आ दबल-कुचलल लोकक न् याय करब जाहि सँ पृथ् वीक लोक आब अत्याचार नहि करय।

अध्याय 11

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) हम परमेश् वर पर भरोसा करैत छी।
2 दुष् ट लोक सभ अपन धनुष मोड़ैत अछि आ तार पर अपन तीर तैयार करैत अछि जाहि सँ सोझ हृदयक लोक पर गुप्त रूप सँ गोली चला सकैत अछि।
3 जँ नींव सभ नष्ट भऽ जायत तँ धर्मी लोक की कऽ सकैत अछि?
4 परमेश् वर अपन पवित्र मन् दिर मे छथि, परमेश् वरक सिंहासन स् वर्ग मे छथि।
5 परमेश् वर धर्मी कैँ परखैत छथि, मुदा दुष्ट आ हिंसा प्रेमी कैँ ओकर प्राण घृणा करैत अछि।
6 ओ दुष्ट सभ पर जाल, आगि आ गंधक आ भयंकर तूफान बरसात।
7 किएक तँ धर्मी परमेश् वर धार्मिकता सँ प्रेम करैत छथि। ओकर मुँह सोझ लोक कैँ देखैत छैक।

अध्याय 12

1 (शेमिनिथ पर प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) हे प्रभु, सहायता करू। किएक तँ परमेश् वरक भक् त मनुष् य समाप्त भऽ जाइत अछि। किएक तँ विश्वासी मनुष् यक सन् तान मे सँ विफल भऽ जाइत अछि।
2 ओ सभ अपन-अपन पड़ोसीक संग व्यर्थ बजैत छथि, चापलूसी करयवला ठोर आ दोग-हृदय सँ बजैत छथि।
3 प्रभु सभ चापलूसी करयवला ठोर आ घमंडी बात बजनिहार जीह कैँ काटि देताह।

4 ओ सभ कहने छथि जे, "हम सभ अपन जीह सँ विजयी भऽ जायब।" हमर सभक ठोर हमर सभक अछि, हमरा सभक प्रभु के अछि?
5 गरीबक अत्याचार आ गरीबक आहक कारणेँ आब हम उठब, परमेश् वर कहैत छथि। जे ओकरा पर फुफकारैत अछि ओकरा सँ हम ओकरा सुरक्षित राखि देब।
6 परमेश् वरक वचन शुद्ध वचन अछि, जेना माटिक भट्ठी मे चानी केँ सात बेर शुद्ध कयल गेल अछि।
7 हे परमेश् वर, अहाँ ओकरा सभ केँ एहि पीढ़ी सँ अनन्त काल धरि सुरक्षित राखब।
8 दुष्ट सभ चारू कात चलैत अछि, जखन कि नीच लोक सभ केँ ऊपर उठाओल जाइत अछि।

अध्याय 13

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे प्रभु, अहाँ हमरा कतेक दिन धरि बिसरि जायब? सदाक लेल? अहाँ हमरासँ कतेक दिन धरि अपन मुँह नुकाएब?
2 हम कतेक दिन धरि अपन प्राण मे सलाह लेब, जे मोन मे नित्य दुख रहैत अछि? हमर शत्रु कतेक दिन धरि हमरा पर ऊँच रहत?
3 हे हमर परमेश् वर, हमरा पर विचार करू आ सुनू।
4 कहीं हमर शत्रु ई नहि कहय जे हम ओकरा पर विजय पाबि गेलहुँ। जे हमरा परेशान करैत अछि, से सभ जखन हम हिलैत छी तखन आनन्दित भ' जाइत अछि।
5 मुदा हम अहाँक दया पर भरोसा केने छी। हमर मोन अहाँक उद्धार मे आनन्दित होयत।
6 हम परमेश् वरक लेल गाबब, किएक तँ ओ हमरा संग प्रखर व्यवहार कयलनि।

अध्याय 14

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) मूर्ख अपन मोन मे कहैत अछि जे, "परमेश् वर नहि छथि।" ओ सभ भ्रष्ट अछि, घृणित काज केलक, नीक काज करयवला केओ नहि अछि।
2 परमेश् वर स् वर्ग सँ मनुष् यक सन् तान सभ दिस तकलनि जे की कियो बुझैत अछि आ परमेश् वरक खोज करैत अछि।
3 सभ एक कात भऽ गेल अछि, सभ एक संग गंदा भऽ गेल अछि।
4 की सभ अधर्मक कोनो ज्ञान नहि? जे हमर लोक केँ रोटी खाइत अछि तेना खाइत अछि आ परमेश् वर केँ नहि पुकारैत अछि।
5 ओतऽ ओ सभ बहुत भयभीत छलाह, किएक तँ परमेश् वर धार्मिक लोकक पीढ़ी मे छथि।
6 अहाँ सभ गरीबक सलाह केँ लज्जित कऽ देलहुँ, किएक तँ परमेश् वर हुनकर शरण छथि।
7 जँ इस्राएलक उद्धार सिय्योन सँ निकलि गेल रहैत! जखन परमेश् वर अपन प्रजा सभक बंदी केँ वापस अनताह तँ याकूब आनन्दित हेताह आ इस्राएल प्रसन्न हेताह।

अध्याय 15

1 (दाऊदक भजन।) प्रभु, अहाँक तम्बू मे के रहत? तोहर पवित्र पहाड़ी मे के रहत?
2 जे सोझ चलैत अछि आ धार्मिकताक काज करैत अछि आ अपन हृदय मे सत् य बजैत अछि।
3 जे अपन जीह सँ कोनो तरहक बात नहि कहैत अछि आ ने अपन पड़ोसी केँ अधलाह करैत अछि आ ने अपन पड़ोसी केँ अपमानित करैत अछि।
4 जकर नजरि मे नीच व्यक्ति केँ तिरस्कार कयल जाइत छैक। मुदा परमेश् वरक भय माननिहार सभक आदर करैत छथि। जे अपन क्षतिक कसम खाइत अछि, मुदा नहि बदलैत अछि।
5 जे अपन पाइ सूदक लेल नहि निकालैत अछि आ निर्दोष केँ प्रतिफल नहि लैत अछि। जे ई सभ काज करत से कहियो नहि हिलत।

अध्याय 16

1 (दाऊदक मिक्ताम।) हे परमेश् वर, हमरा बचाउ, किएक तँ हम अहाँ पर भरोसा करैत छी।
2 हे हमर प्राण, अहाँ परमेश् वर केँ कहलियनि, 'अहाँ हमर प्रभु छी।
3 मुदा पृथ् वी पर जे पवित्र लोक सभ छथि आ श्रेष्ठ लोक सभ केँ, जिनका मे हमर सभटा आनन्द अछि।
4 दोसर देवताक पाछाँ हड़बड़ाबऽ वला सभ हुनका सभक दुख बढ़ि जायत, हम हुनका सभक खूनक पेयबलि नहि चढ़ब आ ने हुनकर सभक नाम हमरा ठोर मे राखब।
5 हमर उत्तराधिकार आ प्याला मे परमेश् वर छथि।
6 पाँति सभ हमरा लेल सुखद स्थान पर खसि पड़ल अछि। हँ, हमरा नीक धरोहर अछि।
7 हम परमेश् वर केँ आशीष देब, जे हमरा सलाह देलनि।
8 हम परमेश् वर केँ सदिखन अपना सोझाँ राखि देलहुँ, कारण ओ हमर दहिना कात छथि, तेँ हम नहि हिलब।
9 तेँ हमर मोन प्रसन्न अछि आ हमर महिमा आनन्दित अछि, हमर शरीर सेहो आशा मे विश्राम करत।
10 अहाँ हमर प्राण केँ नरक मे नहि छोड़ब। आ ने अहाँ अपन पवित्र केँ विनाश देखय देब।
11 अहाँ हमरा जीवनक बाट देखायब। तोहर दहिना कात सदाक लेल भोग अछि।

अध्याय 17

1 (दाऊदक प्रार्थना।) हे प्रभु, सही सुनू, हमर पुकार पर ध्यान दियौक, हमर प्रार्थना पर कान करू जे नकली ठोर सँ नहि निकलैत अछि।
2 हमर वाक्य अहाँक सोझाँ सँ निकलय। अहाँक आँखि ओहि बात सभ केँ देखू जे बराबर अछि।"
3 अहाँ हमर हृदयक परीक्षण केलहुँ। अहाँ हमरा राति मे आबि गेलहुँ। अहाँ हमरा परखलहुँ, मुदा किछु नहि भेटत। हमर उद्देश्य अछि जे हमर मुँह उल्लंघन नहि करत।
4 मनुष् यक काजक विषय मे हम अहाँक ठोरक वचन सँ हमरा विनाशक बाट सँ बचा लेलहुँ।
5 हमर गति केँ अपन बाट मे ठाढ़ करू, जाहि सँ हमर कदम नहि फिसलय।
6 हम अहाँ केँ बजौने छी, कारण, हे परमेश् वर, अहाँ हमर बात सुनब।

7 हे जे अहाँ पर भरोसा रखनिहार सभ केँ अपन दहिना हाथ सँ उद्धार करैत छी, हुनका सभक विरुद्ध उठयवला सभ सँ अपन अद्‌भुत दया देखाउ।
8 हमरा आँखिक नेबो जकाँ राखू, हमरा अपन पाँखिक छाया मे नुकाउ।
9 हमरा पर अत्याचार करय बला दुष् ट लोक सभ सँ, हमर घातक शत्रु सभ सँ, जे हमरा चारू कात घुमा रहल अछि।
10 ओ सभ अपन चर्बी मे समाहित छथि, मुँह सँ घमंडी बजैत छथि।
11 ओ सभ आब हमरा सभक डेग मे घुमि गेल अछि।
12 जेना शेर जे अपन शिकारक लोभी करैत अछि, आ जेना गुप्त स्थान पर लुकायल सिंहक बच्चा हो।
13 हे प्रभु, उठू, ओकरा निराश करू, ओकरा नीचाँ फेकि दियौक।
14 हे परमेश् वर, संसारक लोक सभ सँ, जे एहि जीवन मे अपन हिस्सा अछि आ जकर पेट अहाँ अपन नुकायल खजाना सँ भरैत छी, ओ सभ संतान सभ सँ भरल अछि आ अपन शेष सम् पत्ति हुनका सभक हाथ मे छोड़ि दैत अछि बेब्स।
15 हम तऽ हम अहाँक मुँह धार्मिकता मे देखब।

अध्याय 18

1 (प्रमुख संगीतकार, दाऊदक एकटा भजन, जे परमेश् वरक सेवक छलाह, जे एहि गीतक वचन सभ परमेश् वर केँ ओहि दिन बजौलनि, जखन परमेश् वर हुनका अपन सभ शत्रु सभक हाथ सँ आ साउलक हाथ सँ बचाओलनि : आ ओ कहलनि,) हम अहाँ सँ प्रेम करब, हे प्रभु, हमर शक्ति।
2 प्रभु हमर चट्टान, हमर किला आ हमर उद्धारकर्ता छथि। हमर परमेश् वर, हमर सामर्थ् य, जिनका पर हम भरोसा करब। हमर बकसुआ आ हमर उद्धारक सींग आ हमर ऊँच बुर्ज।
3 हम परमेश् वर केँ पुकारब, जे स्तुति करबाक योग्य छथि।
4 मृत्युक दुख हमरा घेरने छल आ अभक्त लोकक बाढ़ि हमरा डरा देलक।
5 नरकक दुख हमरा चारू कात घेरने छल, मृत्युक जाल हमरा रोकि देलक।
6 हम अपन विपत्ति मे परमेश् वर केँ पुकारलहुँ आ अपन परमेश् वर केँ पुकारलहुँ।
7 तखन धरती काँपि उठल आ काँपि उठल। पहाड़क नींव सभ हिलैत-डुलैत हिलैत गेल, कारण ओ क्रोधित छलाह।
8 हुनकर नाकक छेद सँ धुँआ निकलि गेलनि आ मुँह सँ आगि भस्म भऽ गेलनि।
9 ओ आकाश केँ प्रणाम कऽ कऽ नीचाँ उतरि गेलाह।
10 ओ एकटा करुब पर सवार भऽ कऽ उड़ि गेल।
11 ओ अन्हार केँ अपन गुप्त स्थान बनौलनि। चारू कात ओकर मंडप अन्हार पानि आ आकाशक मोटका मेघ छलैक |
12 हुनका सामने जे तेज छलनि ताहि पर हुनकर मोटका मेघ बीति गेलनि, ओला पाथर आ आगि के कोयला।
13 परमेश् वर आकाश मे गरजैत रहलाह आ परमेश् वर अपन आवाज देलनि। ओला पाथर आ आगि के कोयला।
14 हँ, ओ अपन बाण सभ पठा कऽ छिड़िया देलक। ओ बिजली उड़ा कऽ ओकरा सभकेँ बेचैन कऽ देलक।
15 हे परमेश् वर, अहाँक डाँट पर पानिक नहर सभ देखबा मे आबि गेल आ संसारक नींव सभ देखबा मे आबि गेल।
16 ओ ऊपर सँ पठौलनि, हमरा पकड़ि लेलनि, बहुत रास पानि मे सँ हमरा निकालि लेलनि।
17 ओ हमरा हमर बलवान शत्रु आ हमरा घृणा करय बला सभ सँ बचा लेलक, किएक तँ ओ सभ हमरा लेल बेसी बलशाली छल।
18 हमर विपत्तिक दिन मे ओ सभ हमरा रोकलनि, मुदा परमेश् वर हमर ठहराव छलाह।
19 ओ हमरा एकटा पैघ जगह पर सेहो अनलनि। ओ हमरा छोड़ि देलनि, कारण ओ हमरा मे प्रसन्न छलाह।
20 परमेश् वर हमरा धार्मिकताक अनुसार फल देलनि। हमर हाथक शुद्धताक अनुसार ओ हमरा प्रतिफल देलनि।
21 किएक तँ हम परमेश् वरक बाट सभ केँ पालन करैत छी आ अपन परमेश् वर सँ दुष्टतापूर्वक नहि हटि गेलहुँ।
22 किएक तँ हुनकर सभटा न् याय हमरा सामने छल आ हम हुनकर नियम हमरा सँ नहि हटा देलहुँ।
23 हम हुनका सामने सोझ छलहुँ आ अपन अधर्म सँ अपना केँ सुरक्षित रखैत छलहुँ।
24 तेँ परमेश् वर हमरा हमर धार्मिकताक अनुसार प्रतिफल देलनि आ हुनकर नजरि मे हमर हाथक शुद्धताक अनुसार।
25 दयालु लोकक संग अहाँ अपना केँ दयालु देखाएब। सोझ आदमीक संग अहाँ अपना केँ सोझ देखाएब।
26 शुद्धक संग अहाँ अपना केँ शुद्ध देखाएब। आ फूहड़ लोकक संग अहाँ अपना केँ खिसियाह देखाएब।
27 अहाँ पीड़ित लोक सभ केँ उद्धार करब। मुदा ऊँच नजरि नीचाँ आनि सकैत अछि।
28 अहाँ हमर दीया जरा देब, हमर परमेश् वर परमेश् वर हमर अन् हार केँ रोशन करताह।
29 अहाँक द्वारा हम एकटा दलक बीच दौड़लहुँ। आ हम अपन परमेश् वरक द्वारा एकटा देबाल पर उछलि गेलहुँ।
30 परमेश् वरक बात तँ हुनकर बाट सिद्ध अछि, परमेश् वरक वचन परीक्षा कयल गेल अछि।
31 परमेश् वर के छोड़ि कऽ परमेश् वर के छथि? वा हमरा सभक परमेश् वर केँ छोड़ि के चट्टान अछि?
32 ई परमेश् वर छथि जे हमरा सामर्थ् य सँ कट्टी बान्हि रहल छथि आ हमर बाट केँ सिद्ध करैत छथि।
33 ओ हमर पएर केँ पिछड़क पएर जकाँ बना दैत छथि आ हमरा अपन ऊँच स्थान पर बैसा दैत छथि।
34 ओ हमर हाथ केँ युद्ध करबाक लेल सिखाबैत छथि, जाहि सँ हमर बाँहि सँ स्टीलक धनुष टूटि जाइत अछि।
35 अहाँ हमरा अपन उद्धारक ढाल सेहो दऽ देलियैक, आ अहाँक दहिना हाथ हमरा ऊपर उठौने अछि आ अहाँक कोमलता हमरा महान बना देलक।
36 अहाँ हमरा नीचाँ हमर डेग बढ़ा देलहुँ जे हमर पएर नहि फिसलय।
37 हम अपन शत्रु सभक पाछाँ-पाछाँ गेलहुँ आ ओकरा सभ केँ पकड़ि लेलहुँ, आ जाबत धरि ओ सभ नष्ट नहि भऽ गेल ताबत धरि हम फेर नहि घुमलहुँ।
38 हम ओकरा सभ केँ घायल कऽ देलहुँ जे ओ सभ उठि नहि सकल।
39 किएक तँ अहाँ हमरा युद्धक लेल सामर्थ्यक कटिबद्ध कऽ देलहुँ।
40 अहाँ हमरा अपन शत्रु सभक गरदनि सेहो दऽ देलहुँ। जे हमरा सँ घृणा करैत अछि तकरा सभ केँ हम नष्ट कऽ सकब।"

41 ओ सभ चिचिया उठल, मुदा ओकरा सभ कैँ बचाबऽ बला कियो नहि छल।
42 तखन हम ओकरा सभ कैँ हवाक आगू मे धूरा जकाँ छोट-छोट मारि देलियैक।
43 अहाँ हमरा लोकक झगड़ा सँ मुक्त कऽ देलहुँ। अहाँ हमरा जाति-जातिक मुखिया बना देलहुँ।
44 जहिना ओ सभ हमर बात सुनि कऽ हमर आज्ञा मानत।
45 परदेशी सभ फीका भऽ जायत आ अपन नजदीकी स्थान सँ भयभीत भऽ जायत।
46 प्रभु जीबैत छथि। आ धन्य होउ हमर चट्टान। आ हमर उद्धारक परमेश् वर कैँ उदात्त कयल जाय।
47 ई परमेश् वर छथि जे हमरा पर बदला लैत छथि आ हमरा अधीन लोक सभ कैँ अपना वश मे करैत छथि।
48 ओ हमरा हमर शत्रु सभ सँ बचाबैत छथि, हँ, अहाँ हमरा हमरा विरुद्ध उठय बला सभ सँ ऊपर उठबैत छी।
49 तैँ हे परमेश् वर, हम जाति-जातिक बीच अहाँक धन्यवाद देब आ अहाँक नामक गुणगान करब।
50 ओ अपन राजा कैँ बहुत रास उद्धार दैत छथिन। ओ अपन अभिषिक्त, दाऊद आ ओकर वंशज पर अनन्त काल धरि दया करैत छथि।

अध्याय 19

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) स्वर्ग परमेश् वरक महिमाक प्रचार करैत अछि। आ आकाश ओकर हाथक काज देखाबैत अछि।
2 दिन-प्रतिदिन बाजब बजैत अछि, आ राति-राति ज्ञान देखाबैत अछि।
3 ने कोनो वाणी आ ने भाषा, जतऽ हुनका लोकनिक आवाज नहि सुनल जाइत छनि।
4 हुनका सभक वंश समस्त पृथ् वी पर चलि गेल अछि आ संसारक अन् त धरि हुनकर सभक बात। ओ सभ ओहि मे रौदक लेल एकटा तम्बू राखि देलनि।
5 ओ वर जेकाँ अछि जे अपन कोठली सँ बाहर निकलि कऽ दौड़-धूप करबाक लेल बलवान आदमी जकाँ आनन्दित होइत अछि।
6 ओकर निकलब स् वर्गक छोरसँ आ ओकर चक्कर ओकर छोर धरि होइत छैक।
7 परमेश् वरक नियम सिद्ध अछि जे आत् मा कैँ बदलि दैत अछि, परमेश् वरक गवाही निश्चय अछि आ सरल लोक कैँ बुद्धिमान बना दैत अछि।
8 परमेश् वरक नियम सभ ठीक अछि, जे हृदय कैँ आनन्दित करैत अछि, परमेश् वरक आज्ञा शुद्ध अछि आ आँखि कैँ प्रकाशित करैत अछि।
9 परमेश् वरक भय शुद्ध अछि आ अनन् त काल धरि चलैत अछि, परमेश् वरक न् याय सभ सत् य आ धार्मिक अछि।
10 सोना सँ बेसी, हँ, बहुत नीक सोना सँ बेसी, मधु आ मधुकोश सँ सेहो मीठ।
11 आर हुनका सभक द्वारा अहाँक सेवक चेताओल जाइत अछि।
12 हुनकर गलती के बुझि सकैत अछि? अहाँ हमरा गुप्त दोष सँ शुद्ध करू।
13 अपन दास कैँ सेहो घमंडी पाप सँ बचाउ। हमरा पर हुनका सभक प्रभुत्व नहि होअय, तखन हम सोझ रहब आ पैघ अपराध सँ निर्दोष रहब।"
14 हे परमेश् वर, हमर सामर्थ् य आ हमर उद्धारकर्ता, हमर मुँहक बात आ हमर हृदयक मनन अहाँक नजरि मे स्वीकार्य हो।

अध्याय 20

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) विपत्तिक दिन परमेश् वर अहाँक बात सुनथि। याकूबक परमेश् वरक नाम अहाँक रक्षा करैत अछि।
2 पवित्र स्थान सँ अहाँ कैँ सहायता पठाउ आ सिय्योन सँ अहाँ कैँ मजबूत करू।
3 अपन सभ बलिदानक स्मरण करू आ अपन होमबलि स्वीकार करू। सेलाह।
4 अहाँ कैँ अपन हृदयक अनुसार दान करू आ अपन सभटा विश् वास कैँ पूरा करू।
5 हम सभ अहाँक उद्धार मे आनन्दित रहब आ अपन परमेश् वरक नाम पर अपन झंडा ठाढ़ करब।
6 आब हम जनैत छी जे परमेश् वर अपन अभिषिक्त कैँ उद्धार करैत छथि। ओ अपन पवित्र स्वर्ग सँ ओकर दहिना हाथक उद्धारक शक्ति सँ सुनत।
7 किछु गोटे रथ पर भरोसा करैत छथि आ किछु घोड़ा पर, मुदा हम सभ अपन परमेश् वर परमेश् वरक नाम मोन पाड़ब।
8 ओ सभ नीचाँ खसि पड़ैत अछि आ खसि पड़ैत अछि, मुदा हम सभ जीबि उठलहुँ आ सोझ ठाढ़ भऽ गेल छी।
9 हे परमेश् वर, उद्धार करू, जखन हम सभ पुकारैत छी तखन राजा हमरा सभक बात सुनथि।

अध्याय 21

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, राजा अहाँक सामर्थ् य मे आनन्दित होयत। आ तोहर उद्धार मे ओ कतेक आनन्दित हेताह!
2 अहाँ ओकरा हृदयक इच्छा दऽ देलहुँ आ ओकर ठोरक आग्रह नहि रोकलहुँ। सेलाह।
3 अहाँ ओकरा भलाईक आशीर्वाद सँ रोकैत छी, ओकरा माथ पर शुद्ध सोनाक मुकुट लगा दैत छी।
4 ओ अहाँ सँ प्राण माँगलनि, आ अहाँ ओकरा अनन्त काल धरि दिन भरि देलियैक।
5 अहाँक उद्धार मे हुनकर महिमा बहुत पैघ अछि।
6 अहाँ ओकरा अनन्त काल धरि धन्य बना देलहुँ।
7 किएक तँ राजा परमेश् वर पर भरोसा करैत छथि आ परमेश् वरक दयाक कारणेँ ओ कोनो हलचल नहि करताह।
8 तोहर हाथ तोहर सभ शत्रु कैँ पाबि लेत, तोहर दहिना हाथ तोहर घृणा करयवला सभ कैँ खोजत।
9 अहाँ ओकरा सभ कैँ अपन क्रोधक समय मे आगि मे आगि जकाँ बनाउ।
10 अहाँ हुनका सभक फल कैँ पृथ् वी पर सँ आ मनुष् यक सन् तान मे सँ हुनका सभक संतान कैँ नष्ट कऽ देबनि।
11 किएक तँ ओ सभ अहाँ सभक विरुद्ध अधलाह मनन कऽ रहल छल।

12 तेँ अहाँ हुनका सभ केँ पीठ घुमा देबनि जखन अहाँ हुनका सभक मुँह पर अपन तार पर अपन बाण तैयार करब।
13 हे परमेश् वर, अहाँ अपन सामर्थ् य सँ उदात्त रहू।

अध्याय 22

1 (दाऊदक भजन ऐजेलेथ शहरक प्रमुख संगीतकार केँ।) हमर परमेश् वर, हमर परमेश् वर, अहाँ हमरा किएक छोड़ि देलहुँ? अहाँ हमरा सहायता करबा सँ आ हमर गर्जनाक बात सँ एतेक दूर किएक छी?
2 हे हमर परमेश् वर, हम दिन मे कानैत छी, मुदा अहाँ नहि सुनैत छी। आ राति मे, आ चुप नहि छी।
3 हे इस्राएलक स्तुति मे रहनिहार, अहाँ पवित्र छी।
4 हमरा सभक पूर्वज अहाँ पर भरोसा केने छलाह, ओ सभ भरोसा केने छलाह आ अहाँ हुनका सभ केँ उद्धार केलहुँ।
5 ओ सभ अहाँ केँ पुकारि कऽ मुक्त भऽ गेल।
6 मुदा हम कीड़ा छी, आ ककरो नहि। मनुष् यक निन्दा आ लोकक तिरस्कृत।
7 हमरा देखनिहार सभ हमरा तिरस्कृत करैत हँसैत अछि।
8 ओ परमेश् वर पर भरोसा कयलनि जे ओ ओकरा उद्धार करत।
9 मुदा अहाँ ओ छी जे हमरा कोखि सँ निकालि लेलहुँ।
10 हम गर्भहि सँ तोरा पर फेकल गेलहुँ, अहाँ हमर मायक पेट सँ हमर परमेश् वर छी।
11 हमरा सँ दूर नहि रहू। किएक तँ विपत्ति लग आबि गेल अछि। किएक तँ कोनो मददगार नहि अछि।
12 बहुत रास बैल हमरा घेरने अछि, बाशानक मजबूत बैल हमरा चारू कात घेरने अछि।
13 ओ सभ अपन मुँह सँ हमरा दिस फाड़ि देलक, जेना किनार आ गर्जैत सिंह।
14 हम पानि जकाँ उझलि गेल छी आ हमर सभ हड्डी जोड़सँ निकलि गेल अछि, हमर हृदय मोम जकाँ अछि। हमर आंतक बीच मे पिघलि गेल अछि।
15 हमर शक्ति घैल जकाँ सुखा गेल अछि। हमर जीह हमर जबड़ा सँ चिपकल अछि। आ अहाँ हमरा मृत्युक धूरा मे लऽ गेलहुँ।
16 किएक तँ कुकुर सभ हमरा घेरने अछि, दुष्ट सभक मंडली हमरा घेरने अछि, हमर हाथ आ पएर बेधलक।
17 हम अपन सभ हड्डी केँ कहि सकैत छी, ओ सभ हमरा दिस तकैत अछि आ एकटक तकैत अछि।
18 ओ सभ हमर वस्त्र केँ अपना मे बाँटि कऽ हमर वस्त्र पर चिट्ठी लगाबैत छथि।
19 मुदा हे परमेश् वर, अहाँ हमरा सँ दूर नहि रहू।
20 हमर प्राण केँ तलवार सँ मुक्त करू। कुकुरक शक्तिसँ हमर प्रियतम।
21 हमरा सिंहक मुँहसँ बचाउ, किएक तँ अहाँ हमरा एकशृंगक सींगसँ सुनने छी।
22 हम अपन भाय सभ केँ अहाँक नाम सुनबैत रहब।
23 अहाँ सभ जे सभ परमेश् वरक भय मानैत छी, हुनकर स्तुति करू। अहाँ सभ याकूबक वंशज, हुनकर महिमा करू। अहाँ सभ इस्राएलक वंशज, हुनका सँ डेराउ।"
24 किएक तँ ओ दुखी लोकक दुख केँ तिरस्कृत नहि कयलनि आ ने घृणा कयलनि। आ ने ओकरा सँ मुँह नुका लेलक। मुदा जखन ओ हुनका पुकारलनि तऽ सुनलनि।
25 हमर स्तुति अहाँक पैघ मंडली मे होयत, हम हुनका डरय बला सभक समक्ष अपन व्रत पूरा करब।
26 नम्र लोक सभ भोजन करत आ तृप्त होयत, ओ सभ परमेश् वरक स्तुति करत जे हुनका तकैत अछि, अहाँक हृदय अनन्त काल धरि जीवित रहत।
27 संसारक सभ अन्त परमेश् वरक स्मरण करत आ हुनका दिस घुरत, आ सभ जाति-जातिक लोक अहाँक समक्ष आराधना करत।
28 किएक तँ राज्य परमेश् वरक अछि आ ओ जाति सभक बीच राज्यपाल छथि।
29 पृथ् वी पर जे सभ मोट अछि से सभ खा कऽ आराधना करत।
30 एकटा बीया ओकर सेवा करत। एक पीढ़ी धरि प्रभुक हिसाब-किताब कयल जायत।
31 ओ सभ आबि कऽ जे लोक जन्म लेत, तकरा सभ केँ अपन धार्मिकताक प्रचार करत जे ओ ई काज केने अछि।

अध्याय 23

1 (दाऊदक भजन।) परमेश् वर हमर चरबाह छथि। हमरा कमी नहि होयत।
2 ओ हमरा हरियर चारागाह मे सुताबैत छथि, हमरा शान्त पानिक कात मे लऽ जाइत छथि।
3 ओ हमर प्राण केँ पुनर्स्थापित करैत छथि, ओ हमरा अपन नामक लेल धार्मिकताक बाट पर लऽ जाइत छथि।
4 हँ, जँ हम मृत्युक छायाक घाटी मे चलैत रहब, मुदा कोनो अधलाह सँ नहि डेरब, किएक तँ अहाँ हमरा संग छी। तोहर छड़ी आ तोहर लाठी हमरा सान्त्वना दैत अछि।
5 अहाँ हमर शत्रु सभक सोझाँ हमरा सोझाँ एकटा टेबुल तैयार करैत छी। हमर प्याला दौड़ि जाइत अछि।
6 हमरा जीवन भरि भलाई आ दया हमरा पाछाँ चलत।

अध्याय 24

1 (दाऊदक भजन।) पृथ् वी परमेश् वरक अछि आ ओकर पूर्णता। संसार आ ओहि मे रहनिहार सभ।
2 ओ एकरा समुद्र सभ पर नींव बनौलनि आ बाढ़ि पर ठाढ़ कयलनि।
3 परमेश् वरक पहाड़ी पर के चढ़त? आकि ओकर पवित्र स्थान मे के ठाढ़ होयत?
4 जे हाथ शुद्ध आ शुद्ध हृदय रखैत अछि। जे अपन प्राण केँ व्यर्थ मे नहि उठौलक आ ने छलक शपथ लेलक।
5 ओ परमेश् वरक आशीष आ अपन उद्धारक परमेश् वर सँ धार्मिकता पाबि लेत।
6 हे याकूब, जे हुनका तकैत छथि आ जे अहाँक मुँह तकैत छथि, हुनकर पीढ़ी ई अछि। सेलाह।
7 हे फाटक सभ, अपन माथ उठाउ। हे अनन्त दरबज्जा, अहाँ सभ उठि जाउ। महिमा के राजा भीतर आओत।
8 ई महिमा के राजा के छथि? प्रभु बलवान आ पराक्रमी, युद्ध मे पराक्रमी प्रभु।

9 हे फाटक सभ, अपन माथ उठाउ। हे अनन्त दरबज्जा, ओकरा सभ कैँ ऊपर उठाउ। महिमा के राजा भीतर आओत।
10 ई महिमा के राजा के छथि? सेना सभक परमेश् वर, ओ महिमाक राजा छथि। सेलाह।

अध्याय 25

1 (दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हम अहाँक लेल अपन प्राण उठबैत छी।
2 हे हमर परमेश् वर, हम अहाँ पर भरोसा करैत छी, हमरा लाज नहि हो, हमर शत्रु हमरा पर विजय नहि हो।
3 हँ, जे केओ अहाँक प्रतीक्षा करैत अछि, से लाज नहि करय।
4 हे प्रभु, हमरा अपन बाट देखाउ। हमरा अपन बाट सिखाउ।
5 हमरा अपन सत् य मे लऽ जाउ आ हमरा सिखाउ, किएक तँ अहाँ हमर उद्धारक परमेश् वर छी। अहाँ पर भरि दिन प्रतीक्षा करैत छी।
6 हे प्रभु, अपन कोमल दया आ अपन दया कैँ मोन पाड़ू। किएक तँ ओ सभ पहिनेसँ अछि।
7 हमर युवावस्थाक पाप आ ने हमर अपराधक स्मरण नहि करू।
8 परमेश् वर नीक आ सोझ छथि, तेँ ओ पापी सभ कैँ बाट मे सिखाओत।
9 ओ नम्र लोक कैँ न्याय मे मार्गदर्शन करत, आ नम्र लोक कैँ ओ अपन बाट सिखाओत।
10 परमेश् वरक सभ बाट दया आ सत् य अछि जे हुनकर वाचा आ हुनकर गवाही कैँ पालन करैत अछि।
11 हे प्रभु, अपन नामक कारणेँ हमर अपराध क्षमा करू। कारण ई महान अछि।
12 परमेश् वर सँ डरय बला के अछि? ओकरा ओहि बाट मे सिखाओत जे ओ चुनत।”
13 ओकर प्राण आराम सँ रहत। ओकर वंशज पृथ्वी पर उत्तराधिकारी होयत।
14 परमेश् वरक रहस्य हुनका सभ मे अछि जे हुनका डरैत अछि। ओ हुनका सभ कैँ अपन वाचा देखौताह।
15 हमर नजरि सदिखन परमेश् वर दिस रहैत अछि। किएक तँ ओ हमर पएर जालसँ उखाड़ि लेत।”
16 अहाँ हमरा दिस घुमि कऽ हमरा पर दया करू। कारण, हम उजाड़ आ दुखित छी।
17 हमर हृदयक विपत्ति बढ़ि गेल अछि, हे अहाँ हमरा हमर विपत्ति सँ बाहर निकालू।
18 हमर दुख आ कष्ट कैँ देखू। आ हमर सभ पाप क्षमा करू।
19 हमर शत्रु सभ पर विचार करू। किएक तँ ओ सभ बहुत अछि। आ हमरासँ क्रूर घृणासँ घृणा करैत अछि।
20 हे हमर प्राण कैँ राखू आ हमरा उद्धार करू। कारण हम अहाँ पर भरोसा रखैत छी।”
21 निष्ठा आ सोझता हमरा सुरक्षित राखय। कारण हम अहाँक प्रतीक्षा मे छी।
22 हे परमेश् वर, इस्राएल कैँ ओकर सभ विपत्ति सँ मुक्त करू।

अध्याय 26

1 (दाऊदक भजन।) हे प्रभु, हमरा पर न्याय करू। हम अपन निष्ठा मे चललहुँ, हम परमेश् वर पर सेहो भरोसा केलहुँ। तैँ हम फिसलब नहि।
2 हे परमेश् वर, हमरा परखू आ हमरा परखल जाउ। हमर बागडोर आ हमर दिलक कोशिश करू।
3 किएक तँ अहाँक प्रेम हमरा नजरि मे अछि।
4 हम व्यर्थ लोकक संग नहि बैसल छी आ ने वेशभूषाक संग भीतर जायब।
5 हम अधलाहक मंडली सँ घृणा करैत छी। आ दुष्टक संग नहि बैसत।
6 हम निर्दोषता मे अपन हाथ धोएब, हे प्रभु, हम अहाँक वेदीक घेराबंदी करब।
7 हम धन्यवादक आवाज मे प्रचार-प्रसार करब आ अहाँक सभ आश्चर्यक काजक बारे मे कहब।
8 परमेश् वर, अहाँक घरक निवास आ अहाँक आदरक स्थान हमरा बहुत नीक लागल।
9 हमर प्राण कैँ पापी सभक संग नहि जुटाउ आ ने हमर प्राण कैँ खूनी लोक सभक संग।
10 जकरा हाथ मे अधलाह अछि, आ ओकर दहिना हाथ घूस सँ भरल अछि।
11 मुदा हम अपन निष्ठा मे चलब, हमरा छुटकारा दिअ आ हमरा पर दया करू।
12 हमर पएर समतल जगह पर ठाढ़ अछि, हम सभ मंडली मे परमेश् वरक आशीष करब।

अध्याय 27

1 (दाऊदक भजन।) परमेश् वर हमर इजोत आ उद्धार छथि। हम ककरासँ डरब? प्रभु हमर जीवनक सामर्थ्य छथि। हम ककरासँ डरब?
2 जखन दुष्ट सभ, हमर शत्रु आ शत्रु सभ हमर मांस खाय लेल हमरा पर आबि गेल तऽ ओ सभ ठोकर खा कऽ खसि पड़ल।
3 जँ कोनो सेना हमरा विरुद्ध डेरा डालत, मुदा हमर मोन नहि डरत।
4 हम परमेश् वर सँ एकटा बात चाहैत छी जे हम ताकब। जाहि सँ हम जीवन भरि परमेश् वरक घर मे रहब आ परमेश् वरक सौन्दर्य देखब आ हुनकर मन् दिर मे पूछताछ करब।
5 विपत्तिक समय मे ओ हमरा अपन मंडप मे नुका लेताह। ओ हमरा एकटा चट्टान पर ठाढ़ करत।
6 आब हमर माथ हमरा चारू कातक शत्रु सभ सँ ऊपर उठि जायत। हम गाबब, हँ, हम परमेश् वरक स्तुति गाबब।
7 हे परमेश् वर, जखन हम हमर आवाज सँ कानब तखन सुनू, हमरा पर सेहो दया करू आ हमरा पर उत्तर दिअ।
8 जखन अहाँ कहलहुँ जे, “हमर मुँह ताकू।” हमर मोन तोरा कहलक, “हे प्रभु, हम तोहर मुँह तकब।”
9 हमरा सँ दूर अपन मुँह नहि नुकाउ। अपन नोकर कैँ क्रोध मे नहि छोड़ू। हे हमर उद्धारक परमेश् वर, हमरा नहि छोड़ू आ ने हमरा छोड़ू।
10 जखन हमर पिता आ माय हमरा छोड़ि देताह तखन परमेश् वर हमरा उठा लेताह।
11 हे परमेश् वर, हमरा अपन बाट सिखाउ, आ हमर शत्रु सभक कारणेँ हमरा एकटा सादा बाट पर लऽ जाउ।
12 हमरा अपन शत्रु सभक इच्छा मे नहि छोड़ू, किएक तँ हमरा विरुद्ध झूठ गवाह उठल अछि आ जे क्रूरताक साँस छोड़ैत अछि।

13 हम बेहोश भऽ गेल छलहुँ, जाबत धरि हम विश् वास नहि कएने रहितहुँ जे जीवित लोकक देश मे परमेश् वरक भलाई देखब।
14 परमेश् वरक प्रतीक्षा करू।

अध्याय 28

1 (दाऊदक भजन।) हे हमर चट्टान परमेश् वर, हम तोरा पुकारब। हमरा सामने चुप नहि रहू, कहीं जँ अहाँ हमरा लेल चुप रहब त' हम ओहि गड्ढा मे उतरय बला लोक जकाँ नहि भ' जायब।"
2 जखन हम अहाँ केँ पुकारैत छी आ जखन हम अहाँक पवित्र वचन दिस हाथ उठबैत छी तखन हमर विनतीक आवाज सुनू।
3 हमरा दुष्ट आ अधर्मक काज करनिहार सभक संग नहि खींचू, जे अपन पड़ोसी केँ शान्ति बजबैत छथि, मुदा हुनका सभक हृदय मे दुष् टता अछि।
4 ओकरा सभ केँ ओकर सभक काज आ ओकर सभक अधलाह काजक अनुसार दऽ दियौक। हुनका सभ केँ अपन मरुभूमि बना दियौक।
5 किएक तँ ओ सभ परमेश् वरक काज आ हुनकर हाथक काज केँ परवाह नहि करैत छथि, तेँ ओ ओकरा सभ केँ नष्ट कऽ देताह आ ओकरा सभक निर्माण नहि करताह।
6 परमेश् वरक धन्य होउ, किएक तँ ओ हमर विनतीक आवाज सुनने छथि।
7 परमेश् वर हमर सामर्थ् य आ हमर ढाल छथि। हमर मोन हुनका पर भरोसा केलक, आ हमरा सहायता भेटैत अछि। आ अपन गीत सँ हम हुनकर प्रशंसा करब।
8 परमेश् वर हुनका सभक सामर्थ् य छथि आ हुनकर अभिषिक्त सभक उद्धारक सामर्थ् य छथि।
9 अपन लोक केँ बचाउ आ अपन उत्तराधिकार केँ आशीर्वाद दियौक।

अध्याय 29

1 (दाऊदक भजन।) हे पराक्रमी, परमेश् वर केँ महिमा आ सामर्थ् य दिअ।
2 परमेश् वर केँ हुनकर नामक महिमा दिअ। पवित्रताक सौन्दर्य मे प्रभुक आराधना करू।
3 परमेश् वरक आवाज पानि पर अछि, महिमाक परमेश् वर गरजैत छथि, परमेश् वर बहुत पानि पर छथि।
4 परमेश् वरक आवाज प्रबल अछि। परमेश् वरक आवाज महिमा सँ भरल अछि।
5 परमेश् वरक आवाज देवदारक गाछ तोड़ि दैत अछि। हँ, परमेश् वर लेबनानक देवदारक गाछ तोड़ि दैत छथि।
6 ओ ओकरा सभ केँ बछड़ा जकाँ कूदैत अछि। लेबनान आ सिरिओन एकटा युवा यूनिकॉर्न जकाँ।
7 परमेश् वरक आवाज आगिक लौ केँ बाँटि दैत अछि।
8 परमेश् वरक आवाज जंगल केँ हिला दैत अछि। परमेश् वर कादेशक जंगल केँ हिला दैत छथि।
9 परमेश् वरक आवाज मुर्गी सभ केँ बछड़ा पैदा करैत अछि आ जंगल सभ केँ खोजैत अछि।
10 परमेश् वर जलप्रलय पर बैसल छथि। हँ, परमेश् वर अनन्त काल धरि राजा बैसल छथि।
11 परमेश् वर अपन प्रजा केँ सामर्थ् य देताह। परमेश् वर अपन लोक केँ शान्तिक आशीर्वाद देथिन।

अध्याय 30

1 (दाऊदक घरक समर्पणक समय मे एकटा भजन आ गीत।) हे प्रभु, हम अहाँक प्रशंसा करब। किएक तँ अहाँ हमरा ऊपर उठौलहुँ आ हमर शत्रु सभ केँ हमरा पर आनन्दित नहि केलहुँ।"
2 हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, हम अहाँ केँ पुकारलहुँ आ अहाँ हमरा ठीक कऽ देलहुँ।
3 हे परमेश् वर, अहाँ हमर प्राण केँ चिता सँ उतारलहुँ, अहाँ हमरा जीवित राखि देलहुँ जाहि सँ हम गड्ढा मे नहि उतरब।
4 हे हुनकर पवित्र लोक सभ, परमेश् वरक लेल गाउ, आ हुनकर पवित्रताक स्मरण मे धन् यवाद करू।
5 किएक तँ ओकर क्रोध क्षण भरि नहि रहैत छैक। ओकर पक्ष मे जीवन छैक, कानब एक राति धरि चलैत छैक, मुदा आनन्द भोरे-भोर अबैत छैक।
6 हम अपन समृद्धि मे कहलियनि, "हम कहियो नहि हिलब।"
7 प्रभु, अहाँ अपन कृपा सँ हमर पहाड़ केँ मजगूत बना देलहुँ, अहाँ अपन मुँह नुका लेलहुँ आ हम घबरा गेलहुँ।
8 हे परमेश् वर, हम अहाँ केँ पुकारलहुँ। हम प्रभु सँ विनती केलहुँ।
9 जखन हम गड्ढा मे उतरब तखन हमर खून मे की फायदा? की धूरा तोहर स्तुति करत? की ओ अहाँक सत्यक प्रचार करत?
10 हे परमेश् वर, सुनू आ हमरा पर दया करू।
11 अहाँ हमरा लेल हमर शोक केँ नाच मे बदलि देलहुँ।
12 एहि लेल जे हमर महिमा अहाँक स्तुति गाबय आ चुप नहि रहय। हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, हम अहाँक सदाक लेल धन्यवाद देब।

अध्याय 31

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे प्रभु, हम अहाँ पर भरोसा करैत छी। हमरा कहियो लाज नहि होउ, अपन धार्मिकता मे हमरा बचाउ।
2 हमरा सामने कान झुकाउ। हमरा जल्दी बचाउ, अहाँ हमर मजबूत चट्टान बनू, हमरा उद्धार करबाक लेल रक्षाक घर बनू।"
3 अहाँ हमर चट्टान आ किला छी। तेँ अहाँक नामक कारणेँ हमरा नेतृत्व करू आ हमरा मार्गदर्शन करू।"
4 हमरा ओहि जाल सँ बाहर निकालू जे ओ सभ हमरा लेल गुप्त रूप सँ राखने छथि, किएक तँ अहाँ हमर सामर्थ् य छी।
5 हम अपन आत् मा अहाँक हाथ मे सौंपि रहल छी, हे सत् य परमेश् वर, अहाँ हमरा छुड़ा देलहुँ।
6 हम ओहि सभ सँ घृणा कऽ रहल छी जे झूठ बाजैत अछि, मुदा हम परमेश् वर पर भरोसा करैत छी।
7 हम अहाँक दया पर प्रसन्न आ आनन्दित रहब, किएक तँ अहाँ हमर विपत्ति पर विचार केलहुँ। अहाँ हमर प्राण केँ विपत्ति मे चिन्हलहुँ।
8 हमरा शत्रु सभक हाथ मे नहि बंद कऽ देलहुँ।
9 हे परमेश् वर, हमरा पर दया करू, कारण हम विपत्ति मे छी, हमर आँखि शोक सँ डूबल अछि, हँ, हमर प्राण आ पेट।
10 हमर जीवन शोक मे बीति गेल अछि आ हमर वर्ष आह मे बीति गेल अछि।

11 हम अपन सभ शत्रु सभक बीच अपमानित छलहुँ, मुदा खास
कऽ अपन पड़ोसी सभक बीच आ अपन परिचित सभक लेल
डरैत छलहुँ।
12 हम मृत् यु जकाँ बिसरि गेल छी, हम टूटल पात्र जकाँ छी।
13 हम बहुतो लोकक निन्दा सुनने छी, चारू कात भय छल।
14 मुदा, हे परमेश् वर, हम अहाँ पर भरोसा केलहुँ, हम
कहलियनि, "अहाँ हमर परमेश् वर छी।"
15 हमर समय तोहर हाथ मे अछि।
16 अपन नोकर पर मुँह चमकाउ, अपन दयाक कारणेँ हमरा
बचाउ।
17 हे प्रभु, हमरा लाज नहि होउ। किएक तँ हम अहाँकेँ बजौने
छी।
18 झूठ बाजल ठोर चुप भऽ जाय। जे धर्मी लोकक विरुद्ध घमंड
आ तिरस्कारपूर्वक दुखद बात कहैत अछि।
19 ओ अहाँक भलाई कतेक पैघ अछि जे अहाँ अपना सँ डरय
बला सभक लेल राखि देने छी। जे अहाँ मनुष् य-पुत्रक समक्ष
अहाँ पर भरोसा रखनिहार सभक लेल काज केने छी!
20 अहाँ ओकरा सभ केँ अपन सान्निध्यक गुप्त मे मनुष्यक घमंड
सँ नुका कऽ राखब।
21 परमेश् वरक धन्य होउ, किएक तँ ओ हमरा पर एकटा
मजगूत नगर मे अपन अद्‌भुत दया देखौलनि।
22 हम हड़बड़ा कऽ कहलहुँ जे, "हम अहाँक आँखि सँ कटि गेल
छी।
23 हे ओकर सभ पवित्र लोक सभ, परमेश् वर सँ प्रेम करू,
किएक तँ परमेश् वर विश् वासी केँ सुरक्षित रखैत छथि आ
घमंडी करनिहार केँ भरपूर फल दैत छथि।
24 अहाँ सभ जे सभ परमेश् वर पर आशा रखैत छी, से सभ धैर्य
राखू, आ ओ अहाँ सभक मोन केँ मजगूत करताह।

अध्याय 32

1 (दाऊदक भजन, मस्चिल।) धन्य अछि ओ जेकर अपराध क्षमा
कयल गेल अछि, जकर पाप झाँपल अछि।
2 धन्य अछि ओ आदमी जकरा परमेश् वर अधर्म नहि मानैत
छथि आ जकर आत् मा मे कोनो छल नहि अछि।
3 जखन हम चुप रहलहुँ तँ दिन भरि गर्जनासँ हमर हड्डी बूढ़ भऽ
गेल।
4 किएक तँ दिन-राति तोहर हाथ हमरा पर भारी छल, हमर नमी
गर्मीक रौदी मे बदलि गेल अछि। सेलाह।
5 हम अहाँ केँ अपन पाप केँ स्वीकार कयल, आ अपन अधर्म केँ
हम नहि नुका सकलहुँ। हम कहलियनि, "हम अपन अपराध केँ
परमेश् वरक समक्ष स्वीकार करब। आ अहाँ हमर पापक
अपराध क्षमा कऽ देलहुँ।" सेलाह।
6 किएक तँ परमेश् वरक भक्ति करऽ वला समय मे अहाँ सँ ई
प्रार्थना करत, जखन अहाँ केँ भेटि जायत।
7 अहाँ हमर नुकायल स्थान छी। अहाँ हमरा विपत्ति सँ बचाबह।
अहाँ हमरा मोक्षक गीत सँ चारू कात घुमब। सेलाह।
8 हम अहाँ केँ ओहि बाट पर शिक्षा देब आ अहाँ केँ सिखा देब।
9 अहाँ सभ घोड़ा वा खच्चर जकाँ नहि बनू, जकर कोनो बुद्धि
नहि अछि, जकर मुँह केँ कटहर आ लगाम सँ पकड़ल जाय,
जाहि सँ ओ सभ अहाँक नजदीक नहि आबि जाय।
10 दुष्टक बहुत दुख होयत, मुदा जे परमेश् वर पर भरोसा करैत
अछि, तकरा दया ओकरा चारू कात घेरने रहत।
11 हे धर्मी लोक सभ, प्रभु मे आनन्दित रहू आ आनन्दित रहू।

अध्याय 33

1 हे धर्मी लोकनि, परमेश् वर मे आनन्दित रहू, किएक तँ सोझ
लोकक लेल स्तुति उचित अछि।
2 वीणा सँ परमेश् वरक स्तुति करू।
3 ओकरा एकटा नव गीत गाउ। जोर-जोर स आवाज मे कुशलता
स खेलू।
4 किएक तँ परमेश् वरक वचन ठीक अछि। आ ओकर सभ
काज सत्य मे होइत छैक।
5 ओ धार्मिकता आ न्याय सँ प्रेम करैत अछि, पृथ् वी परमेश्
वरक भलाई सँ भरल अछि।
6 परमेश् वरक वचन सँ आकाश बनल छल। आ ओकर सभ
सेना ओकर मुँहक साँस सँ।
7 ओ समुद्रक पानि केँ ढेर जकाँ जमा करैत अछि आ गहींर केँ
भंडार मे राखि दैत अछि।
8 समस्त पृथ् वी परमेश् वर सँ भयभीत रहय, संसारक सभ
निवासी हुनका पर भयभीत भऽ जाय।
9 ओ बजैत छलाह आ ई काज पूरा भऽ गेलनि। ओ आज्ञा
देलथिन, आ ओ ठाढ़ भ' गेल।
10 परमेश् वर जाति-जाति सभक विश् वास केँ अन् त करैत
छथि।
11 परमेश् वरक विश् वास सदाक लेल ठाढ़ रहैत अछि, हुनकर
हृदयक विचार सभ पीढ़ी धरि।
12 धन्य अछि ओ जाति जकर परमेश् वर परमेश् वर छथि। आ
ओहि लोक सभ केँ, जकरा ओ अपन उत्तराधिकारक लेल चुनने
छथि।
13 परमेश् वर स् वर्ग सँ देखैत छथि। ओ मनुष् यक सभ पुत्र केँ
देखैत अछि।
14 ओ अपन निवास स्थान सँ पृथ् वी पर रहनिहार सभ केँ देखैत
छथि।
15 ओ हुनका सभक हृदय केँ एक समान बनबैत छथि। ओ
हुनका सभक सभ काज पर विचार करैत छथि।
16 सेनाक भीड़क कारणेँ कोनो राजा नहि बचाओल जाइत
अछि।
17 घोड़ा सुरक्षाक लेल व्यर्थ अछि, आ ने ओ अपन पैघ सामर्थ् य
सँ ककरो बचाओत।
18 देखू, परमेश् वरक नजरि ओहि सभ पर अछि जे हुनका सँ
डरैत अछि आ जे हुनकर दया पर आशा करैत अछि।
19 हुनका सभक प्राण केँ मृत्यु सँ बचाबय लेल आ अकाल मे
जीवित रखबाक लेल।
20 हमरा सभक प्राण परमेश् वरक प्रतीक्षा मे अछि, ओ हमरा
सभक सहायक आ ढाल छथि।
21 किएक तँ हमरा सभक मोन हुनका पर आनन्दित होयत,
किएक तँ हम सभ हुनकर पवित्र नाम पर भरोसा केने छी।
22 हे परमेश् वर, अहाँक दया हमरा सभ पर होअय, जेना हम
सभ अहाँ पर आशा करैत छी।

अध्याय 34

1 (दाऊदक एकटा भजन, जखन ओ अबीमेलेकक समक्ष अपन व्यवहार बदलि देलनि, जे हुनका भगा देलनि आ ओ चलि गेलाह।) हम सदिखन परमेश् वर केँ आशीष करब।
2 हमर प्राण ओकरा परमेश् वर पर घमंड करत, विनम्र लोक सभ सुनत आ आनन्दित होयत।
3 हे हमरा संग परमेश् वरक महिमा करू, आ हम सभ मिलिकय हुनकर नाम केँ उच्चा करी।
4 हम परमेश् वरक खोज केलहुँ आ ओ हमर बात सुनलनि आ हमरा सभटा भय सँ मुक्त कऽ देलनि।
5 ओ सभ हुनका दिस तकलक आ हल्लुक भऽ गेल।
6 ई गरीब चिचिया उठल आ परमेश् वर हुनकर बात सुनि कऽ हुनका अपन सभ विपत्ति सँ बचा लेलनि।
7 परमेश् वरक स् वर्गदूत हुनका सभ केँ भयभीत करयवला सभक चारू कात डेरा लगा कऽ हुनका सभ केँ उद्धार दैत छथि।
8 हे चखू आ देखू जे परमेश् वर नीक छथि।
9 हे हुनकर पवित्र लोक सभ, परमेश् वरक भय मानू।
10 सिंहक बच्चा सभक अभाव होइत छैक आ भूख सँ ग्रसित होइत छैक, मुदा जे सभ परमेश् वरक खोज करैत अछि, ओकरा सभ केँ कोनो नीक वस्तुक कमी नहि होयत।
11 हे बच्चा सभ, आऊ, हमर बात सुनू, हम अहाँ सभ केँ परमेश् वरक भय सिखायब।
12 ओ के अछि जे जीवनक इच्छा करैत अछि आ बहुत दिन प्रेम करैत अछि, जाहि सँ ओ नीक देखय?
13 अपन जीह केँ अधलाह सँ बचाउ, आ अपन ठोर केँ धोखा बाजबा सँ बचाउ।
14 अधलाह सँ हटि कऽ नीक काज करू। शांति खोजू, आ ओकर पाछाँ लागू।
15 परमेश् वरक नजरि धर्मी लोक पर रहैत छनि आ हुनकर कान हुनका सभक चीत्कार पर खुजल छनि।
16 परमेश् वरक मुँह अधलाह काज करयवला सभक विरुद्ध अछि, जे पृथ् वी पर सँ हुनका सभक स्मरण केँ समाप्त कऽ दैत छथि।
17 धर्मी लोक सभ पुकारैत छथि आ परमेश् वर सुनैत छथि आ हुनका सभ केँ सभ विपत्ति सँ मुक्त करैत छथि।
18 परमेश् वर टूटल-फूटल हृदयक लोक सभक लग मे छथि। आ पछतावा वाला के उद्धार करै छै।
19 धर्मी लोकक दुख बहुत होइत छैक, मुदा परमेश् वर ओकरा सभ सँ मुक्त करैत छथि।
20 ओ अपन सभ हड्डी केँ सुरक्षित रखैत छथि, ओहि मे सँ एको हड्डी नहि टूटल अछि।
21 अधलाह दुष्ट केँ मारि देत, आ जे धार्मिक लोक सँ घृणा करैत अछि, से उजाड़ भऽ जायत।
22 परमेश् वर अपन सेवक सभक प्राण केँ मुक्त करैत छथि आ हुनका पर भरोसा करनिहार मे सँ कियो उजाड़ नहि होयत।

अध्याय 35

1 (दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमरा संग झगड़ा करयवला सभक संग हमर बातक गुहार लगाउ।
2 ढाल आ बकसुआ पकड़ि कऽ हमर सहायताक लेल ठाढ़ भऽ जाउ।
3 भाला सेहो निकालि कऽ हमरा सताओनिहार सभक विरुद्ध बाट रोकि दियौक।
4 जे हमर प्राणक खोज करैत अछि, ओकरा सभ केँ लज्जित आ लज्जित कयल जाय।
5 हवाक समक्ष भूसा जकाँ होउ, आ परमेश् वरक स् वर्गदूत ओकरा सभक पीछा करथि।
6 हुनका सभक बाट अन्हार आ फिसलल रहय, आ परमेश् वरक स् वर्गदूत हुनका सभ केँ सताबय।
7 किएक तँ ओ सभ हमरा लेल अपन जाल एकटा गड्ढामे नुका कऽ अनने छथि, जे बेवजह हमर प्राणक लेल खोदने छथि।
8 अनजाने मे विनाश ओकरा पर आबि जाय। ओकर जाल जे ओकरा नुकायल छलैक से अपना केँ पकड़ि लेत।
9 हमर प्राण परमेश् वर मे आनन्दित होयत, ओ हुनकर उद्धार मे आनन्दित होयत।
10 हमर सभ हड्डी कहत जे, “प्रभु, अहाँक समान के अछि, जे गरीब केँ ओहि सँ बेसी बलवान सँ, गरीब आ गरीब केँ लूटयवला सँ बचाबैत अछि?”
11 झूठ गवाह सभ उठि गेल। ओ सभ हमरा पर एहन बात लगा देलक जे हम नहि जनैत छलहुँ।
12 ओ सभ हमरा नीकक बदला मे अधलाहक प्रतिफल देलक जाहि सँ हमर प्राण लूटि गेल।
13 मुदा जखन ओ सभ बीमार छल तखन हमर वस्त्र बोरा छल। आ हमर प्रार्थना हमर कोरा मे घुरि गेल।
14 हम अपना केँ ओहिना व्यवहार करैत छलहुँ जेना ओ हमर मित्र वा भाइ हो, हम अपना मायक शोक मनाबला जकाँ प्रणाम कयल।
15 मुदा हमर विपत्ति मे ओ सभ आनन्दित भऽ कऽ एक ठाम जमा भऽ गेल। ओ सभ हमरा नोचि लेलक आ नहि रुकल।
16 भोज-भात मे पाखंडी उपहासक संग ओ सभ हमरा पर दाँत कटैत छल।
17 प्रभु, अहाँ कतेक दिन धरि देखैत रहब? हमर आत्मा केँ हुनका लोकनिक विनाश सँ बचाउ, हमर प्रियतम केँ सिंह सँ बचाउ।
18 हम अहाँ केँ पैघ मंडली मे धन्यवाद देब, बहुत लोकक बीच अहाँक प्रशंसा करब।
19 जे सभ हमर शत्रु अछि, से सभ हमरा पर गलत तरीका सँ आनन्दित नहि होअय, आ जे हमरा सँ बेवजह घृणा करैत अछि, तकरा आँखि सँ नहि आँखि मिड़य।
20 ओ सभ शान्ति नहि बजैत अछि, बल् कि देश मे शान्त लोक सभक विरुद्ध छल-प्रपंच करैत अछि।
21 हँ, ओ सभ हमरा विरुद्ध मुँह खोलि कऽ कहलक, “आहा, आहा, हमरा सभक आँखि देखि लेलक अछि।”
22 हे प्रभु, अहाँ ई देखलहुँ, चुप नहि रहू, हे प्रभु, हमरा सँ दूर नहि रहू।
23 अपन परमेश् वर आ हमर प्रभु, हमर न् यायक लेल अपना केँ जगू।
24 हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, अपन धार्मिकताक अनुसार हमरा पर न्याय करू। हमरा पर ओ सभ आनन्दित नहि होथि।
25 ओ सभ मोने-मोन ई नहि कहथि जे, ‘आह, हमरा सभ केँ सेहो ई चाही।
26 जे हमर आघात पर आनन्दित होइत अछि, ओकरा सभ केँ लज्जित आ भ्रम मे पड़य।

27 हमर धार्मिक काजक अनुग्रह करनिहार सभ हँसी-खुशी सँ
चिचियाबथि आ हर्षित होथि।
28 हमर जीह भरि दिन अहाँक धार्मिकता आ अहाँक स्तुतिक
विषय मे बाजत।

अध्याय 36

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, परमेश् वरक सेवक दाऊदक भजन।)
दुष्टक अपराध हमर मोन मे कहैत अछि जे हुनकर नजरि मे
परमेश् वरक भय नहि छनि।
2 जाबत धरि ओकर अपराध घृणित नहि भऽ जायत, ताबत धरि
ओ अपना केँ चापलूसी करैत अछि।
3 ओकर मुँहक बात अधर्म आ छल अछि, ओ बुद्धिमान बनब आ
नीक काज करब छोड़ि देलक।
4 ओ अपन बिछौन पर दुष् टताक कल्पना करैत अछि। ओ
अपना केँ एहन तरीका पर ठाढ़ करैत अछि जे नीक नहि हो। ओ
बुराई सँ घृणा नहि करैत अछि।
5 हे परमेश् वर, अहाँक दया स् वर्ग मे अछि। अहाँक विश्वास मेघ
धरि पहुँचि जाइत अछि।
6 तोहर धार्मिकता बड़का-बड़का पहाड़ जकाँ अछि। तोहर न्याय
बहुत गहींर अछि, हे परमेश् वर, अहाँ मनुख आ जानवरक रक्षा
करैत छी।
7 हे परमेश् वर, अहाँक प्रेम कतेक उत्तम अछि! तेँ मनुष् यक
संतान सभ अहाँक पाँखिक छाया मे अपन भरोसा राखि लेलक।
8 अहाँक घरक मोटाई सँ ओ सभ प्रचुर मात्रा मे तृप्त हेताह। आ
अहाँ ओकरा सभ केँ अपन भोग-विलासक नदी सँ पीबैत रहब।"
9 अहाँक संग जीवनक फव्वारा अछि, अहाँक इजोत मे हम सभ
इजोत देखब।
10 जे अहाँ केँ चिन्हैत छथि, हुनका सभक प्रति अपन दया बनौने
रहू। आ सोझ हृदयक लोकक लेल तोहर धार्मिकता।
11 घमंडक पएर हमरा पर नहि आबय, आ दुष्टक हाथ हमरा
नहि हटय।
12 ओतऽ अधर्मक काज करयवला सभ खसल अछि, ओ सभ
नीचाँ फेकल गेल अछि आ उठि नहि सकैत अछि।

अध्याय 37

1 (दाऊदक भजन।) दुष् ट करनिहार सभक कारणेँ अपना केँ
चिंतित नहि होउ, आ अधर्म करनिहार सभक प्रति ईर्ष्या नहि
करू।
2 ओ सभ जल्दिये घास जकाँ काटि कऽ हरियर जड़ी-बूटी जकाँ
मुरझा जायत।
3 प्रभु पर भरोसा करू आ नीक काज करू। तेना अहाँ ओहि
देश मे रहब आ सत्ते पेट भरब।"
4 प्रभु मे सेहो आनन्दित रहू। ओ तोहर हृदयक इच्छा अहाँ केँ
देत।"
5 अपन बाट परमेश् वरक समक्ष राखू। हुनका पर सेहो भरोसा
करू। ओ एकरा पूरा कऽ लेताह।"
6 ओ अहाँक धार्मिकता केँ इजोत जकाँ आ अहाँक न्याय केँ
दुपहर जकाँ आनत।
7 प्रभु मे आराम करू आ धैर्यपूर्वक हुनकर प्रतीक्षा करू।
8 क्रोध छोड़ू आ क्रोध केँ त्याग करू।
9 किएक तँ दुष् ट करऽ वला सभ समाप्त भऽ जायत, मुदा जे
सभ परमेश् वरक प्रतीक्षा करैत अछि, तकरा सभ पृथ् वी पर
उत्तराधिकारी बनत।
10 किएक तँ किछुए काल धरि दुष्ट नहि रहत।
11 मुदा नम्र लोक सभ पृथ् वी पर उत्तराधिकारी बनत। आ
शान्तिक प्रचुरता मे आनन्दित हेताह।
12 दुष्ट धर्मी लोकक विरुद्ध साजिश रचैत अछि आ ओकरा दाँत
कटैत अछि।
13 प्रभु ओकरा पर हँसताह, किएक तँ ओ देखैत छथि जे हुनकर
दिन आबि रहल अछि।
14 दुष्ट सभ तलवार निकालि कऽ धनुष मोड़ि कऽ गरीब आ
गरीब लोक सभ केँ नीचाँ फेकि देलक आ सोझ बाटबला लोक
सभ केँ मारि देलक।
15 हुनका सभक तलवार हुनका सभक हृदय मे प्रवेश करत आ
हुनकर धनुष टूटि जायत।
16 धर्मात्माक जे किछु अछि से बहुतो दुष् ट लोकक धन सँ नीक
होइत छैक।
17 किएक तँ दुष्टक बाँहि टूटि जायत, मुदा परमेश् वर धार्मिक
लोकक सहारा दैत छथि।
18 परमेश् वर सोझ लोकक दिन जनैत छथि, आ हुनका सभक
उत्तराधिकार अनन्त काल धरि रहत।
19 अधलाह समय मे ओ सभ लाज नहि करत, आ अकाल मे ओ
सभ तृप्त होयत।
20 मुदा दुष्ट सभ नाश भऽ जायत आ परमेश् वरक शत्रु सभ
मेमनाक चर्बी जकाँ भऽ जायत। धुँआ मे भस्म क' देत।
21 दुष् ट लोक उधार लैत अछि आ फेर नहि दैत अछि, मुदा
धर्मी दया करैत अछि आ दैत अछि।
22 जे सभ हुनका सँ आशीष पाबि लेत, तकरा सभ पृथ् वी पर
उत्तराधिकारी बनत। जे सभ हुनका सँ शापित भऽ गेल छथि,
तकरा सभ केँ काटि देल जेतनि।"
23 नीक लोकक डेग परमेश् वर द्वारा व्यवस्थित कयल गेल अछि,
आ ओ अपन बाट मे आनन्दित होइत अछि।
24 जँ ओ खसि पड़त तँ ओ एकदम नीचाँ नहि फेकल जायत,
किएक तँ परमेश् वर ओकरा हाथ सँ सहारा दैत छथि।
25 हम छोट छलहुँ, आब बूढ़ भ' गेल छी। तैयो हम धर्मी केँ
छोड़ल नहि देखलहुँ आ ने ओकर वंशज रोटी भीख मँगैत
देखलहुँ।
26 ओ सदिखन दयालु छथि आ उधार दैत छथि। आ ओकर वंश
धन्य अछि।
27 अधलाह सँ हटि कऽ नीक काज करू। आ अनन्त काल धरि
रहू।
28 किएक तँ परमेश् वर न् याय सँ प्रेम करैत छथि आ अपन
पवित्र लोक सभ केँ नहि छोड़ैत छथि। ओ सभ सदा-सदा लेल
सुरक्षित अछि, मुदा दुष्टक वंश कटैत रहत।
29 धर्मी लोक सभ ओहि देशक उत्तराधिकारी बनत आ ओहि मे
अनन्त काल धरि रहताह।
30 धर्मी लोकक मुँह बुद्धि बाजैत अछि आ ओकर जीह न् यायक
बात बजैत अछि।
31 ओकर परमेश् वरक धर्म-नियम ओकर हृदय मे अछि।
ओकर कोनो डेग नहि फिसलत।
32 दुष्ट धर्मी केँ देखैत रहैत अछि आ ओकरा मारबाक प्रयास
करैत अछि।

33 परमेश् वर हुनका हाथ मे नहि छोड़ताह आ ने जखन हुनकर न् याय होयत तखन हुनका दोषी ठहरौताह।
34 परमेश् वरक प्रतीक्षा करू आ हुनकर बाट पर नजरि राखू, तखन ओ अहाँ केँ ओहि देशक उत्तराधिकारी बनबाक लेल ऊँच करताह।
35 हम दुष्ट केँ बहुत शक्ति मे देखलहुँ, जे हरियर खाड़ीक गाछ जकाँ पसरल अछि।
36 तैयो ओ विदा भऽ गेलाह, मुदा ओ नहि छलाह।
37 सिद्ध मनुष् य केँ चिन्हू आ सोझ लोक केँ देखू।
38 मुदा अपराधी सभ एक संग नष्ट भऽ जायत, दुष्टक अन् त समाप्त भऽ जायत।
39 मुदा धर्मी सभक उद्धार परमेश् वरक अछि।
40 परमेश् वर हुनका सभक सहायता करताह आ ओकरा सभ केँ उद्धार करताह, ओ ओकरा सभ केँ दुष् ट लोक सभ सँ उद्धार करताह आ ओकरा सभ केँ उद्धार करताह, किएक तँ ओ सभ हुनका सभ पर भरोसा करैत छथि।

अध्याय 38

1 (दाऊदक भजन, स्मरण करबाक लेल।) हे परमेश् वर, हमरा अपन क्रोध मे डाँट नहि दिअ।
2 तोहर बाण हमरा मे टिकल अछि आ तोहर हाथ हमरा बहुत दबाबैत अछि।
3 अहाँक क्रोधक कारणेँ हमर शरीर मे कोनो स्वस्थता नहि अछि। आ ने हमर पापक कारणेँ हमर हड्डी मे कोनो विश्राम अछि।
4 हमर अधर्म हमर माथ पर चलि गेल अछि।
5 हमर मूर्खताक कारणेँ हमर घाव दुर्गन्ध आ भ्रष्ट भऽ गेल अछि।
6 हम परेशान छी। हम बहुत प्रणाम छी। भरि दिन शोक करैत जाइत छी।
7 हमर कमर घृणित रोग सँ भरल अछि, आ हमर शरीर मे कोनो स्वस्थता नहि अछि।
8 हम कमजोर आ टुटि गेल छी।
9 प्रभु, हमर सभटा इच्छा अहाँक समक्ष अछि। आ हमर कुहरब अहाँ सँ नुकायल नहि अछि।
10 हमर मोन हँसैत अछि, हमर सामर्थ्य हमरा क्षीण भऽ रहल अछि, हमर आँखिक इजोत सेहो हमरा सँ चलि गेल अछि।
11 हमर प्रेमी-प्रेमिका आ मित्र हमर घाव सँ दूर ठाढ़ छथि। आ हमर रिश्तेदार सभ दूर ठाढ़ अछि।
12 हमर प्राणक खोज करनिहार सभ सेहो हमरा लेल जाल मे फँसैत अछि, आ हमर आपत्ति चाहनिहार सभ दिन भरि बदमाश बजैत अछि आ धोखाक कल्पना करैत अछि।
13 मुदा हम बहीर जकाँ नहि सुनलहुँ। हम ओहि गूंगा जकाँ छलहुँ जे मुँह नहि खोलैत अछि।
14 एहि तरहेँ हम ओहि आदमी जकाँ छलहुँ जे नहि सुनैत अछि आ जकर मुँह मे कोनो डाँट नहि होइत छैक।
15 हे परमेश् वर, हम अहाँ पर आशा करैत छी, हे हमर परमेश् वर, अहाँ सुनब।
16 हम कहलहुँ, 'हमर बात सुनू, नहि तऽ ओ सभ हमरा पर आनन्दित नहि भऽ जाय।
17 हम रुकबाक लेल तैयार छी, आ हमर दुख सदिखन हमरा सोझाँ मे रहैत अछि।
18 हम अपन अधर्मक प्रचार करब। हम अपन पापक पछतावा करब।
19 मुदा हमर शत्रु सभ जीवंत अछि आ बलवान अछि।
20 जे सभ नीकक बदला मे अधलाहक बदला दैत अछि, से सभ सेहो हमर विरोधी अछि। कारण हम ओहि चीजक पालन करैत छी जे नीक अछि।
21 हे प्रभु, हमरा नहि छोड़ू, हे हमर परमेश् वर, हमरा सँ दूर नहि रहू।
22 हे हमर उद्धारक प्रभु, हमर सहायता करबाक लेल जल्दबाजी करू।

अध्याय 39

1 (प्रमुख संगीतकार, जेदुथुन केँ, दाऊदक भजन।) हम कहलियनि, "हम अपन बाट पर सावधान रहब जाहि सँ हम अपन जीह सँ पाप नहि करी हम।
2 हम चुपचाप गूंग छलहुँ, नीक सँ सेहो चुप रहि गेलहुँ। आ हमर दुख हलचल भ' गेल।
3 जखन हम सोचैत रही जे आगि जरि गेल छल, तखन हम अपन जीह सँ बजलहुँ।
4 प्रभु, हमरा अपन अंत आ हमर जीवनक नाप केँ बुझा दिअ जे ई की अछि। जाहि सँ हम बुझि सकब जे हम कतेक कमजोर छी।
5 देखू, अहाँ हमर दिन केँ हाथक चौड़ाई जकाँ बना देलहुँ। हमर युग अहाँक सोझाँ किछुओ नहि जकाँ अछि। सेलाह।
6 सभ केओ व्यर्थ मे चलैत अछि, ओ सभ व्यर्थ मे व्याकुल होइत अछि, ओ धनक ढेर जमा करैत अछि, मुदा ओकरा ई नहि जनैत अछि जे ओकरा के जमा करत।
7 आब, प्रभु, हमरा की प्रतीक्षा अछि? हमर आशा अहाँ पर अछि।
8 हमरा हमर सभ अपराध सँ मुक्ति दिअ, हमरा मूर्ख सभक निन्दा नहि बनाउ।
9 हम गूंगा छलहुँ, मुँह नहि खोललहुँ। कारण अहाँ ई काज केलहुँ।
10 हमरा सँ अपन प्रहार दूर करू, हम अहाँक हाथक प्रहार सँ भस्म भऽ गेल छी।
11 जखन अहाँ मनुख केँ अधर्मक कारणेँ डाँटि-धोड़ि कऽ सुधारैत छी तँ ओकर सौन्दर्य केँ पतंग जकाँ समाप्त कऽ दैत छी। सेलाह।
12 हे प्रभु, हमर प्रार्थना सुनू, आ हमर पुकार पर कान करू। हमर नोर पर चुप नहि रहू, किएक तँ हम अहाँक संग परदेशी आ प्रवासी छी, जेना हमर सभ पूर्वज छलाह।"
13 हे हमरा क्षमा करू, जाहि सँ हम एतय सँ पहिने सँ बल पाबि सकब आ आब नहि रहब।

अध्याय 40

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हम धैर्यपूर्वक परमेश् वरक प्रतीक्षा कयल। ओ हमरा दिस झुकि गेलाह आ हमर पुकार सुनलनि।
2 ओ हमरा एकटा भयावह गड्ढा सँ, दलदली माटि सँ बाहर निकालि कऽ हमर पएर एकटा चट्टान पर राखि कऽ हमर चाल केँ स्थिर कयलनि।
3 ओ हमरा मुँह मे एकटा नव गीत राखि देलनि, जे हमरा सभक परमेश् वरक स्तुति अछि।

4 धन्य अछि ओ मनुष् य जे परमेश् वर पर भरोसा करैत अछि आ घमंडी लोकक आदर नहि करैत अछि आ ने झूठ दिस मुड़य बला लोकक आदर करैत अछि।
5 हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, अहाँक अद्भुत काज आ अहाँक विचार जे हमरा सभक लेल अछि, से बहुत अछि नंबर देल जा सकैत अछि।
6 बलिदान आ बलिदानक इच्छा नहि छल। हमर कान खोललहुँ, होमबलि आ पापबलि नहि चाहैत छी।
7 तखन हम कहलियनि, “देखू, हम आबि रहल छी।
8 हे हमर परमेश् वर, हम अहाँक इच् छा पूरा करबा मे प्रसन्न छी।
9 हम पैघ मंडली मे धार्मिकताक प्रचार केलहुँ, देखू, हम अपन ठोर नहि रोकलहुँ, हे परमेश् वर, अहाँ जनैत छी।
10 हम अहाँक धार्मिकता केँ अपन हृदय मे नहि नुका लेने छी। हम तोहर विश् वास आ तोहर उद्धारक घोषणा कऽ देलहुँ अछि, तोहर दया आ तोहर सत्य केँ हम पैघ मंडली सँ नहि नुका देलहुँ।
11 हे परमेश् वर, अहाँ अपन कोमल दया हमरा सँ नहि रोकू।
12 असंख्य दुष्टता हमरा चारू कात घेरने अछि। ओ सभ हमर माथक केश सँ बेसी अछि।
13 हे परमेश् वर, हमरा उद्धार करबा मे प्रसन्न रहू।
14 ओ सभ एक संग लज्जित आ लज्जित रहय जे हमर प्राण केँ नष्ट करबाक लेल चाहैत अछि। जे हमरा अधलाह कामना करैत अछि, ओकरा सभ केँ पाछू धकेलि देल जाय आ लज्जित कयल जाय।
15 ओ सभ अपन लाजक फलक लेल उजाड़ भऽ जाय जे हमरा कहैत अछि जे, “आहा, आहा।”
16 जे सभ अहाँ केँ तकैत अछि, से सभ अहाँ पर आनन्दित होउ आ आनन्दित होथि।
17 मुदा हम गरीब आ गरीब छी। तैयो प्रभु हमरा पर सोचैत छथि, अहाँ हमर सहायक आ उद्धारकर्ता छी। हे हमर भगवान, देरी नहि करू।

अध्याय 41

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) धन्य अछि जे गरीबक विचार करैत अछि।
2 परमेश् वर ओकरा बचाओत आ ओकरा जीवित राखत। ओ पृथ्वी पर धन्य होयत, आ अहाँ ओकरा ओकर शत्रु सभक इच्छा मे नहि सौंपब।
3 परमेश् वर ओकरा सुस्त पलंग पर बल देथिन।
4 हम कहलियनि, “प्रभु, हमरा पर दया करू। किएक तँ हम अहाँक विरुद्ध पाप केलहुँ।”
5 हमर शत्रु सभ हमरा पर अधलाह कहैत अछि जे ओ कहिया मरत आ ओकर नाम नष्ट भऽ जायत?
6 जँ ओ हमरा देखय अबैत छथि तँ ओ व्यर्थ बजैत छथि। जखन ओ विदेश जाइत छथि तऽ कहैत छथि।
7 जे सभ हमरा सँ घृणा करैत अछि, से सभ हमरा पर फुसफुसाइत अछि।
8 ओ सभ कहैत छथि जे एकटा अधलाह रोग ओकरा संग चिपकल अछि, आ आब जखन ओ पड़ल रहत तखन ओ फेर नहि उठत।
9 हँ, हमर अपन परिचित मित्र, जकरा पर हम भरोसा केने रही, जे हमर रोटी खाइत छल, ओ हमरा पर अपन एड़ी उठौने अछि।
10 मुदा, हे परमेश् वर, अहाँ हमरा पर दया करू आ हमरा ठाढ़ करू, जाहि सँ हम हुनका सभक बदला दऽ सकब।”
11 हम एहि बात सँ जनैत छी जे अहाँ हमरा पर अनुग्रह करैत छी, किएक तँ हमर शत्रु हमरा पर विजय नहि पाबि रहल अछि।
12 हमरा तऽ अहाँ हमरा अपन अखंडता मे ठाढ़ करैत छी आ हमरा सदाक लेल अपन मुँह सोझाँ राखि दैत छी।
13 इस्राएलक परमेश् वर परमेश् वर परमेश् वर केँ अनन् त सँ अनन् त काल धरि धन् य कयल जाय। आमीन, आ आमीन।

अध्याय 42

1 (कोरहक पुत्र सभक लेल प्रमुख संगीतकार मस्चिल केँ।) जहिना हर्त पानिक धारक पाछाँ हँसैत अछि, तहिना हमर प्राण अहाँक पाछाँ हँसैत अछि, हे परमेश् वर।
2 हमर प्राण परमेश् वरक लेल, जीवित परमेश् वरक लेल प्यासल अछि।
3 हमर नोर दिन-राति हमर भोजन रहल अछि, जखन कि ओ सभ हमरा सदिखन कहैत अछि जे, “तोहर परमेश् वर कतय छथि?”
4 जखन हम ई सभ बात मोन पाड़ैत छी तँ हम अपन प्राण हमरा मे उझलि दैत छी, किएक तँ हम भीड़क संग हुनका सभक संग परमेश् वरक घर गेल रही, हर्ष आ स्तुतिक आवाज मे आ पवित्र दिनक पालन करयवला भीड़क संग।
5 हे हमर प्राण, अहाँ किएक खसल छी? आ अहाँ हमरा मे किएक व्याकुल छी? अहाँ परमेश् वरक आशा राखू, किएक तँ हम हुनकर मुखरक सहायताक कारणेँ हुनकर प्रशंसा करब।”
6 हे हमर परमेश् वर, हमर प्राण हमरा भीतर फेकि गेल अछि, तेँ हम तोरा यरदन भूमि सँ आ हरमोनक, मिजर पहाड़ सँ मोन पाड़ब।
7 गहींर तोहर पानिक झोंक सँ गहींर धरि बजबैत अछि, तोहर सभटा लहरि आ तोहर लहरि हमरा ऊपर चलि गेल अछि।
8 तइयो परमेश् वर दिन मे अपन दया करबाक आज्ञा देताह आ राति मे हुनकर गीत हमरा संग रहत आ हमर प्राणक परमेश् वर सँ हमर प्रार्थना।
9 हम अपन चट्टान परमेश् वर केँ कहब जे, अहाँ हमरा किएक बिसरि गेलहुँ? शत्रु के अत्याचार के कारण हम शोक में कियैक जायब?
10 जहिना हमर हड्डी मे तलवार अछि, तहिना हमर शत्रु सभ हमरा डाँटैत अछि। जखन कि ओ सभ हमरा प्रतिदिन कहैत छथि, “अहाँक परमेश् वर कतय छथि?”
11 हे हमर प्राण, अहाँ किएक खसल छी? आ अहाँ हमरा भीतर किएक व्याकुल छी? अहाँ परमेश् वरक आशा राखू, किएक तँ हम एखनो हुनकर प्रशंसा करब, जे हमर चेहराक स्वास्थ्य आ हमर परमेश् वर छथि।

अध्याय 43

1 हे परमेश् वर, हमरा पर न् याय करू, आ एकटा अभक्त जातिक विरुद्ध हमर बात करू।
2 अहाँ हमर सामर्थ्यक परमेश् वर छी, हमरा किएक फेकि रहल छी? शत्रु के अत्याचार के कारण हम शोक में कियैक जायब?

3 हे अपन इजोत आ अपन सत् य केँ बाहर पठाउ, ओ सभ हमरा अगुवाई करय। ओ सभ हमरा तोहर पवित्र पहाड़ी आ तोहर तम्बू मे लऽ जाय।"
4 तखन हम परमेश् वरक वेदी पर जायब, परमेश् वरक लग हमर अत्यधिक आनन्द होयत।
5 हे हमर प्राण, अहाँ किएक खसल छी? आ अहाँ हमरा भीतर किएक व्याकुल छी? परमेश् वरक आशा राखू, किएक तँ हम एखनो हुनकर प्रशंसा करब, जे हमर चेहराक स्वास्थ्य आ हमर परमेश् वर छथि।

अध्याय 44

1 (कोरहक पुत्र सभक प्रमुख संगीतकार मशिल केँ।) हे परमेश् वर, हम सभ कान सँ सुनने छी जे, हमरा सभक पूर्वज सभ हमरा सभ केँ कहने छथि जे अहाँ हुनका सभक समय मे, पुरान समय मे की काज केलहुँ।
2 अहाँ कोना अपन हाथ सँ जाति-जाति सभ केँ भगा देलहुँ आ ओकरा सभ केँ रोपलहुँ। अहाँ लोक सभ केँ कोना कष्ट देलियैक आ ओकरा सभ केँ बाहर निकालि देलियैक।"
3 किएक तँ ओ सभ अपन तलवारसँ ओहि भूमि पर कब्जा नहि कऽ लेलक आ ने ओकर बाँहि ओकरा सभकेँ बचा सकल, बल् कि तोहर दहिना हाथ, तोहर बाँहि आ तोहर मुँहक इजोत, किएक तँ तोहर ओकरा सभ पर कृपा भेल।
4 हे परमेश् वर, अहाँ हमर राजा छी, याकूबक लेल उद्धारक आज्ञा करू।
5 अहाँक द्वारा हम सभ अपन शत्रु सभ केँ नीचाँ धकेलि देब, अहाँक नामक द्वारा हम सभ ओकरा सभ केँ अपन विरुद्ध उठयवला सभक नीचाँ रौंदब।
6 हम अपन धनुष पर भरोसा नहि करब आ ने हमर तलवार हमरा बचाओत।
7 मुदा अहाँ हमरा सभ केँ हमरा सभक शत्रु सभ सँ बचा लेलहुँ आ जे हमरा सभ सँ घृणा करैत छल, ओकरा सभ केँ लज्जित कऽ देलहुँ।
8 हम सभ दिन भरि परमेश् वर मे घमंड करैत छी आ अहाँक नामक स्तुति अनन्त काल धरि करैत छी। सेलाह।
9 मुदा अहाँ हमरा सभ केँ लज्जित कऽ देलहुँ। आ हमरा सभक सेना सभक संग आगू नहि जाउ।
10 अहाँ हमरा सभ केँ शत्रु सँ घृणा करैत छी आ जे हमरा सभ सँ घृणा करैत अछि, से सभ अपना लेल लूटैत अछि।
11 अहाँ हमरा सभ केँ भोजनक लेल निर्धारित भेँड़ा जकाँ दऽ देलहुँ। आ हमरा सभ केँ गैर-यहूदी सभक बीच छिड़िया देलक।
12 अहाँ अपन लोक केँ बेकार मे बेचैत छी, आ ओकर दाम सँ अपन धन मे वृद्धि नहि करैत छी।
13 अहाँ हमरा सभ केँ अपन पड़ोसी सभक लेल निन्दा, अपना सभक चारूकातक लोक सभक लेल तिरस्कार आ उपहासक विषय बना दैत छी।
14 अहाँ हमरा सभ केँ जाति-जाति सभक बीच एकटा उपशब्द बनबैत छी, लोक सभक बीच माथ हिलाबय बला बात बना दैत छी।
15 हमर उलझन हमरा सोझाँ मे अछि आ हमर मुँहक लाज हमरा झाँपि देने अछि।
16 कारण जे निन्दा करैत अछि आ निन्दा करैत अछि, ओकर आवाज। शत्रु आ प्रतिशोधक कारणेँ।
17 ई सभ हमरा सभ पर आबि गेल अछि। तैयो हम सभ अहाँ केँ नहि बिसरि गेलहुँ आ ने अहाँक वाचा मे झूठ बाजलहुँ।
18 हमर सभक मोन पाछू नहि भ' गेल अछि आ ने हमर सभक डेग अहाँक बाट सँ हटि गेल अछि।
19 यद्यपि अहाँ हमरा सभ केँ अजगरक स्थान पर बहुत चोट पहुँचा देलियैक आ मृत्युक छाया मे हमरा सभ केँ झाँपि देलियैक।
20 जँ हम सभ अपन परमेश् वरक नाम बिसरि गेल छी आ कोनो परदेशी देवता लग हाथ पसारि गेल छी।
21 की परमेश् वर एहि बातक खोज नहि करताह? किएक तँ ओ हृदयक रहस्य केँ जनैत अछि।
22 हँ, अहाँक कारणेँ हम सभ दिन भरि मारल जाइत छी। हम सभ वधक लेल बरद जकाँ गिनल जाइत छी।
23 हे प्रभु, जागू, अहाँ किएक सुतल छी? उठू, हमरा सभकेँ सदाक लेल नहि फेकि दिअ।
24 अहाँ अपन मुँह किएक नुका कऽ हमरा सभक कष्ट आ अत्याचार केँ बिसरि जाइत छी?
25 किएक तँ हमरा सभक प्राण धूरा मे झुकल अछि, हमर सभक पेट पृथ् वी सँ चिपकल अछि।
26 हमरा सभक सहायताक लेल उठू आ अपन दयाक कारणेँ हमरा सभ केँ मुक्त करू।

अध्याय 45

1 (कोराहक पुत्र सभक लेल शोशनिमक प्रमुख संगीतकार केँ प्रेमक गीत।) हमर मोन एकटा नीक बात केँ उन्माद क' रहल अछि एकटा तैयार लेखक।
2 अहाँ मनुष् यक सन् तान सँ बेसी सुन्दर छी।
3 हे परम शक्तिशाली, अपन महिमा आ अपन महिमा सँ अपन तलवार केँ जाँघ पर बान्हि दियौक।
4 सत्य आ नम्रता आ धार्मिकताक कारणेँ अपन महिमा मे सवार भऽ जाउ। तोहर दहिना हाथ तोरा भयावह बात सिखाओत।"
5 राजाक शत्रु सभक हृदय मे तोहर बाण तेज अछि। जाहि सँ लोक अहाँक अधीन भ' जाइत अछि।
6 हे परमेश् वर, अहाँक सिंहासन अनन्त काल धरि अछि।
7 अहाँ धार्मिकता सँ प्रेम करैत छी आ दुष्टता सँ घृणा करैत छी, तेँ परमेश् वर, अहाँक परमेश् वर, अहाँ केँ अहाँक संगी सभ सँ बेसी आनन्दक तेल सँ अभिषेक कयलनि।
8 तोहर सभ वस्त्र मे हाथीक दांतक महल सभ सँ निकलल गंधक गंध, मुसब्बर आ कासियाक गंध आबि रहल अछि, जाहि सँ ओ सभ अहाँ केँ प्रसन्न कयलक।
9 राजा सभक बेटी सभ तोहर आदरणीय स् त्रीगण सभक बीच छलीह, अहाँक दहिना हाथ मे ओफीरक सोना पहिरने रानी ठाढ़ छलीह।
10 हे बेटी, सुनू आ विचार करू आ कान झुकाउ। अपन लोक आ अपन पिताक घर सेहो बिसरि जाउ।
11 तेना राजा अहाँक सौन्दर्यक बहुत इच्छा करताह, किएक तँ ओ अहाँक प्रभु छथि। आ ओकर आराधना करू।
12 सोरक बेटी ओतऽ वरदानक संग रहत। लोकक बीचक धनी लोक सेहो अहाँक अनुग्रह करत।
13 राजाक बेटी भीतर मे सभटा गौरवशाली अछि, ओकर वस्त्र गढ़ल सोनाक अछि।
14 ओकरा सुईक वस्त्र मे राजा लग आनल जायत, ओकर पाछाँ-पाछाँ आबय बला कुमारि कन्या सभ केँ तोहर लग आनल जायत।

15 ओ सभ हर्ष आ हर्षक संग आनल जायत, ओ सभ राजाक महल मे प्रवेश करत।
16 तोहर पूर्वजक बदला मे तोहर संतान सभ रहत, जकरा अहाँ समस्त पृथ् वी मे राजकुमार बना सकैत छी।
17 हम अहाँक नाम सभ पीढ़ी मे स्मरण करबैत रहब, तेँ लोक अहाँक स्तुति अनन्त काल धरि करत।

अध्याय 46

1 (कोराहक पुत्र सभक लेल मुख्य संगीतकार केँ, अलमोथ पर गीत।) परमेश् वर हमरा सभक शरण आ सामर्थ् य छथि, विपत्ति मे बहुत वर्तमान सहायक छथि।
2 तेँ पृथ् वी हटि कऽ आ पहाड़ समुद्रक बीच मे लऽ जा कऽ हम सभ नहि डेरब।
3 भले ओकर पानि गर्जैत आ त्रस्त भ’ जाय, मुदा ओकर सूजन सँ पहाड़ हिलैत हो। सेलाह।
4 एकटा नदी अछि, जकर धार सभ परमेश् वरक नगर केँ आनन्दित करत, जे परमेश् वरक तम् बू सभक पवित्र स् थान अछि।
5 परमेश् वर ओकर बीच मे छथि। ओ नहि हिलत: भगवान ओकर मदद करत, आ से ठीक जल्दी।
6 गैर-यहूदी सभ क्रोधित भऽ गेल, राज्य सभ हिल गेल, ओ अपन आवाज बजौलनि, पृथ् वी पिघलि गेलनि।
7 सेनाक परमेश् वर हमरा सभक संग छथि। याकूबक परमेश् वर हमरा सभक शरण छथि। सेलाह।
8 आऊ, देखू, परमेश् वरक काज सभ, ओ पृथ् वी पर केहन उजाड़ बनौने छथि।
9 ओ पृथ् वीक अन् त धरि युद्ध केँ समाप्त कऽ दैत छथि। धनुष तोड़ि कऽ भाला केँ काटि दैत अछि। ओ रथ केँ आगि मे जरा दैत छथि।
10 शान्त रहू आ ई जानि लिअ जे हम परमेश् वर छी।
11 सेनाक परमेश् वर हमरा सभक संग छथि। याकूबक परमेश् वर हमरा सभक शरण छथि। सेलाह।

अध्याय 47

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा भजन।) हे सभ लोक, ताली बजाउ। विजयक आवाज सँ परमेश् वर केँ चिचियाउ।
2 कारण परमेश् वर परमेश् वर भयावह छथि। ओ समस्त पृथ्वी पर महान राजा छथि।
3 ओ हमरा सभक अधीन लोक सभ केँ आ जाति सभ केँ हमरा सभक पएरक नीचाँ राखि देत।
4 ओ हमरा सभक लेल हमरा सभक उत्तराधिकार चुनताह, जे याकूबक श्रेष्ठता अछि, जिनका सँ ओ प्रेम करैत छलाह। सेलाह।
5 परमेश् वर चिचिया कऽ चलि गेल छथि, प्रभु तुरहीक आवाज मे।
6 परमेश् वरक स्तुति गाउ, स्तुति गाउ।
7 परमेश् वर समस्त पृथ् वीक राजा छथि।
8 परमेश् वर जाति-जाति पर राज करैत छथि, परमेश् वर अपन पवित्रताक सिंहासन पर बैसल छथि।
9 अब्राहमक परमेश् वरक लोक सभ लोकक प्रधान सभ एक ठाम जमा भऽ गेल अछि, किएक तँ पृथ् वीक ढाल परमेश् वरक अछि।

अध्याय 48

1 (कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा गीत आ भजन।) परमेश् वर महान छथि, आ हमरा सभक परमेश् वरक नगर मे, हुनकर पवित्रताक पहाड़ मे बहुत स्तुति करबाक चाही।
2 स्थितिक लेल सुन्दर, समस्त पृथ्वीक आनन्द, उत्तर कात मे सियोन पर्वत, महान राजाक नगर अछि।
3 परमेश् वर ओकर महल सभ मे शरणक रूप मे जानल जाइत छथि।
4 देखू, राजा सभ जमा भ’ गेल छलाह, ओ सभ एक संग ओहि ठाम सँ गुजरैत छलाह।
5 ओ सभ देखि कऽ आश्चर्यचकित भऽ गेल। ओ सभ परेशान भऽ गेलाह आ जल्दी-जल्दी चलि गेलाह।
6 ओतहि भय हुनका सभ केँ पकड़ि लेलकनि आ प्रसव पीड़ा जकाँ पीड़ा भऽ गेलनि।
7 अहाँ तर्शीशक नाव सभ केँ पूरबक हवा सँ तोड़ि दैत छी।
8 जेना हम सभ सुनने छी, सेना सभक परमेश् वरक नगर मे, अपना परमेश् वरक नगर मे सेहो देखलहुँ। सेलाह।
9 हे परमेश् वर, हम सभ अहाँक मन् दिरक बीच मे अहाँक प्रेमक विषय मे सोचलहुँ।
10 हे परमेश् वर, अहाँक नामक अनुसार पृथ् वीक छोर धरि अहाँक स्तुति होइत अछि।
11 अहाँक न्यायक कारणेँ सियोन पर्वत आनन्दित होथि, यहूदाक बेटी सभ आनन्दित होथि।
12 सियोनक चारू कात घुमू आ ओकर चारू कात घुमि जाउ।
13 ओकर दुर्ग सभ केँ नीक जकाँ चिन्हू, ओकर महल सभ पर विचार करू। जाहि सँ अहाँ सभ एकरा बादक पीढ़ी केँ कहि सकब।”
14 किएक तँ ई परमेश् वर हमरा सभक परमेश् वर छथि, ओ मृत् यु धरि हमरा सभक मार्गदर्शक बनताह।

अध्याय 49

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा भजन।) हे सभ लोक, ई बात सुनू। हे संसारक सभ निवासी, कान करू।
2 नीच आ उच्च, धनिक आ गरीब दुनू एक संग।
3 हमर मुँह बुद्धिक बात करत। आ हमर हृदयक ध्यान समझदार होयत।
4 हम अपन कान दृष् टता दिस झुका देब, हम अपन अन् हार बात वीणा पर खोलब।
5 अधलाह दिन मे जखन हमर एड़ीक अधर्म हमरा चारू कात घेरने रहत तखन हम किएक डरब?
6 जे सभ अपन सम्पत्ति पर भरोसा करैत अछि आ अपन धनक भरमार पर घमंड करैत अछि।
7 हुनका सभ मे सँ कियो अपन भाय केँ कोनो तरहेँ मुक्त नहि कऽ सकैत अछि आ ने हुनका लेल परमेश् वर केँ फिरौती दऽ सकैत अछि।
8 (किएक तँ हुनका सभक आत् माक मोक्ष अनमोल अछि, आ ई सदाक लेल समाप्त भऽ जाइत अछि।)

9 ओ एखनो अनन् त काल धरि जीबैत रहथि आ भ्रष्टता नहि देखथि।
10 किएक तँ ओ देखैत छथि जे बुद्धिमान लोक मरि जाइत अछि, तहिना मूर्ख आ क्रूर लोक सेहो नाश भऽ जाइत अछि आ अपन धन-दौलत दोसर पर छोड़ि दैत अछि।
11 हुनका सभक भीतरक विचार ई अछि जे हुनका सभक घर-घर अनन्त काल धरि रहत, आ सभ पीढ़ी धरि हुनका सभक निवास स्थान रहत। अपन जमीन अपन नाम पर कहैत छथि।
12 तैयो मनुष्य आदर-सत्कार मे नहि रहैत अछि।
13 हुनका सभक ई बाट हुनका सभक मूर्खता अछि, तैयो हुनका सभक संतान हुनका सभक बात कैँ स्वीकार करैत छथि। सेलाह।
14 ओ सभ बरद जकाँ चिता मे राखल गेल अछि। मृत्यु हुनका सभ पर भोजन करत। भोरे-भोर सोझ लोक सभ ओकरा सभ पर प्रभुत्व राखत। आ ओकर सभक सौन्दर्य ओकरा सभक निवास स्थान सँ चिता मे समाप्त भ' जायत।
15 मुदा परमेश् वर हमर प्राण कैँ कबरक सामर्थ् य सँ मुक्त करताह, किएक तँ ओ हमरा ग्रहण करताह। सेलाह।
16 जखन केओ धनिक भऽ जायत आ जखन ओकर घरक महिमा बढ़ि जायत तखन अहाँ नहि डेराउ।
17 जखन ओ मरि जायत तखन ओ किछु नहि ल' जायत, ओकर महिमा ओकरा पाछाँ नहि उतरत।
18 ओ जीबैत काल ओ अपन प्राण कैँ आशीर्वाद देलनि, आ जखन अहाँ अपना लेल भलाई करब तखन लोक अहाँक प्रशंसा करत।
19 ओ अपन पूर्वजक पीढ़ी मे जायत। ओ सभ कहियो इजोत नहि देखत।
20 जे मनुष् य मानैत अछि आ नहि बुझैत अछि, ओ नाश भऽ वला जानवर जकाँ अछि।

अध्याय 50

1 (आसाफक भजन।) पराक्रमी परमेश् वर, परमेश् वर, ई बात कहि रहल छथि आ पृथ् वी कैँ सूर्योदय सँ ल' कऽ अस्तन धरि बजौलनि।
2 सियोन सँ, सौन्दर्यक सिद्धता, परमेश् वर चमकि गेल छथि।
3 हमर सभक परमेश् वर आबि जेताह, आ चुप नहि रहताह, हुनका सामने आगि भसि जायत आ चारू कात बहुत तूफान आबि जायत।
4 ओ ऊपर सँ आकाश आ पृथ् वी कैँ बजाओत जाहि सँ ओ अपन लोक सभक न् याय करथि।
5 हमर पवित्र लोक सभ कैँ हमरा लग जमा करू। जे बलिदानक द्वारा हमरा संग वाचा केने अछि।
6 आकाश हुनकर धार्मिकताक प्रचार करत, किएक तँ परमेश् वर स्वयं न्यायाधीश छथि। सेलाह।
7 हे हमर प्रजा, सुनू, हम बाजब। हे इस्राएल, हम तोहर विरुद्ध गवाही देबौक, हम परमेश् वर छी, तोहर परमेश् वर।
8 हम तोहर बलिदान वा होमबलि सभक कारणेँ अहाँ कैँ नहि डाँटब, जे अहाँ हमरा सोझाँ सदिखन रहलहुँ।
9 हम अहाँक घर सँ कोनो बैल नहि निकालब आ ने ओ बकरी अहाँक झुंड मे सँ निकालब।
10 किएक तँ जंगलक हरेक जानवर हमर अछि आ हजार पहाड़ी पर मवेशी।
11 हम पहाड़क सभ चिड़ै सभ कैँ जनैत छी, आ खेतक जंगली जानवर सभ हमर अछि।
12 जँ हम भूखल रहितहुँ तँ हम अहाँ कैँ नहि कहितहुँ, किएक तँ संसार आ ओकर पूर्णता हमर अछि।
13 की हम बैल सभक मांस खाएब आ बकरी सभक खून पीब?
14 परमेश् वर कैँ धन्यवादक चढ़ा दियौक। आ परमेश् वरक प्रति अपन व्रत पूरा करू।
15 विपत्तिक दिन हमरा पुकारब, हम अहाँ कैँ उद्धार करब, आ अहाँ हमरा महिमा करब।
16 मुदा दुष्ट कैँ परमेश् वर कहलथिन, "अहाँ कैँ की करबाक अछि जे अहाँ हमर नियम सभक प्रचार करब आ हमर वाचा कैँ मुँह मे राखब?"
17 अहाँ शिक्षा सँ घृणा करैत छी आ हमर बात कैँ अपना पाछाँ फेकि दैत छी।
18 जखन अहाँ चोर कैँ देखलहुँ तँ ओकरा संग सहमति देलहुँ आ व्यभिचारी सभक संग भाग लेलहुँ।
19 अहाँ अपन मुँह अधलाह कैँ दैत छी, आ अहाँक जीह छल-प्रपंच बनबैत अछि।
20 अहाँ बैसि कऽ अपन भाइक विरोध मे बाजि रहल छी। अहाँ अपन मायक बेटाक निन्दा करैत छी।
21 अहाँ ई सभ काज केलहुँ आ हम चुप रहि गेलहुँ। अहाँ सोचैत छलहुँ जे हम एकदम सँ अपना सन लोक छी, मुदा हम अहाँ कैँ डाँटि देब आ अहाँक नजरि मे ओकरा सभ कैँ व्यवस्थित करब।"
22 अहाँ सभ परमेश् वर कैँ बिसरि रहल छी, एहि बात पर विचार करू, जाहि सँ हम अहाँ सभ कैँ टुकड़-टुकड़ नहि कऽ देब आ उद्धार करयवला कियो नहि होयत।
23 जे केओ स्तुति करैत अछि, से हमर महिमा करैत अछि, आ जे अपन गप्प-सप्प कैँ ठीक-ठीक व्यवस्थित करैत अछि, तकरा हम परमेश् वरक उद्धार देखब।

अध्याय 51

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन, जखन नाथन भविष्यवक्ता बतशेबा गेलाक बाद हुनका लग अयलाह।) हे परमेश् वर, अपन दयाक अनुसार हमरा पर दया करू हमर अपराध मेटा दियौक।
2 हमरा हमर अधर्म सँ पूरा तरहेँ धोउ, आ हमरा पाप सँ शुद्ध करू।
3 हम अपन अपराध कैँ स्वीकार करैत छी, आ हमर पाप सदिखन हमरा सोझाँ रहैत अछि।
4 हम अहाँक विरुद्ध मात्र पाप केलहुँ आ अहाँक नजरि मे ई अधलाह काज केलहुँ, जाहि सँ अहाँ बजैत काल धर्मी ठहरा सकब आ जखन अहाँ न्याय करब तखन स्पष्ट भऽ जायब।
5 देखू, हम अधर्म मे आकार लेलहुँ। आ पाप मे हमर माय हमरा गर्भ मे राखि लेलनि।
6 देखू, अहाँ भीतरक भाग मे सत् य चाहैत छी, आ नुकायल भाग मे अहाँ हमरा बुद्धिक परिचय देब।
7 हमरा हिसोप सँ शुद्ध करू, हम शुद्ध भ' जायब, हमरा धोउ, हम बर्फ सँ उज्जर भ' जायब।
8 हमरा हर्ष आ हर्षक बात सुनाउ। जाहि सँ अहाँ जे हड्डी तोड़ि देलहुँ से आनन्दित हो।"
9 हमर पाप सँ अपन मुँह नुका कऽ हमर सभ अधर्म मेटा दिअ।

10 हे परमेश् वर, हमरा मे शुद्ध हृदयक सृजन करू। आ हमरा भीतर एकटा सही भावना के नवीनीकरण करू।
11 हमरा अपन सोझाँ सँ दूर नहि फेकि दिअ। आ अपन पवित्र आत् मा हमरा सँ नहि छीनू।"
12 अपन उद्धारक आनन्द हमरा फेर सँ दऽ दिअ। आ अपन मुक्त आत् मा सँ हमरा सहारा दिअ।
13 तखन हम अपराधी सभ कैँ अहाँक बाट सिखाएब। पापी सभ तोरा दिस बदलि जेताह।"
14 हे परमेश् वर, हे हमर उद्धारक परमेश् वर, हमरा खूनक अपराध सँ मुक्त करू।
15 हे प्रभु, हमर ठोर खोलू। हमर मुँह तोहर स्तुति करत।"
16 अहाँ बलिदान नहि चाहैत छी। अन्यथा हम ओकरा दऽ देब, अहाँ होमबलि मे प्रसन्न नहि होइत छी।
17 परमेश् वरक बलिदान सभ टूटल-फूटल आत् मा अछि, टूटल-फूटल आ पश्चातापित हृदय कैँ हे परमेश् वर, अहाँ तिरस् कार नहि करब।
18 अपन प्रसन्नता मे सियोनक लेल नीक काज करू, यरूशलेमक देबाल बनाउ।
19 तखन अहाँ धार्मिकताक बलिदान, होमबलि आ सम्पूर्ण होमबलि सँ प्रसन्न होयब।

अध्याय 52

1 (प्रमुख संगीतकार मस्किल कैँ, दाऊदक भजन, जखन एदोमी दोएग आबि साउल कैँ कहलथिन, "दाऊद अहिमेलेक घर आबि गेल छथि।) हे पराक्रमी, अहाँ बदमाश मे किएक घमंड करैत छी? परमेश् वरक भलाई सदिखन टिकैत रहैत अछि।
2 अहाँक जीह दुष् टताक कल्पना करैत अछि। तेज रेजर जकाँ, छल-कपट काज करैत।
3 अहाँ नीक सँ बेसी अधलाह प्रेम करैत छी। आ धार्मिक बात बजबा सँ बेसी झूठ बाजब। सेलाह।
4 हे धोखेबाज जीह, अहाँ सभ भक्षक वचन सँ प्रेम करैत छी।
5 परमेश् वर तोरा सदा-सदा लेल नष्ट कऽ देताह, तोरा लऽ जेताह आ तोहर निवास स्थान सँ उखाड़ि कऽ जीवित लोकक देश सँ जड़ि उखाड़ि लेताह। सेलाह।
6 धर्मी लोकनि सेहो देखताह, आ डरैत छथि आ हुनका पर हँसताह।
7 देखू, ई ओ आदमी छथि जे परमेश् वर कैँ अपन सामर्थ् य नहि बनौलनि। मुदा अपन धनक प्रचुरता पर भरोसा केलक आ अपन दुष्टता मे अपना कैँ मजबूत केलक।
8 मुदा हम परमेश् वरक घर मे हरियर जैतूनक गाछ जकाँ छी।
9 हम अहाँक स्तुति अनन्त काल धरि करब, कारण अहाँ ई काज केलहुँ। किएक तँ ई अहाँक संत सभक समक्ष नीक अछि।"

अध्याय 53

1 (महलतक प्रमुख संगीतकार कैँ, मस्चिल, दाऊदक भजन।) मूर्ख मोन मे कहैत अछि जे, "परमेश् वर नहि छथि।" ओ सभ भ्रष्ट छथि आ घृणित अधर्म केने छथि।
2 परमेश् वर स् वर्ग सँ मनुष् यक सन् तान सभ दिस तकलनि जे की केओ बुझैत अछि आ परमेश् वरक खोज करैत अछि।
3 ओ सभ एक-एकटा घुरि गेल अछि, ओ सभ एकदम गंदा भऽ गेल अछि। नीक काज करयवला केओ नहि अछि, एको नहि अछि।
4 की अधर्मक काज करनिहार सभ कैँ कोनो ज्ञान नहि छनि? जे हमर लोक सभ कैँ रोटी खाइत-खाइत खाइत अछि।
5 ओतऽ ओ सभ बहुत भयभीत छल, जतऽ कोनो डर नहि छल, किएक तँ परमेश् वर अहाँक विरुद्ध डेरा रखनिहारक हड्डी सभ छिड़िया देलनि।
6 जँ इस्राएलक उद्धार सिय्योन सँ निकलि गेल रहैत! जखन परमेश् वर अपन लोक सभ कैँ बंदी बना लेताह तँ याकूब आनन्दित हेताह आ इस्राएल प्रसन्न हेताह।

अध्याय 54

1 (नेगिनोतक प्रमुख संगीतकार मस्किल, दाऊदक भजन, जखन जिफिम सभ आबि कऽ साउल कैँ कहलथिन, "की दाऊद हमरा सभक संग नुकायल नहि अछि?) हे परमेश् वर, हमरा अपन नाम सँ बचाउ आ अपन सामर्थ् य सँ हमरा पर न्याय करू .
2 हे परमेश् वर, हमर प्रार्थना सुनू। हमर मुँहक बात पर कान दियौक।
3 किएक तँ परदेशी सभ हमरा विरुद्ध उठि गेल अछि आ अत्याचारी सभ हमर प्राणक खोज मे लागल अछि। सेलाह।
4 देखू, परमेश् वर हमर सहायक छथि।
5 ओ हमर शत्रु सभ कैँ अधलाहक फल देथिन।
6 हम अहाँक लेल मुफ्त मे बलिदान देब, हे परमेश् वर, हम अहाँक नामक स्तुति करब। किएक तँ ई नीक अछि।
7 किएक तँ ओ हमरा सभ विपत्ति सँ मुक्त कऽ देलनि, आ हमर आँखि हमर शत्रु सभ पर ओकर इच्छा देखि रहल अछि।

अध्याय 55

1 (नेगिनोथक प्रमुख संगीतकार कैँ, मस्चिल, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमर प्रार्थना पर कान करू। आ हमर विनती सँ अपना कैँ नुकायल नहि जाउ।"
2 हमरा पर ध्यान राखू आ हमर बात सुनू।
3 शत्रुक आवाजक कारणेँ, दुष्टक अत्याचारक कारणेँ, किएक तँ ओ सभ हमरा पर अधर्म फेकैत अछि आ क्रोध मे हमरा सँ घृणा करैत अछि।
4 हमर मोन हमरा भीतर बहुत दुखी अछि, आ मृत्युक भयावह हमरा पर खसि पड़ल अछि।
5 हमरा पर भय आ काँप आबि गेल अछि आ भयावहता हमरा पर भारी पड़ि गेल अछि।
6 हम कहलियनि, "अरे हमर पाँखि कबूतर जकाँ रहैत! किएक तँ तखन हम उड़ि कऽ विश्राम पाबि लेब।
7 देखू, तखन हम दूर भटकब आ जंगल मे रहब। सेलाह।
8 हम हवाक तूफान आ आँधी-तूफान सँ जल्दी जल्दी पलायन करितहुँ।
9 हे प्रभु, हुनका सभक जीह कैँ नष्ट कऽ दियौक, किएक तँ हम नगर मे हिंसा आ झगड़ा देखलहुँ।
10 ओ सभ दिन-राति ओकर देबाल पर घुमैत-फिरैत घुमैत अछि।
11 दुष्टता ओकर बीच मे अछि, धोखा आ छल ओकर गली-गली सँ नहि हटि जाइत अछि।

12 किएक तँ ई कोनो शत्रु नहि छल जे हमरा डाँटैत छल। तखन हम एकरा सहन क' सकैत छलहुँ, आ ने हमरा सँ घृणा करयवला हमरा विरुद्ध अपना केँ बड़ाई केलक। तखन हम हुनका सँ अपना केँ नुका लैतहुँ।
13 मुदा ओ अहाँ छलहुँ, हमर समकक्ष, हमर मार्गदर्शक आ हमर परिचित।
14 हम सभ एक संग मधुर विचार-विमर्श कऽ परमेश् वरक घर दिस बढ़लहुँ।
15 मृत्यु ओकरा सभ पर पकड़ि कऽ जल्दी-जल्दी नरक मे उतरय, किएक तँ ओकरा सभक निवास मे आ ओकरा सभक बीच दुष्टता अछि।
16 हम परमेश् वर केँ पुकारब। परमेश् वर हमरा उद्धार करताह।"
17 साँझ, भोर आ दुपहर मे हम प्रार्थना करब आ जोर-जोर सँ चिचियायब।
18 ओ हमर प्राण केँ शान्तिपूर्वक हमरा संग भेल युद्ध सँ बचा लेलनि, किएक तँ हमरा संग बहुतो लोक छलाह।
19 परमेश् वर हुनका सभ केँ सुनताह आ हुनका सभ केँ कष्ट देताह। सेलाह। कारण हुनका सभ मे कोनो परिवर्तन नहि छनि, तेँ ओ सभ भगवान् सँ डेराइत नहि छथि ।
20 ओ अपना संग शान्ति मे रहनिहार सभक विरुद्ध हाथ बढ़ौलनि।
21 हुनकर मुँहक बात मक्खन सँ बेसी चिकना छलनि, मुदा हृदय मे युद्ध छलनि।
22 अपन भार परमेश् वर पर राखू, ओ अहाँ केँ सहन करत।
23 हे परमेश् वर, अहाँ ओकरा सभ केँ विनाशक गड्ढा मे उतारब। मुदा हम अहाँ पर भरोसा करब।

अध्याय 56

1 (दाऊदक मिक्ताम, योनाथेलेमरेचोकीमक प्रमुख संगीतकार केँ, जखन पलिस्ती सभ हुनका गात मे लऽ गेल छलनि।) हे परमेश् वर, हमरा पर दया करू। ओ नित्य लड़ैत हमरा पर अत्याचार करैत अछि।
2 हमर शत्रु सभ हमरा प्रतिदिन निगल जाइत छल, किएक तँ हे परमात्मा, हमरा विरुद्ध लड़य बला बहुत लोक अछि।
3 जाहि समय मे हम डरब, हम अहाँ पर भरोसा करब।
4 हम परमेश् वर पर हुनकर वचनक स्तुति करब, परमेश् वर पर हम अपन भरोसा रखने छी। हम डरब नहि जे मांस हमरा संग की क' सकैत अछि।
5 ओ सभ सभ दिन हमर बात सभ केँ उन्माद करैत अछि।
6 ओ सभ एक ठाम जमा भऽ जाइत अछि, नुका जाइत अछि, हमर डेग पर निशान लगाबैत अछि, जखन ओ सभ हमर प्राणक प्रतीक्षा करैत अछि।
7 की ओ सभ अधर्मक कारणेँ बचत? हे परमेश् वर, अपन क्रोध मे लोक सभ केँ नीचाँ फेकि दिअ।
8 अहाँ हमर भटकल बात कहैत छी, हमर नोर अपन डिब्बा मे राखू, की ओ अहाँक किताब मे नहि अछि?
9 जखन हम अहाँ केँ पुकारब तखन हमर शत्रु सभ पाछू हटि जायत। किएक तँ परमेश् वर हमरा लेल छथि।
10 हम परमेश् वर मे हुनकर वचनक स्तुति करब, परमेश् वर मे हुनकर वचनक स्तुति करब।
11 हम परमेश् वर पर भरोसा केने छी, हम ई डरब नहि जे मनुष् य हमरा संग की कऽ सकैत अछि।
12 हे परमेश् वर, अहाँक व्रत हमरा पर अछि, हम अहाँक स्तुति करब।
13 अहाँ हमर प्राण केँ मृत्यु सँ बचा लेलहुँ, की अहाँ हमर पएर खसबा सँ नहि बचा सकब जाहि सँ हम परमेश् वरक समक्ष जीवित लोकक इजोत मे चलि सकब?

अध्याय 57

1 (दाऊदक प्रमुख संगीतकार अल्तास्कित, मिक्ताम केँ, जखन ओ साउल सँ गुफा मे भागि गेलाह।) हे परमेश् वर, हमरा पर दया करू, किएक तँ हमर प्राण अहाँ पर भरोसा करैत अछि, हँ, अहाँक छाया मे पाँखि हम अपन शरण बना लेब, जाबत ई विपत्ति सभ पार नहि भ' जायत।
2 हम परमेश् वर परमेश् वर सँ पुकारब। परमेश् वर जे हमरा लेल सभ काज करैत छथि।
3 ओ स् वर्ग सँ पठाओत आ हमरा निगलनिहारक निन्दा सँ हमरा बचाओत। सेलाह। परमेश् वर अपन दया आ अपन सत्य केँ पठा देताह।
4 हमर प्राण सिंहक बीच अछि, आ हम आगि लगाओल गेल लोकक बीच मे पड़ल छी, मनुष्यक बेटा सभक बीच, जकर दाँत भाला-बाण आ जीह तेज तलवार अछि।
5 हे परमेश् वर, अहाँ आकाश सँ ऊपर उठि जाउ। तोहर महिमा समस्त पृथ्वी सँ ऊपर रहय।"
6 ओ सभ हमर डेगक लेल जाल तैयार कएने छथि। हमर प्राण झुकल अछि, ओ सभ हमरा सोझाँ एकटा गड्ढा खोदने अछि, जाहि मे ओ सभ स्वयं खसि पड़ल अछि। सेलाह।
7 हे परमेश् वर, हमर हृदय स्थिर अछि, हमर हृदय स्थिर अछि, हम गाबि कऽ स्तुति करब।
8 हमर महिमा, जागू। जागल, स्तोत्र आ वीणा: हम स्वयं जल्दी जागब।
9 हे प्रभु, हम लोकक बीच अहाँक स्तुति करब।
10 किएक तँ अहाँक दया आकाश धरि आ अहाँक सत् य मेघ धरि पैघ अछि।
11 हे परमेश् वर, अहाँ स् वर्ग सँ ऊपर उठाउ, अहाँक महिमा समस्त पृथ् वी सँ ऊपर हो।

अध्याय 58

1 (दाऊदक मुख्य संगीतकार अल्तास्कित, मिक्ताम केँ।) हे मंडली, की अहाँ सभ सत्ते धार्मिक बात कहैत छी? हे मनुष्यक सन्तान, की अहाँ सभ सोझ न्याय करैत छी?
2 हँ, हृदय मे अहाँ सभ दुष्टता करैत छी। अहाँ सभ अपन हाथक हिंसा केँ पृथ्वी पर तौलैत छी।
3 दुष्ट सभ गर्भसँ विरक्त भऽ जाइत अछि, जन्म होइते झूठ बाजि कऽ भटक जाइत अछि।
4 ओकरा सभक जहर साँपक जहर जकाँ अछि, ओ सभ ओहि बहीर गरदनि जकाँ अछि जे ओकर कान रोकैत अछि।
5 जे मोहक लोकक आवाज नहि सुनत, मोहक कहियो एतेक बुद्धिमानी सँ नहि।

6 हे परमेश् वर, हुनका सभक मुँह मे दाँत तोड़ि दियौक, हे परमेश् वर, सिंहक बच्चा सभक बड़का-बड़का दाँत तोड़ि दियौक।
7 ओ सभ निरन्तर बहैत पानि जकाँ पिघलि जाय।
8 जहिना घोंघा पिघलैत अछि, तहिना एक-एकटा स् त्रीक असमय जनम जकाँ गुजरय, जाहि सँ ओ सभ सूर्य कैँ नहि देखय।
9 अहाँक घैल सभ काँट कैँ महसूस करबा सँ पहिने ओ ओकरा सभ कैँ बवंडर जकाँ लऽ जेताह, जीवित आ अपन क्रोध मे।
10 धर्मी लोक प्रतिशोध देखि आनन्दित होयत, ओ दुष्टक खून मे अपन पएर धोओत।
11 एहि तरहेँ मनुष् य ई कहत जे, “सत्ते धर्मी कैँ इनाम भेटैत छैक।”

अध्याय 59

1 (दाऊदक मिक्ताम, प्रमुख संगीतकार अल्ताशित कैँ, जखन साउल हुनका मारबाक लेल घर पर नजरि रखबाक लेल पठौलनि।) हे हमर परमेश् वर, हमरा शत्रु सभ सँ बचाउ।
2 हमरा अधर्मक काज करनिहार सभ सँ बचाउ, आ खूनी लोक सभ सँ हमरा बचाउ।
3 देखू, ओ सभ हमर प्राणक प्रतीक्षा मे पड़ल अछि। हे प्रभु, हमर अपराधक कारणेँ नहि आ ने हमर पापक लेल।
4 ओ सभ हमर दोषक बिना दौड़ैत-दौड़ैत अपना कैँ तैयार करैत अछि।
5 तोँ हे सेना सभक परमेश् वर, इस्राएलक परमेश् वर, अहाँ सभ जाति-जातिक परमेश् वरक सामना करबाक लेल जागि जाउ। सेलाह।
6 साँझ मे घुरैत अछि, कुकुर जकाँ हल्ला करैत अछि आ नगर मे घुमैत अछि।
7 देखू, ओ सभ मुँह सँ कूदैत अछि, ठोर मे तलवार अछि, किएक तँ के सुनैत अछि?
8 मुदा, हे परमेश् वर, अहाँ हुनका सभ पर हँसब। तोरा सभ गैर-यहूदी उपहास करऽ पड़तौ।
9 हुनकर सामर्थ्यक कारणेँ हम अहाँक प्रतीक्षा करब, किएक तँ परमेश् वर हमर रक्षा छथि।
10 हमर दयाक परमेश् वर हमरा रोकताह, परमेश् वर हमरा अपन शत्रु सभ पर हमर इच्छा देखय देताह।
11 ओकरा सभ कैँ मारि नहि दियौक, जाहि सँ हमर लोक बिसरि नहि जाय। आ ओकरा सभ कैँ नीचाँ उतारू, हे हमर सभक ढाल प्रभु।
12 किएक तँ हुनका सभक मुँहक पाप आ ठोरक बात हुनका सभ कैँ घमंड मे सेहो पकड़ल जाय।
13 ओकरा सभ कैँ क्रोध मे समाप्त करू, ओकरा सभ कैँ नष्ट करू जाहि सँ ओ सभ नहि रहय। सेलाह।
14 साँझ मे ओ सभ घुरि कऽ आबय। कुकुर जकाँ हल्ला मचाबय आ नगर मे घुमैत रहय।
15 ओ सभ भोजनक लेल ऊपर-नीचाँ भटकय, आ जँ ओकरा सभ कैँ तृप्त नहि भेलैक तँ ओकरा सभ कैँ खिसियाह।
16 मुदा हम अहाँक सामर्थ्यक गबैत रहब। हँ, हम भोरे अहाँक दयाक जोर-जोर सँ गाबब, किएक तँ अहाँ हमर संकटक दिन हमर रक्षा आ शरण रहलहुँ।
17 हे हमर सामर्थ्य, हम अहाँक लेल गाबब, किएक तँ परमेश् वर हमर रक्षा आ हमर दयाक परमेश् वर छथि।

अध्याय 60

1 (दाऊदक मिक्ताम शुशानेदुतक प्रमुख संगीतकार कैँ शिक्षा देबाक लेल, जखन ओ अरामनहरिम आ अरामजोबा सँ झगड़ा केलक, जखन योआब घुरि कऽ एदोम कैँ नूनक घाटी मे बारह हजार मारि देलक।) हे परमेश् वर, अहाँ हमरा सभ कैँ फेकि देलहुँ , अहाँ हमरा सभकैँ छिड़िया देलहुँ, अहाँ नाराज भऽ गेलहुँ; हे फेर हमरा सभ दिस घुमि जाउ।
2 अहाँ पृथ्वी कैँ काँपि देलहुँ। अहाँ ओकरा तोड़ि देलहुँ, ओकर टूटल-फूटल कैँ ठीक करू। किएक तँ ई डोलैत अछि।
3 अहाँ अपन लोक सभ कैँ कठिन बात देखौलहुँ, हमरा सभ कैँ विस्मयकारी मदिरा पीबय लेल बाध्य कयलहुँ।
4 अहाँ जे सभ अहाँ सँ डरैत अछि, तकरा सभ कैँ एकटा झंडा दऽ देलहुँ, जाहि सँ ओ सभ सत्यक कारणेँ प्रगट भऽ सकय। सेलाह।
5 जाहि सँ अहाँक प्रियजन उद्धार पाबि सकय। अपन दहिना हाथ सँ बचाउ आ हमर बात सुनू।”
6 परमेश् वर अपन पवित्रता मे बाजि रहल छथि। हम आनन्दित रहब, शेकेम कैँ बाँटि देब आ सुक्कोतक घाटी कैँ मेटायब।
7 गिलिआद हमर अछि, आ मनश्शे हमर अछि। एफ्राइम सेहो हमर माथक बल अछि। यहूदा हमर व्यवस्था देनिहार छथि।
8 मोआब हमर धोखा अछि। हम अपन जूता एदोम पर फेकि देब, फिलिस्ती, हमरा कारणेँ अहाँ विजयी होउ।”
9 हमरा मजगूत नगर मे के अनत? हमरा एदोम मे के लऽ जायत?
10 हे परमेश् वर, जे हमरा सभ कैँ फेकि देलहुँ, की अहाँ नहि चाहैत छी? हे परमेश् वर, अहाँ जे हमरा सभक सेना सभक संग नहि निकललहुँ?
11 हमरा सभ कैँ विपत्ति सँ सहायता दिअ, कारण मनुष्यक सहायता व्यर्थ अछि।
12 परमेश् वरक द्वारा हम सभ वीरतापूर्वक काज करब, किएक तँ ओ हमरा सभक शत्रु सभ कैँ रौदत।

अध्याय 61

1 (नेगीना पर प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमर पुकार सुनू। हमर प्रार्थना पर ध्यान दियौक।
2 जखन हमर मोन डूबि जायत तखन हम पृथ् वीक छोरसँ अहाँ लग पुकारब।
3 अहाँ हमरा लेल आश्रय आ शत्रु सँ एकटा मजबूत बुर्ज बनि गेलहुँ।
4 हम अहाँक तम्बू मे अनन्त काल धरि रहब। सेलाह।
5 हे परमेश् वर, अहाँ हमर व्रत सुनलहुँ, अहाँ हमरा अपन नाम सँ डरय बला सभक धरोहर दऽ देलहुँ।
6 अहाँ राजाक आयु बढ़बैत रहब, आ हुनकर वर्षो कतेको पीढ़ी धरि।
7 ओ परमेश् वरक समक्ष अनन् त काल धरि रहताह।
8 तहिना हम अहाँक नामक स्तुति अनन्त काल धरि गाबि जायब, जाहि सँ हम प्रतिदिन अपन व्रत पूरा कऽ सकब।

अध्याय 62

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, जेदुतुन कैँ, दाऊदक भजन।) हमर प्राण परमेश् वरक प्रतीक्षा मे अछि।

2 ओ मात्र हमर चट्टान आ हमर उद्धार छथि। ओ हमर बचाव छथि; हम बेसी हिलब नहि।
3 अहाँ सभ कतेक दिन धरि मनुष् यक संग दुष् टताक कल्पना करब? अहाँ सभ मारल जायब, प्रणाम देबाल जकाँ आ डगमगाइत बाड़ जकाँ।
4 ओ सभ मात्र ओकरा महानता सँ नीचाँ फेकबाक लेल विचार करैत अछि, झूठ मे आनन्दित होइत अछि, मुँह सँ आशीर्वाद दैत अछि, मुदा भीतर सँ गारि दैत अछि। सेलाह।
5 हमर प्राण, अहाँ मात्र परमेश् वरक प्रतीक्षा करू। किएक तँ हमर अपेक्षा हुनकासँ अछि।
6 ओ मात्र हमर चट्टान आ हमर उद्धार छथि। हम हिलब नहि।
7 हमर उद्धार आ महिमा परमेश् वर मे अछि।
8 हुनका पर सदिखन भरोसा राखू। अहाँ सभ, हुनका सामने अपन मोन राखू। सेलाह।
9 नीचताक लोक आडंबर अछि, आ उच्च पदक लोक झूठ अछि।
10 अत्याचार पर भरोसा नहि करू आ डकैती मे व्यर्थ नहि बनू।
11 परमेश् वर एक बेर बाजल छथि। दू बेर हम ई बात सुनने छी। ओ शक्ति परमेश् वरक अछि।
12 हे प्रभु, दया अहाँक अछि, किएक तँ अहाँ प्रत्येक मनुष्य केँ ओकर काजक अनुसार प्रतिफल दैत छी।

अध्याय 63

1 (दाऊदक एकटा भजन, जखन ओ यहूदाक जंगल मे छलाह।) हे परमेश् वर, अहाँ हमर परमेश् वर छी। हम अहाँ केँ भोरे-भोर तकब, हमर प्राण अहाँक लेल प्यासल अछि, हमर मांस अहाँक लेल तरसैत अछि, ओहि शुष्क आ प्यासल देश मे, जतय पानि नहि अछि।
2 अहाँक सामर्थ्य आ अहाँक महिमा केँ ओहिना देखबाक लेल जेना हम अहाँ केँ पवित्र स्थान मे देखलहुँ।
3 अहाँक प्रेम जीवन सँ नीक अछि, तेँ हमर ठोर अहाँक प्रशंसा करत।
4 हम जीबैत काल अहाँ केँ एहि तरहेँ आशीर्वाद देब।
5 हमर प्राण मज्जा आ मोटापा जकाँ तृप्त होयत। हमर मुँह हर्षित ठोर सँ अहाँक प्रशंसा करत।
6 जखन हम अपन बिछौन पर अहाँक स्मरण करैत छी आ राति मे अहाँक मनन करैत छी।
7 अहाँ हमर सहायक भेलहुँ, तेँ हम अहाँक पाँखिक छाया मे आनन्दित होयब।
8 हमर प्राण अहाँक पाछाँ-पाछाँ जोरसँ चलैत अछि, अहाँक दहिना हाथ हमरा सहारा दैत अछि।
9 मुदा जे सभ हमर प्राण केँ नष्ट करबाक लेल तकैत अछि, से पृथ् वीक निचला भाग मे जायत।
10 ओ सभ तलवार सँ खसि पड़त, लोमड़ी सभक भाग होयत।
11 मुदा राजा परमेश् वर मे आनन्दित हेताह। जे कियो हुनकर शपथ लेत से घमंड करत, मुदा झूठ बाजनिहारक मुँह रुकि जायत।

अध्याय 64

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमर प्रार्थना मे हमर आवाज सुनू।
2 हमरा दुष्टक गुप्त सलाह सँ नुका दियौक। अधर्मक विद्रोह सँ।
3 ओ सभ अपन जीह केँ तलवार जकाँ तेज करैत छथि आ धनुष केँ मोड़ि कऽ तीर चलाबैत छथि, ई कटु बात सेहो अछि।
4 जाहि सँ ओ सभ सिद्ध लोक पर गुप्त रूप सँ गोली चलाबथि, अचानक ओकरा पर गोली मारि दैत छथि, मुदा डरैत नहि छथि।
5 ओ सभ कोनो अधलाह काज मे अपना केँ प्रोत्साहित करैत अछि। ओ सभ कहैत अछि जे, “के देखत?”
6 ओ सभ अधर्मक खोज करैत अछि। ओ सभ एकटा लगन सँ खोज पूरा करैत छथि : हुनका सभ मे सँ प्रत्येकक आंतरिक विचार आ हृदय दुनू गहींर अछि |
7 मुदा परमेश् वर ओकरा सभ पर तीर मारि देताह। अचानक घायल भ' जेताह।
8 तेँ ओ सभ अपन जीह केँ अपना पर खसि लेत, जे सभ ओकरा सभ केँ देखयवला सभ भागि जायत।
9 सभ लोक भयभीत भऽ कऽ परमेश् वरक काजक प्रचार करत। कारण, ओ सभ बुद्धिमानी सँ ओकर काज पर विचार करत।
10 धर्मी लोक सभ परमेश् वर पर प्रसन्न हेताह आ हुनका पर भरोसा करताह। आ सभ सोझ हृदयक लोक महिमा करत।

अध्याय 65

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन आ गीत।) हे परमेश् वर, सियोन मे अहाँक स्तुति प्रतीक्षा मे अछि।
2 हे प्रार्थना सुननिहार, सभ प्राणी तोरे लग आओत।
3 अधर्म हमरा पर हावी अछि, हमरा सभक अपराधक विषय मे अहाँ ओकरा सभ केँ शुद्ध कऽ देब।
4 धन्य अछि ओ आदमी जकरा अहाँ चुनि कऽ अहाँ लग पहुँचाबैत छी जाहि सँ ओ अहाँक आँगन मे रहय।
5 हे हमरा सभक उद्धारक परमेश् वर, अहाँ हमरा सभ केँ धार्मिकता मे भयंकर बात सभक उत्तर देब। ओ सभ पृथ् वीक सभ छोर आ समुद्रक दूर-दूर मे रहनिहार लोक सभक भरोसा अछि।
6 ओ अपन सामर्थ् य सँ पहाड़ सभ केँ तेज करैत अछि। शक्ति सँ कमरबंद रहब: १.
7 जे समुद्रक हल्ला, ओकर लहरि आ लोकक हल्ला केँ शान्त करैत अछि।
8 अन्त-प्रान्त मे रहनिहार सभ सेहो अहाँक संकेत सँ डरैत अछि, अहाँ भोर-साँझक यात्रा केँ आनन्दित करैत छी।
9 अहाँ पृथ्वी पर घुमैत छी आ ओकरा पानि दैत छी, अहाँ ओकरा परमेश् वरक नदी सँ बहुत समृद्ध करैत छी, जे पानि सँ भरल अछि।
10 अहाँ ओकर धार सभ केँ प्रचुर मात्रा मे पानि दैत छी, ओकर खाई सभ केँ बसबैत छी, ओकरा बरखा सँ कोमल बना दैत छी, ओकर झरना केँ आशीर्वाद दैत छी।
11 अहाँ अपन भलाई सँ वर्षक मुकुट पहिरबैत छी। आ तोहर बाट मे मोटाई खसा दैत अछि।
12 ओ सभ जंगलक चारागाह पर खसैत अछि आ छोट-छोट पहाड़ी सभ चारू कात आनन्दित होइत अछि।
13 चारागाह सभ मे झुंडक कपड़ा पहिराओल गेल अछि। घाटी सभ सेहो मकईसँ झाँपल अछि। हर्षसँ चिचियाइत छथि, गबैत छथि सेहो।

अध्याय 66

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ एकटा गीत वा भजन।) अहाँ सभ देश, परमेश् वरक लेल हर्षक हल्ला करू।
2 हुनकर नामक आदर गाओ, हुनकर स्तुति कैँ महिमामंडित करू।
3 परमेश् वर कैँ कहू, "अहाँ अपन काज मे कतेक भयावह छी! तोहर सामर्थ्यक महानताक कारणेँ तोहर शत्रु तोहर अधीन भऽ जायत।"
4 समस्त पृथ्वी अहाँक आराधना करत आ अहाँ कैँ गाओत। ओ सभ तोहर नाम पर गाओत। सेलाह।
5 आऊ, परमेश् वरक काज देखब।
6 ओ समुद्र कैँ शुष्क भूमि मे बदलि देलनि, ओ सभ पैदले बाढ़ि मे गुजरल, हम सभ ओतहि हुनका पर आनन्दित भेलहुँ।
7 ओ अपन सामर्थ्य सँ अनन्त काल धरि शासन करैत अछि। ओकर नजरि जाति-जाति सभ कैँ देखैत अछि, विद्रोही सभ अपना कैँ ऊँच नहि करय। सेलाह।
8 हे लोक सभ, हमरा सभक परमेश् वर कैँ आशीष करू, आ हुनकर स्तुतिक आवाज सुनाउ।
9 ओ हमरा सभक प्राण कैँ जीवन मे पकड़ने अछि आ हमरा सभक पएर कैँ हिलब नहि दैत अछि।
10 हे परमेश् वर, अहाँ हमरा सभ कैँ परखलहुँ।
11 अहाँ हमरा सभ कैँ जाल मे अनलहुँ। अहाँ हमरा सभक कमर पर क्लेश राखि देलहुँ।
12 अहाँ हमरा सभक माथ पर लोक सभ कैँ सवार कऽ देलहुँ। हम सभ आगि आ पानि मे गुजरलहुँ, मुदा अहाँ हमरा सभ कैँ सम्पन्न स्थान मे अनलहुँ।
13 हम होमबलि लऽ कऽ तोहर घर मे जायब।
14 जखन हम विपत्ति मे छलहुँ तखन हमर ठोर बाजल अछि आ मुँह बाजल अछि।
15 हम अहाँ कैँ मेढ़क धूप-गन्धक संग मोटका बच्चाक होमबलि चढ़ा देब। बकरीक संग बैल चढ़ा देब। सेलाह।
16 अहाँ सभ जे सभ परमेश् वरक भय मानैत छी, आऊ आ सुनू, आ हम हुनका द्वारा हमर प्राणक लेल की कयलनि अछि से सुनब।
17 हम हुनका मुँह सँ पुकारलियैन, आ हमर जीह सँ हुनकर प्रशंसा कयल गेलनि।
18 जँ हम अपन हृदय मे अधर्म कैँ देखैत छी तँ प्रभु हमर बात नहि सुनताह।
19 मुदा परमेश् वर हमरा सुनने छथि। ओ हमर प्रार्थनाक आवाज पर ध्यान देने छथि।
20 परमेश् वरक धन्य होउ जे हमर प्रार्थना आ अपन दया हमरा सँ नहि मोड़लनि।

अध्याय 67

1 (नेगिनोथ पर मुख्य संगीतकार कैँ एकटा भजन वा गीत।) परमेश् वर हमरा सभ पर दया करथि आ हमरा सभ कैँ आशीर्वाद देथिन। आ हमरा सभ पर हुनकर मुँह चमकाउ। सेलाह।
2 जाहि सँ तोहर बाट पृथ् वी पर, सभ जाति मे तोहर उद्धारक स्वास्थ्य कैँ ज्ञात हो।
3 हे परमेश् वर, लोक अहाँक स्तुति करय। सभ लोक अहाँक स्तुति करय।
4 हे जाति सभ आनन्दित होउ आ हर्ष मे गाबय, किएक तँ अहाँ लोक सभक धार्मिक न्याय करब आ पृथ् वी पर जाति सभक शासन करब। सेलाह।
5 हे परमेश् वर, लोक अहाँक स्तुति करय। सभ लोक अहाँक स्तुति करय।
6 तखन पृथ् वी अपन उपजा देत। आ परमेश् वर, हमर सभक अपन परमेश् वर, हमरा सभ कैँ आशीर्वाद देथिन।
7 परमेश् वर हमरा सभ कैँ आशीर्वाद देथिन। पृथ् वीक सभ छोर हुनका सँ डेरा जायत।"

अध्याय 68

1 (प्रमुख संगीतकार कैँ, दाऊदक भजन वा गीत।) परमेश् वर उठथि, हुनकर शत्रु सभ तितर-बितर भऽ जाय।
2 जहिना धुँआ भगाओल जाइत अछि, तहिना ओकरा सभ कैँ भगा दियौक।
3 मुदा धर्मी लोक सभ आनन्दित होथि। परमेश् वरक समक्ष आनन्दित होथि।
4 परमेश् वरक लेल गाउ, हुनकर नामक स्तुति गाउ, जे आकाश पर चढ़ल अछि तकरा ओकर नाम याह सँ स्तुति करू आ हुनका सामने आनन्दित रहू।
5 अनाथक पिता आ विधवा सभक न्यायाधीश, परमेश् वर अपन पवित्र निवास मे छथि।
6 परमेश् वर एकांतवासी कैँ कुल-परिवार मे राखैत छथि, जंजीर मे बान्हल लोक कैँ बाहर निकालैत छथि, मुदा विद्रोही सभ शुष्क देश मे रहैत छथि।
7 हे परमेश् वर, जखन अहाँ अपन लोकक आगू बढ़लहुँ आ जंगल मे घुमलहुँ। सेलाह : १.
8 परमेश् वरक सान्निध मे पृथ् वी हिलल, आकाश सेहो खसि पड़ल।
9 हे परमेश् वर, अहाँ प्रचुर वर्षा पठौलहुँ, जाहि सँ अहाँ अपन उत्तराधिकार कैँ थकित भेला पर दृढ़ कयलहुँ।
10 अहाँक मंडली ओहि मे रहैत अछि, हे परमेश् वर, अहाँ अपन भलाई सँ गरीब सभक लेल तैयार केलहुँ।
11 प्रभु ई वचन देलथिन, "ओकरा प्रचारक संगति बहुत पैघ छल।
12 सेनाक राजा सभ तेजी सँ भागि गेलाह, आ घर मे रहनिहार लूट कैँ बाँटि लेलनि।
13 भले अहाँ सभ घैल मे पड़ल रहब, मुदा चानी सँ झाँपल कबूतरक पाँखि आ पीयर सोना सँ ओकर पंख जकाँ रहब।
14 जखन सर्वशक्तिमान परमेश् वर ओहि मे राजा सभ कैँ तितर-बितर कयलनि तखन ओ सल्मन मे बर्फ जकाँ उज्जर भऽ गेल।
15 परमेश् वरक पहाड़ बाशान पहाड़ जकाँ अछि। बाशानक पहाड़ी जकाँ ऊँच पहाड़ी।
16 हे ऊँच पहाड़ी सभ, अहाँ सभ किएक उछलैत छी? ई ओ पहाड़ी अछि जाहि मे परमेश् वर रहय चाहैत छथि। हँ, परमेश् वर ओहि मे अनन् त काल धरि रहताह।
17 परमेश् वरक रथ बीस हजार आ हजारो स् वर्गदूत अछि।
18 अहाँ ऊँच पर चढ़ि गेलहुँ, बंदी कैँ बंदी बना लेलहुँ। हँ, विद्रोही सभक लेल सेहो, जाहि सँ परमेश् वर परमेश् वर हुनका सभक बीच रहथि।

19 प्रभुक धन्य होउ जे हमरा सभ कें प्रतिदिन लाभक बोझ दैत छथि, जे हमरा सभक उद्धारक परमेश् वर छथि। सेलाह।
20 जे हमरा सभक परमेश् वर छथि, ओ उद्धारक परमेश् वर छथि। आ मृत्यु सँ निकलय बला मुद्दा परमेश् वर परमेश् वरक अछि।
21 मुदा परमेश् वर अपन शत्रु सभक माथ आ एहन लोकक रोम-रोमक चमड़ी कें घायल कऽ देथिन जे अपन अपराध मे स्थिर रहैत अछि।
22 प्रभु कहलथिन, "हम बाशान सँ फेर सँ आनि देब, समुद्रक गहींर मे सँ अपन लोक कें फेर सँ आनब।"
23 जाहि सँ अहाँक पएर अहाँक शत्रु सभक खून मे डुबकी लगाओल जाय आ अहाँक कुकुर सभक जीह ओहि मे डुबकी लगाओल जाय।
24 हे परमेश् वर, ओ सभ अहाँक यात्रा देखि लेलक। पवित्र स्थान मे हमर परमेश् वर, हमर राजाक यात्रा सेहो।
25 गायक सभ आगू बढ़ल, वाद्ययंत्र बजनिहार सभ पाछू-पाछू चलल। ओहि मे टिम्बर बजाबैत कन्या सब सेहो छल।
26 इस्राएलक फव्वारा सँ मंडली मे परमेश् वर कें आशीष करू।
27 छोट-छोट बिन्यामीन अपन शासक, यहूदाक मुखिया आ ओकर सभक परिषद्, जबूलूनक मुखिया आ नफ्तालीक राजकुमार सभक संग अछि।
28 अहाँक परमेश् वर अहाँक सामर्थ्यक आज्ञा देलनि अछि जे, हे परमेश् वर, जे अहाँ हमरा सभक लेल केने छी, तकरा मजबूत करू।
29 यरूशलेम मे अहाँक मन् दिरक कारणेँ राजा सभ अहाँ कें उपहार अनताह।
30 जाबत धरि सभ चानीक टुकड़ी-टुकड़ा नहि दऽ कऽ अपन अधीन नहि भऽ जाय, ताबत धरि भाला बजौनिहार सभक दल, बैल सभक भीड़ आ लोकक बछड़ा सभ कें डाँटि दियौक।
31 मिस्र देश सँ राजकुमार सभ बाहर आओत। इथियोपिया जल्दिये परमेश् वरक दिस हाथ पसारि लेत।
32 हे पृथ् वीक राज् य सभ, परमेश् वरक लेल गाउ। हे प्रभुक स्तुति गाउ। सेलाह : १.
33 जे पहिने स् वर्गक आकाश पर सवार अछि। देखू, ओ अपन आवाज पठा रहल छथि, आ एकटा प्रबल आवाज।
34 अहाँ सभ परमेश् वर कें सामर्थ् य दिअ।
35 हे परमेश् वर, अहाँ अपन पवित्र स्थान सँ भयावह छी। भगवान् के धन्य हो।

अध्याय 69

1 (शोशनिम पर प्रमुख संगीतकार कें, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमरा बचाउ। किएक तँ पानि हमर प्राण मे आबि गेल अछि।
2 हम गहींर दलदली मे डूबि जाइत छी, जतय ठाढ़ नहि अछि, हम गहींर पानि मे आबि गेल छी, जतय बाढ़ि हमरा उमड़ि जाइत अछि।
3 हम अपन कानब सँ थाकि गेल छी, हमर कंठ सुखा गेल अछि, हमर परमेश् वरक प्रतीक्षा मे हमर आँखि फीका भऽ गेल अछि।
4 जे सभ हमरा सँ बेवजह घृणा करैत अछि, से सभ हमर माथक केश सँ बेसी अछि, जे सभ हमरा गलत तरीका सँ शत्रु बनि कऽ हमरा नष्ट करय चाहैत अछि, से पराक्रमी अछि, तखन हम जे किछु नहि छीनि लेलहुँ से पुनर्स्थापित कऽ देलहुँ।
5 हे परमेश् वर, अहाँ हमर मूर्खता कें जनैत छी। आ हमर पाप अहाँ सँ नुकायल नहि अछि।
6 हे सेना सभक परमेश् वर, जे सभ अहाँक प्रतीक्षा करैत अछि, से हमरा लेल लज्जित नहि होअय।
7 अहाँ सभक कारणेँ हम अपमानित छी। लाज हमर मुँह झाँपि देने अछि।
8 हम अपन भाइ सभक लेल परदेशी भऽ गेल छी आ मायक सन्तान सभक लेल परदेशी भऽ गेल छी।
9 अहाँक घरक जोश हमरा खा गेल अछि। जे अहाँ कें निन्दा केने छल, ओकर निन्दा हमरा पर पड़ि गेल अछि।
10 जखन हम कानैत छलहुँ आ उपवास सँ अपन प्राण कें दंडित करैत छलहुँ, तखन हमरा निन्दा भेल।
11 हम बोरा कपड़ा सेहो अपन वस्त्र बनौलहुँ। आ हम हुनका सभक लेल फकड़ा बनि गेलहुँ।
12 दरबज्जा मे बैसल लोक सभ हमरा विरोध मे बाजैत अछि। आ हम शराबी सभक गीत छलहुँ।
13 मुदा हमर प्रार्थना, हे परमेश् वर, अहाँक लेल स्वीकार्य समय मे अछि।
14 हमरा दलदली सँ बचाउ, आ हमरा डूबब नहि दिअ, हमरा घृणा करयवला लोक सभ सँ आ गहींर पानि सँ मुक्त भऽ जायब।
15 जल-बाढ़ हमरा पर नहि उमड़य, आ गहींर हमरा निगलय आ गड्ढा हमरा पर अपन मुँह नहि बन्न करय।
16 हे प्रभु, हमर बात सुनू। किएक तँ तोहर दया नीक अछि।
17 अपन नोकर सँ मुँह नहि नुकाउ। हम विपत्ति मे छी, जल्दी सँ हमर बात सुनू।"
18 हमर प्राणक लग आबि कऽ ओकरा मुक्ति दिअ।
19 अहाँ हमर अपमान, हमर लाज आ अपमान कें बुझि गेलहुँ।
20 अपमान हमर मोन कें तोड़ि देलक। हम भार सँ भरल छी, किछु गोटे कें दया करबाक लेल ताकि रहल छलहुँ, मुदा कियो नहि छल। आ दिलासा देबयवला लेल, मुदा हमरा कोनो नहि भेटल।
21 ओ सभ हमरा भोजनक बदला मे पित्त सेहो देलक। आ हमर प्यास मे ओ सभ हमरा सिरका पीबय लेल देलक।
22 हुनका सभक टेबुल हुनका सभक सोझाँ जाल बनि जाय।
23 हुनका सभक आँखि अन्हार भऽ जाय जे ओ सभ नहि देखथि। आ हुनका लोकनिक कमर कें निरंतर हिलबैत रहू।
24 अपन क्रोध ओकरा सभ पर उझलि दियौक आ अपन क्रोधक क्रोध ओकरा सभ कें पकड़ि लिअ।
25 हुनका लोकनिक आवास उजाड़ हो। आ अपन डेरा मे कियो नहि रहय।
26 अहाँ जकरा मारने छी तकरा ओ सभ सताबैत अछि। आ ओ सभ जकरा अहाँ घायल केने छी, ओकर दुखक गप्प करैत अछि।
27 हुनका सभक अधर्म मे अधर्म कें जोड़ि दियौक।
28 ओ सभ जीवित लोकक किताब मे सँ मेटा देल जाय, आ धर्मी लोकक संग नहि लिखल जाय।
29 मुदा हम गरीब आ दुखी छी, हे परमेश् वर, अहाँक उद्धार हमरा ऊँच पर ठाढ़ करय।
30 हम गीतक संग परमेश् वरक नामक स्तुति करब आ धन्यवादक संग हुनकर महिमा करब।
31 सींग आ खुर बला बैल वा बैल सँ बेसी ई बात परमेश् वर कें नीक लागत।
32 विनम्र लोक सभ ई देखि कऽ आनन्दित भऽ जायत, आ परमेश् वरक खोज करयवला अहाँक मोन जीवित रहत।

33 किएक तँ परमेश् वर गरीबक बात सुनैत छथि आ अपन कैदी सभ केँ तिरस्कार नहि करैत छथि।
34 आकाश आ पृथ् वी ओकर स्तुति करय, समुद्र आ ओहि मे घुमैत-फिरैत सभ वस्तु।
35 किएक तँ परमेश् वर सियोन केँ बचाओत आ यहूदाक नगर सभक निर्माण करताह, जाहि सँ ओ सभ ओतऽ रहि कऽ ओकरा अपना कब्जा मे राखि सकथि।
36 ओकर दास सभक वंशज सेहो ओहि मे रहत।

अध्याय 70

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन, स्मरण करबाक लेल।) हे परमेश् वर, हमरा उद्धार करबाक लेल जल्दबाजी करू। हे प्रभु, हमर सहायता करबाक लेल जल्दबाजी करू।
2 जे हमर प्राणक खोज मे लागल अछि, से सभ लज्जित आ लज्जित होअय, जे हमर आघात चाहैत अछि, ओ सभ पाछू घुमि कऽ भ्रम मे पड़य।
3 ओ सभ अपन लाजक फलक लेल पाछू घुमि जाय जे कहैत अछि जे "आहा, अह"।
4 जे सभ अहाँ केँ तकैत अछि, से सभ अहाँ पर आनन्दित आ आनन्दित होउ।
5 मुदा हम गरीब आ गरीब छी, हे परमेश् वर, हमरा लग जल्दबाजी करू, अहाँ हमर सहायक आ उद्धारकर्ता छी। हे प्रभु, देरी नहि करू।

अध्याय 71

1 हे प्रभु, हम अहाँ पर भरोसा करैत छी, हमरा कहियो भ्रम नहि होउ।
2 अपन धार्मिकता मे हमरा बँचाउ आ हमरा बँचाउ।
3 अहाँ हमर सुदृढ़ आवास बनू, जाहि पर हम सदिखन सहारा ल' सकैत छी। किएक तँ अहाँ हमर चट्टान आ किला छी।"
4 हे हमर परमेश् वर, हमरा दुष्टक हाथ सँ, अधर्मी आ क्रूर लोकक हाथ सँ बचाउ।
5 हे प्रभु परमेश् वर, अहाँ हमर आशा छी।
6 हम अहाँक द्वारा गर्भ सँ ऊपर उठाओल गेल छी, अहाँ छी जे हमरा मायक आंत सँ निकालि देलहुँ।
7 हम बहुतो लोकक लेल आश्चर्यक रूप मे छी। मुदा अहाँ हमर दृढ़ शरण छी।
8 हमर मुँह भरि दिन अहाँक स्तुति आ आदर सँ भरल रहय।
9 वृद्धावस्था मे हमरा छोड़ि नहि दियौक। जखन हमर शक्ति खतम भ' जायत तखन हमरा नहि छोड़।
10 किएक तँ हमर शत्रु सभ हमरा विरुद्ध बजैत अछि। जे सभ हमर प्राणक प्रतीक्षा करैत अछि, से सभ एक संग विचार-विमर्श करैत अछि।
11 ओ कहलथिन, "परमेश्वर ओकरा छोड़ि देलथिन। किएक तँ ओकरा बचाबय बला केओ नहि अछि।"
12 हे परमेश् वर, हमरा सँ दूर नहि रहू, हे हमर परमेश् वर, हमर सहायताक लेल जल्दबाजी करू।
13 जे हमर प्राणक विपक्षी अछि, ओ सभ भ्रमित आ नष्ट भऽ जाय। जे हमर चोट चाहैत अछि, ओकरा सभ केँ अपमान आ अपमान सँ झाँपल रहय।
14 मुदा हम सदिखन आशा राखब आ अहाँ केँ बेसी सँ बेसी प्रशंसा करब।
15 हमर मुँह भरि दिन अहाँक धार्मिकता आ अहाँक उद्धार केँ प्रकट करत। कारण, एकर संख्या हमरा नहि बुझल अछि।
16 हम प्रभु परमेश् वरक सामर्थ् य मे जायब।
17 हे परमेश् वर, अहाँ हमरा जवानी सँ सिखबैत छी, आ एखन धरि हम अहाँक अद्भुत काज सभ केँ सुनाबैत रहलहुँ अछि।
18 आब जखन हम बूढ़ आ धूसर भऽ जायब तँ हे परमेश् वर, हमरा नहि छोड़। जाबत हम अहाँक सामर्थ्य एहि पीढ़ी केँ नहि देखा देब आ आगामी सभ लोक केँ अहाँक सामर्थ्य नहि देखा देब।"
19 हे परमेश् वर, अहाँक धार्मिकता सेहो बहुत ऊँच अछि, जे पैघ काज केलहुँ।
20 अहाँ जे हमरा बड़का आ कष्टक विपत्ति देखौलहुँ, अहाँ हमरा फेर सँ जीवित करब आ पृथ् वीक गहींर मे सँ हमरा फेर सँ ऊपर अनब।
21 अहाँ हमर महानता बढ़ा देब आ हमरा चारू कात सान्त्वना देब।
22 हे हमर परमेश् वर, हम अहाँक स्तुति सेहो स्तोत्र द्वारा, अहाँक सत् य द्वारा सेहो करब।
23 जखन हम अहाँ केँ गबैत छी तखन हमर ठोर बहुत आनन्दित होयत। आ हमर प्राण, जकरा अहाँ छुटौने छी।
24 हमर जीह भरि दिन अहाँक धार्मिकताक गप्प करैत रहत, किएक तँ ओ सभ लज्जित भऽ जाइत अछि, किएक तँ ओ सभ लज्जित भऽ गेल अछि जे हमर आघात चाहैत अछि।

अध्याय 72

1 (सुलेमानक लेल एकटा भजन।) हे परमेश् वर, राजा केँ अपन न्याय आ अपन धार्मिकता राजाक पुत्र केँ दिअ।
2 ओ अहाँक लोक सभक न्याय धार्मिकता सँ करताह आ अहाँक गरीब सभक न्याय सँ।
3 पहाड़ सभ धर्मक द्वारा लोक सभ केँ शान्ति आ छोट-छोट पहाड़ी सभ केँ शान्ति आनत।
4 ओ लोकक गरीब सभक न् याय करत, गरीबक सन् तान सभ केँ उद्धार करत आ अत्याचारी केँ टुकड़-टुकड़ मे तोड़ि देत।
5 जाबत धरि सूर्य आ चान टिकल रहत ता धरि ओ सभ अहाँ सँ डरैत रहत।
6 ओ बरखा जकाँ कटल घास पर उतरत, जेना बरखा जे धरती पर पानि दैत अछि।
7 हुनकर समय मे धर्मी लोक सभ पनपत। आ जा धरि चान टिकैत रहत ता धरि शान्तिक प्रचुरता।
8 समुद्र सँ समुद्र धरि आ नदी सँ लऽ कऽ पृथ्वीक छोर धरि ओकर प्रभुत्व सेहो रहतैक।
9 जंगल मे रहनिहार सभ हुनका सामने प्रणाम करत। ओकर शत्रु सभ धूरा चाटि लेत।
10 तर्शीश आ द्वीपक राजा सभ उपहार आनत, शेबा आ सेबाक राजा सभ उपहार चढ़ौताह।
11 हँ, सभ राजा हुनका सामने खसि पड़ताह, सभ जाति हुनकर सेवा करत।
12 किएक तँ ओ जरुरत केँ कानैत काल उद्धार करत। गरीब सभ सेहो, आ जकरा कोनो सहायक नहि अछि।

13 ओ गरीब आ गरीब केँ बख्शताह आ गरीबक प्राण केँ बचाओत।
14 ओ हुनका सभक प्राण केँ छल आ हिंसा सँ मुक्त करत, आ हुनकर सभक खून हुनका सभक नजरि मे अनमोल होयत।
15 ओ जीवित रहत आ ओकरा शेबाक सोना देल जायत। आ प्रतिदिन हुनकर प्रशंसा कयल जायत।
16 पहाड़क चोटी पर माटि मे मुट्ठी भरि धान रहत। ओकर फल लेबनान जकाँ हिलत, आ नगरक लोक सभ पृथ् वीक घास जकाँ पनपत।
17 हुनकर नाम अनन्त काल धरि रहत, हुनकर नाम सूर्य जकाँ रहत, आ मनुष् य हुनका मे धन्य होयत, सभ जाति हुनका धन्य कहतनि।
18 धन्य होउ, परमेश् वर परमेश् वर, इस्राएलक परमेश् वर, जे केवल आश्चर्यचकित काज करैत छथि।
19 हुनकर गौरवशाली नाम सदाक लेल धन्य होउ। आमीन, आ आमीन।
20 यिशैक पुत्र दाऊदक प्रार्थना समाप्त भऽ गेल।

अध्याय 73

1 (आसाफक भजन।) सत्ते परमेश् वर इस्राएलक लेल नीक छथि, जे सभ शुद्ध हृदयक छथि।
2 मुदा हमर पएर लगभग खतम भऽ गेल छल। हमर डेग लगभग फिसल गेल छल।
3 किएक तँ हम मूर्ख सभक प्रति ईर्ष्या करैत छलहुँ, जखन हम दुष्ट सभक समृद्धि देखलहुँ।
4 हुनका सभक मृत्यु मे कोनो पट्टी नहि होइत छनि, मुदा हुनका सभक सामर्थ्य दृढ़ अछि।
5 ओ सभ आन लोक जकाँ विपत्ति मे नहि छथि। आ ने ओहो सभ आन लोक जकाँ सताबैत छथि।
6 तेँ घमंड हुनका सभ केँ जंजीर जकाँ चारू कात घुमाबैत अछि। हिंसा ओकरा सभ केँ वस्त्र जकाँ झाँपि दैत छैक।
7 हुनका लोकनिक आँखि मोटगरता सँ उभरैत अछि, हृदयक इच्छा सँ बेसी हुनका सभ मे अछि।
8 ओ सभ भ्रष्ट अछि आ अत्याचारक विषय मे दुष् ट बजैत अछि।
9 ओ सभ अपन मुँह आकाश दिस लगा दैत अछि आ ओकर जीह पृथ् वी पर चलैत अछि।
10 तेँ ओकर लोक सभ एतय घुरि जाइत अछि, आ ओकरा सभ मे भरल प्याला पानि निचोड़ल जाइत छैक।
11 ओ सभ पुछलथिन, “परमेश् वर कोना जनैत छथि?” आ की परमेश् वर मे ज्ञान अछि?
12 देखू, ई सभ अभक्त सभ छथि, जे संसार मे समृद्ध होइत छथि। धन-दौलत बढ़ैत अछि।
13 हम अपन हृदय केँ व्यर्थ मे शुद्ध कयलहुँ आ निर्दोषता मे हाथ धोलहुँ।
14 हम भरि दिन भरि दिन भोरे-भोर कष्ट मे पड़ैत रहलहुँ आ दंडित होइत रहलहुँ अछि।
15 जँ हम कहब जे हम एहि तरहेँ बाजब। देखू, हमरा तोहर सन्तानक पीढ़ी पर आपत्ति करबाक चाही।”
16 जखन हम ई बात जानय लेल सोचलहुँ तँ हमरा लेल ई बहुत कष्टदायक छल।
17 जाबत हम परमेश् वरक पवित्र स्थान मे नहि गेलहुँ। तखन बुझि गेलहुँ हम हुनकर अंत।
18 अहाँ ओकरा सभ केँ फिसलल जगह पर राखि देलहुँ, ओकरा सभ केँ विनाश मे फेकि देलियैक।
19 ओ सभ कोना उजाड़ भऽ जाइत अछि, जेना क्षणहि मे होइत अछि! आतंक मे एकदम भस्म भ गेल छथि।
20 जहिना जगैत अछि तँ सपना देखाइ पड़ैत अछि। तेँ हे प्रभु, जखन अहाँ जागब तखन हुनका सभक प्रतिरूप केँ तिरस्कार करब।
21 एहि तरहेँ हमर मोन दुखी भऽ गेल आ हमरा लगाम मे चुभल।
22 हम ततेक मूर्ख आ अज्ञानी छलहुँ।
23 तैयो हम अहाँक संग सदिखन छी, अहाँ हमरा हमर दहिना हाथ पकड़ने छी।
24 अहाँ अपन सलाह सँ हमरा मार्गदर्शन करब, आ बाद मे हमरा महिमा मे ग्रहण करब।
25 अहाँक छोड़ि हमरा स् वर्ग मे के अछि? आ पृथ् वी पर एहन केओ नहि अछि जकरा हम तोरा छोड़ि चाहैत छी।
26 हमर शरीर आ हमर मोन क्षीण भऽ जाइत अछि, मुदा परमेश् वर हमर हृदयक सामर्थ् य छथि आ हमर भाग सदाक लेल।
27 देखू, जे सभ अहाँ सँ दूर अछि, से सभ नाश भऽ जायत।
28 मुदा परमेश् वरक समीप पहुँचब हमरा लेल नीक अछि।

अध्याय 74

1 (आसाफक मस्चिल।) हे परमेश् वर, अहाँ हमरा सभ केँ सदाक लेल किएक फेकि देलहुँ? तोहर क्रोध तोहर चारागाहक भेँड़ा पर किएक धुँआ उठैत अछि?
2 अपन मंडली केँ मोन पाड़ू जे अहाँ पहिने सँ कीनि लेने छी। अपन उत्तराधिकारक छड़ी जे अहाँ छुड़ा कऽ लेने छी। ई सियोन पहाड़, जाहि मे अहाँ रहैत छी।
3 अपन पएर अनन्त उजाड़ मे उठू। एतय तक कि शत्रु पवित्र स्थान मे जे किछु दुष्कर्म केने अछि।
4 तोहर शत्रु सभ तोहर मंडली सभक बीच गर्जैत अछि। चिन्हक लेल अपन झंडा लगा दैत छथि।
5 एक आदमी जेना मोटका गाछ पर कुल्हाड़ी उठौने छल, तेना प्रसिद्ध छल।
6 मुदा आब कुल्हाड़ी आ हथौड़ा सँ ओकर नक्काशीदार काज केँ एके बेर तोड़ि दैत छथि।
7 ओ सभ अहाँक पवित्र स्थान मे आगि फेकि देलक, अहाँक नामक निवास स्थान केँ जमीन पर फेकि कऽ अशुद्ध कऽ देलक।
8 ओ सभ मोन मे कहलथिन, “आउ, हम सभ मिलिकय ओकरा सभ केँ नष्ट कऽ दिअ।”
9 हम सभ अपन चिन् त्र नहि देखैत छी, आब कोनो प्रवक् ता नहि अछि, आ ने हमरा सभ मे एहन अछि जे ई जनैत अछि जे कतेक दिन धरि।
10 हे परमेश् वर, शत्रु कहिया धरि निन्दा करत? की शत्रु अहाँक नामक निन्दा सदाक लेल करत?
11 अहाँ अपन दहिना हाथ किएक हटि लैत छी? ओकरा अपन कोरासँ उखाड़ि लिअ।
12 परमेश् वर हमर पुरान राजा छथि, जे पृथ् वीक बीच मे उद्धारक काज करैत छथि।
13 अहाँ अपन बल सँ समुद्र केँ बाँटि देलहुँ, पानि मे अजगर सभक माथ तोड़ि देलहुँ।
14 अहाँ लिवियथनक माथ तोड़ि कऽ जंगल मे रहनिहार लोक सभ केँ भोजन देलहुँ।

15 अहाँ फव्वारा आ बाढ़ि केँ फाड़ि देलहुँ।
16 दिन तोहर अछि, राति सेहो तोहर अछि।
17 अहाँ पृथ् वीक सभ सीमा तय कऽ देलहुँ।
18 हे परमेश् वर, ई बात मोन राखू जे शत्रु सभ निन्दा कयलक आ मूर्ख लोक सभ अहाँक नामक निन्दा केलक।
19 हे अपन कबूतरक प्राण केँ दुष् ट लोकक भीड़ मे नहि दऽ दियौक।
20 वाचाक आदर करू, किएक तँ पृथ् वीक अन् हार स् थान सभ क्रूरताक आवास सँ भरल अछि।
21 हे दबल-कुचलल लोक लज्जित भऽ कऽ घुरि कऽ नहि आबय, गरीब आ गरीब लोक अहाँक नामक स्तुति करय।
22 हे परमेश् वर, उठू, अपन बातक गुहार लगाउ।
23 अपन शत्रु सभक आवाज केँ नहि बिसरि जाउ।

अध्याय 75

1 (प्रमुख संगीतकार, अल्ताशिथ, एकटा भजन वा आसाफक गीत।) हे परमेश् वर, हम सभ अहाँक धन्यवाद दैत छी, हम सभ अहाँक धन्यवाद दैत छी, किएक तँ अहाँक नाम अहाँक आश्चर्यकारक काज सभक लग मे अछि।
2 जखन हम मंडली केँ ग्रहण करब तखन हम सोझ न्याय करब।
3 पृथ्वी आ ओकर सभ निवासी घुलि गेल अछि। सेलाह।
4 हम मूर्ख सभ केँ कहलियनि, “मूर्खता नहि करू।”
5 अपन सींग ऊँच नहि उठाउ, कठोर गर्दन सँ नहि बाजू।
6 किएक तँ ने पूबसँ, ने पश्चिमसँ आ ने दक्षिणसँ प्रचार-प्रसार होइत अछि।
7 मुदा परमेश् वर न्यायाधीश छथि।
8 किएक तँ परमेश् वरक हाथ मे एकटा प्याला अछि आ मदिरा लाल भऽ गेल अछि। मिश्रणसँ भरल अछि; ओ ओहि मे सँ उझिलैत अछि, मुदा ओकर मल-मूत्र, पृथ्वीक सभ दुष्ट ओकरा निचोड़ि कऽ पीबि लेत।”
9 मुदा हम अनन्त काल धरि घोषणा करब। हम याकूबक परमेश् वरक स्तुति गाबब।
10 हम दुष्टक सभ सींग सेहो काटि देब। मुदा धर्मी लोकक सींग ऊँच होयत।

अध्याय 76

1 (नेगिनोथक प्रमुख संगीतकार केँ एकटा भजन वा आसाफक गीत।) यहूदा मे परमेश् वरक नाम अछि।
2 सलेम मे हुनकर तम्बू आ सियोन मे हुनकर निवास स्थान सेहो अछि।
3 ओतहि धनुष, ढाल, तलवार आ युद्धक बाण तोड़ि देलक। सेलाह।
4 अहाँ शिकारक पहाड़सँ बेसी गौरवशाली आ श्रेष्ठ छी।
5 मोटगर लोक सभ लूटि गेल अछि, ओ सभ नींद सुति गेल अछि।
6 हे याकूबक परमेश् वर, अहाँक डाँट पर रथ आ घोड़ा दुनू मृत नींद मे फेकि देल गेल अछि।
7 अहाँ, अहाँ, डरबाक चाही, आ जखन एक बेर अहाँ क्रोधित होयब तखन अहाँक सोझाँ के ठाढ़ भ’ सकैत अछि?
8 अहाँ स् वर्ग सँ न् याय सुनौलियैक। पृथ्वी डरैत छल, आ स्थिर छल,
9 जखन परमेश् वर न् याय करबाक लेल उठलाह, पृथ् वीक सभ नम्र लोक केँ उद्धार करबाक लेल। सेलाह।
10 मनुष् यक क्रोध अहाँक प्रशंसा करत, शेष क्रोध केँ अहाँ रोकब।
11 अपन परमेश् वर परमेश् वरक प्रति प्रण करू आ पूरा करू।
12 ओ राजकुमार सभक आत् मा केँ काटि देत, पृथ् वीक राजा सभक लेल ओ भयावह अछि।

अध्याय 77

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, जेदुतुन केँ, असफक भजन।) हम अपन आवाज सँ परमेश् वर सँ, अपन आवाज सँ परमेश् वर सँ पुकारलहुँ। ओ हमरा पर कान केलनि।
2 हम अपन विपत्तिक दिन प्रभु केँ तकलहुँ, हमर घाव राति मे दौड़ल, मुदा नहि रुकल।
3 हम परमेश् वरक स्मरण केलहुँ आ घबरा गेलहुँ। सेलाह।
4 अहाँ हमर आँखि जागल पकड़ने छी, हम एतेक परेशान छी जे हम बाजि नहि सकैत छी।
5 हम पुरान दिन, प्राचीन काल के वर्ष पर विचार केने छी।
6 हम राति मे अपन गीत केँ मोन पाड़ैत छी, हम अपन हृदय सँ गप्प करैत छी, आ हमर आत् मा पूरा खोज करैत छल।
7 की प्रभु सदा-सदा लेल छोड़ि देताह? आ की ओ आब अनुकूल नहि हेताह?
8 की ओकर दया सदा-सदाक लेल शुद्ध भऽ गेल अछि? की ओकर प्रतिज्ञा सदाक लेल विफल भ' जाइत छैक?
9 की परमेश् वर कृपा करब बिसरि गेल छथि? की ओ क्रोध मे अपन कोमल दया केँ चुप करा देने छथि? सेलाह।
10 हम कहलियनि, “ई हमर दुर्बलता अछि, मुदा हम परमेश् वरक दहिना हाथक वर्ष सभ केँ मोन पाड़ब।”
11 हम परमेश् वरक काज सभ केँ मोन पाड़ब।
12 हम अहाँक सभ काज पर सेहो चिंतन करब आ अहाँक काजक गप्प करब।
13 हे परमेश् वर, अहाँक बाट पवित्र स्थान मे अछि।
14 अहाँ चमत्कार करऽ वला परमेश् वर छी।
15 अहाँ अपन बाँहि सँ अपन प्रजा, याकूब आ यूसुफक पुत्र सभ केँ छुड़ा देलहुँ। सेलाह।
16 हे परमेश् वर, पानि तोरा देखलक। ओ सभ डरा गेल छल: गहराई सेहो परेशान छल।
17 मेघ पानि बहा देलक, आकाश मे आवाज निकलि गेल, अहाँक बाण सेहो बाहर निकलि गेल।
18 तोहर गरजबाक आवाज आकाश मे छल, बिजली संसार केँ हल्लुक क’ देलक, धरती काँपि उठल आ काँपि उठल।
19 तोहर बाट समुद्र मे अछि, तोहर बाट बड़का-बड़का पानि मे अछि, आ तोहर कदम नहि बुझल अछि।
20 अहाँ मूसा आ हारूनक हाथ सँ अपन लोक केँ भेँड़ा जकाँ नेतृत्व करैत छी।

अध्याय 78

1 (आसाफक मस्चिल।) हे हमर प्रजा, हमर व्यवस्था पर कान करू, हमर मुँहक बात पर कान झुकाउ।
2 हम एकटा दृष्टान्त मे मुँह खोलब।

3 ई बात हम सभ सुनने छी आ जनैत छी आ हमरा सभक पूर्वज सेहो कहने छथि।
4 हम सभ ओकरा सभ केँ हुनका सभक सन् तान सभ सँ नहि नुका देब, आबय बला पीढ़ी केँ परमेश् वरक स्तुति, हुनकर सामर्थ् य आ हुनकर कयल गेल अद्‌भुत काज सभ केँ देखबैत रहब।
5 ओ याकूब मे एकटा गवाही स्थापित कयलनि आ इस्राएल मे एकटा नियम निर्धारित कयलनि, जे ओ हमरा सभक पूर्वज केँ आज्ञा देने छलाह जे ओ सभ अपन संतान सभ केँ ओकरा सभ केँ ज्ञात करथि।
6 जाहि सँ आबै बला पीढ़ी ओकरा सभ केँ चिन्हैत रहैक, जे बच्चा सभ केँ जन्म लेबाक चाही। जे उठि कऽ अपन सन् तान सभक समक्ष ओकरा सभ केँ बताओत।
7 जाहि सँ ओ सभ परमेश् वर पर अपन आशा राखि कऽ परमेश् वरक काज केँ नहि बिसरत, बल् कि हुनकर आज्ञा सभक पालन करथि।
8 ओ अपन पूर्वज जकाँ नहि भऽ सकैत अछि, जे जिद्दी आ विद्रोही पीढ़ी अछि। एकटा एहन पीढ़ी जे अपन मोन केँ ठीक नहि क' रहल छल आ ओकर आत् मा परमेश् वरक संग दृढ़ नहि छल।
9 एप्रैमक सन् तान सभ हथियारबंद आ धनुष लऽ कऽ युद्धक दिन पाछू घुमि गेल।
10 ओ सभ परमेश् वरक वाचाक पालन नहि कयलनि आ हुनकर नियम मे चलबा सँ मना कयलनि।
11 ओ अपन काज सभ बिसरि गेलाह आ जे चमत्कार देखौलनि।
12 ओ हुनका सभक पूर्वज सभक नजरि मे, मिस्र देश मे, सोआनक खेत मे अद्‌भुत काज कयलनि।
13 ओ समुद्र केँ बाँटि कऽ ओकरा सभ केँ ओहि मे सँ गुजरय देलनि। ओ पानि केँ ढेर जकाँ ठाढ़ कऽ देलक।
14 दिन मे ओ मेघ सँ आ भरि राति आगि मे इजोत सँ हुनका सभ केँ लऽ जाइत छलाह।
15 ओ मरुभूमि मे पाथर सभ केँ काटि कऽ ओकरा सभ केँ बहुत गहींर मे सँ पानि पीबि देलथिन।
16 ओ पाथर सँ धार सभ सेहो अनलनि आ पानि केँ नदी जकाँ बहौलनि।
17 ओ सभ मरुभूमि मे परमेश् वर केँ क्रोधित कऽ कऽ हुनका विरुद्ध आरो पाप कयलनि।
18 ओ सभ अपन वासनाक लेल भोजन माँगि कऽ मन मे परमेश् वर केँ परीक्षा लेलक।
19 हँ, ओ सभ परमेश् वरक विरोध मे बाजि रहल छल। ओ सभ कहलथिन, "की परमेश् वर जंगल मे टेबुलक व्यवस्था क' सकैत छथि?"
20 देखू, ओ पाथर केँ मारि देलक जे पानि बहि गेल आ धार सभ उमड़ि गेल। की ओ रोटी सेहो दऽ सकैत अछि? की ओ अपन लोकक लेल मांसक व्यवस्था क' सकैत अछि?
21 तेँ परमेश् वर ई बात सुनि कऽ क्रोधित भऽ गेलाह।
22 किएक तँ ओ सभ परमेश् वर पर विश् वास नहि कयलनि आ हुनकर उद्धार पर भरोसा नहि कयलनि।
23 ओ मेघ केँ ऊपर सँ आज्ञा दऽ कऽ स् वर्गक दरबज्जा खोलि देलथिन।
24 ओ सभ ओकरा सभ पर मन्ना बरसा कऽ ओकरा सभ केँ खाइ लेल देलक।
25 मनुष् यक स् वर्गदूत सभक भोजन करैत छल आ ओकरा सभ केँ भोज-भात पठौलनि।
26 ओ स् वर्ग मे पूरबक हवा चलौलनि आ अपन सामर्थ् य सँ दक्षिणक हवा अनलनि।
27 ओ ओकरा सभ पर धूरा जकाँ मांस आ समुद्रक बालु जकाँ पंखबला चिड़ै सभक बरसात कयलनि।
28 ओ ओकरा सभक डेराक बीच मे, हुनका सभक आवासक चारू कात खसय देलनि।
29 ओ सभ भोजन कऽ कऽ तृप्त भऽ गेलाह, किएक तँ ओ हुनका सभ केँ अपन इच्छा दऽ देलनि।
30 ओ सभ अपन काम-वासना सँ विरक्त नहि भेलाह। मुदा जाबत धरि हुनका लोकनिक मांस मुँह मे छलनि।
31 परमेश् वरक क्रोध हुनका सभ पर आबि गेलनि आ हुनका सभ मे सँ मोटका लोक केँ मारि देलनि आ इस्राएलक चुनल लोक सभ केँ मारि देलनि।
32 एहि सभ बातक कारणेँ ओ सभ एखनो पाप करैत रहलाह आ हुनकर चमत्कारिक काज सभक कारणेँ विश् वास नहि कयलनि।
33 तेँ ओ हुनका सभक दिन व्यर्थ मे समाप्त कऽ देलनि आ हुनकर सभक वर्ष विपत्ति मे।
34 जखन यीशु हुनका सभ केँ मारि देलथिन तखन ओ सभ हुनका तकलनि आ ओ सभ भोरे-भोर घुरि कऽ परमेश् वरक पाछाँ-पड़ताल कयलनि।
35 ओ सभ मोन पाड़लनि जे परमेश् वर हुनका सभक चट्टान छलाह आ उच्च परमेश् वर हुनका सभक उद्धारकर्ता छथि।
36 तैयो ओ सभ हुनका मुँह सँ चापलूसी कयलनि आ जीह सँ हुनका संग झूठ बाजि रहल छलाह।
37 हुनका सभक मोन ठीक नहि छलनि आ ने हुनकर वाचा मे अडिग छलाह।
38 मुदा ओ दया सँ भरल रहि कऽ हुनका सभक अपराध क्षमा कयलनि आ हुनका सभ केँ नष्ट नहि कयलनि।
39 यीशु मोन पाड़लनि जे ओ सभ मात्र मांस मात्र छल। एकटा हवा जे बीति जाइत अछि आ फेर नहि अबैत अछि।
40 ओ सभ मरुभूमि मे कतेक बेर हुनका क्रोधित करैत छलाह आ मरुभूमि मे हुनका दुखित करैत छलाह!
41 हँ, ओ सभ पाछू घुमि कऽ परमेश् वर केँ परीक्षा लेलक आ इस्राएलक पवित्र लोक केँ सीमित कऽ देलक।
42 ओ सभ हुनकर हाथ नहि मोन पाड़लनि आ ने ओहि दिन जखन ओ हुनका सभ केँ शत्रु सँ मुक्त कयलनि।
43 ओ मिस्र मे अपन चमत्कार आ सोआनक खेत मे अपन चमत्कार कयलनि।
44 ओ हुनका सभक नदी केँ खून मे बदलि देने छलाह। आ हुनका सभक बाढ़ि, जे ओ सभ पीबि नहि सकलाह।
45 ओ ओकरा सभक बीच तरह-तरह केर मक्खी पठौलनि जे ओकरा सभ केँ खा गेल। आ बेंग, जे ओकरा सभकेँ नष्ट क' देलक।
"
47 ओ ओकरा सभक बेल केँ ओला सँ नष्ट कऽ देलक आ ओकर सभक सिकोमोरक गाछ सभ केँ पाला सँ नष्ट कऽ देलक।
48 ओ ओकरा सभक माल-जाल केँ ओला मे छोड़ि देलथिन, आ ओकर सभक भेँड़ा केँ गरम-गरम वज्रपात मे छोड़ि देलनि।
49 ओ हुनका सभक बीच दुष् ट स् वर्गदूत सभ केँ पठा कऽ अपन क्रोध, क्रोध आ क्रोध आ विपत्तिक प्रचंडता ओकरा सभ पर फेकि देलथिन।

50 ओ अपन क्रोधक बाट बनौलनि। ओ हुनका सभक प्राण कें मृत्यु सँ नहि बँचौलनि, बल् कि हुनका सभक प्राण महामारी मे सौंपि देलनि।
51 मिस्र देशक सभ जेठ बच्चा सभ कें मारि देलक। हामक तम्बू मे अपन बलक प्रमुख।
52 मुदा अपन लोक सभ कें भेँड़ा जकाँ बाहर निकलि कऽ जंगल मे भेँड़ा जकाँ मार्गदर्शन कयलनि।
53 ओ ओकरा सभ कें सुरक्षित रूप सँ आगू बढ़ौलनि, जाहि सँ ओ सभ डरैत नहि रहलाह।
54 ओ हुनका सभ कें अपन पवित्र स्थानक सीमा पर एहि पहाड़ पर पहुँचा देलथिन जे हुनकर दहिना हाथ कीनि लेने छलनि।
55 ओ जाति-जाति सभ कें सेहो ओकरा सभक सोझाँ मे भगा देलथिन आ ओकरा सभक उत्तराधिकार मे बाँटि कऽ इस्राएलक गोत्र सभ कें अपन डेरा मे बसा देलथिन।
56 तैयो ओ सभ परमेश् वर परमेश् वर कें परीक्षा मे आक्रोशित कयलनि आ हुनकर गवाही कें पालन नहि कयलनि।
57 मुदा ओ सभ पाछू घुमि कऽ अपन पूर्वज जकाँ अविश्वास कयलनि।
58 ओ सभ अपन ऊँच स्थान पर हुनका क्रोधित कयलनि आ अपन उकेरल मूर्ति सभ सँ हुनका ईर्ष्या करबाक लेल प्रेरित कयलनि।
59 ई बात सुनि परमेश् वर क्रोधित भऽ गेलाह आ इस्राएल सँ बहुत घृणा कयलनि।
60 एहि तरहेँ ओ शिलोक तम्बू कें छोड़ि देलनि, जे ओ लोक सभक बीच मे राखने छलाह।
61 ओ अपन सामर्थ्य बंदी मे आ अपन महिमा शत्रु सभक हाथ मे सौंपि देलनि।
62 ओ अपन लोक कें सेहो तलवारक हाथ मे सौंप देलनि। आ अपन उत्तराधिकार पर क्रोधित भ' गेल।
63 आगि हुनका सभक युवक सभ कें भस्म कऽ देलक। आ हुनका लोकनिक कन्या सभ कें विवाह मे नहि देल गेलनि।
64 हुनका सभक पुरोहित सभ तलवार सँ खसि पड़लाह। आ हुनका लोकनिक विधवा लोकनि कोनो विलाप नहि केलनि।
65 तखन परमेश् वर नींद सँ उठल आ मदिराक कारणेँ चिचियाबय बला पराक्रमी जकाँ जागि गेलाह।
66 ओ अपन शत्रु सभ कें पाछाँ मे मारि देलथिन।
67 ओ यूसुफक तम्बू कें अस्वीकार कयलनि आ एप्रैमक गोत्र कें नहि चुनलनि।
68 मुदा यहूदाक वंश कें चुनलनि, जे सियोन पहाड़ अछि जकरा ओ प्रेम करैत छलाह।
69 ओ अपन पवित्र स्थान कें ऊँच-ऊँच महल जकाँ बनौलनि, जेना ओ धरती कें अनन्त काल धरि स्थापित कयलनि।
70 ओ अपन सेवक दाऊद कें सेहो चुनि कऽ भेँड़ाक घर मे सँ लऽ गेलाह।
71 बच्चाक संग पैघ भेड़ सभक पाछाँ-पाछाँ ओ ओकरा अपन प्रजा याकूब आ इस्राएल कें अपन उत्तराधिकारक चरबा लेल अनलनि।
72 तेँ ओ हुनका सभ कें अपन हृदयक अखंडताक अनुसार भोजन करौलनि। आ अपन हाथक निपुणता सँ हुनका लोकनि कें मार्गदर्शन केलनि।

अध्याय 79

1 (आसाफक भजन।) हे परमेश् वर, जाति-जाति सभ अहाँक उत्तराधिकार मे आबि गेल अछि। तोहर पवित्र मन्दिर कें ओ सभ अशुद्ध कऽ देलक। यरूशलेम कें ढेर पर राखि देने छथि।
2 तोहर नोकर सभक मृत शरीर कें ओ सभ स् वर्गक चिड़ै सभ कें भोजनक रूप मे देल गेल अछि, अहाँक पवित्र लोक सभक मांस पृथ् वीक जानवर सभ कें।
3 ओ सभ यरूशलेमक चारू कात अपन खून पानि जकाँ बहौलनि। आ ओकरा सभ कें गाड़य बला कियो नहि छल।
4 हम सभ अपन पड़ोसी सभक लेल निन्दा आ उपहास बनि गेल छी।
5 प्रभु, कतेक दिन धरि? की अहाँ अनन्त काल धरि क्रोधित रहब? की तोहर ईर्ष्या आगि जकाँ जरि जायत?
6 अपन क्रोध ओहि जाति सभ पर उझाउ जे अहाँ कें नहि चिन्हने अछि आ ओहि राज्य सभ पर जे अहाँक नाम नहि बजौने अछि।
7 किएक तँ ओ सभ याकूब कें खा गेल आ ओकर निवास स्थान कें उजाड़ि देलक।
8 हे हमरा सभक विरुद्ध पूर्वक अधर्म सभ कें मोन नहि राखू, अहाँक कोमल दया हमरा सभ कें जल्दी सँ रोकय, किएक तँ हम सभ बहुत नीचाँ कयल गेल छी।
9 हे हमरा सभक उद्धारक परमेश् वर, अपन नामक महिमा लेल हमरा सभक सहायता करू।
10 जाति-जाति सभ किएक कहत जे, "अपन परमेश् वर कतय छथि?" तोहर सेवक सभक खूनक बदला लेबऽ सँ हमरा सभक नजरि मे गैर-यहूदी सभक बीच ओकरा चिन्हल जाय।"
11 कैदीक आह अहाँक सोझाँ आबि जाय। अपन शक्तिक महानताक अनुसार मरबाक लेल निर्धारित लोक सभ कें सुरक्षित राखू।
12 हे प्रभु, हमरा सभक पड़ोसी सभ कें सात गुना ओकर कोरा मे दऽ दियौक।
13 तेँ हम सभ तोहर लोक आ तोहर चारागाहक भेँड़ा सभ अहाँ कें सदाक लेल धन्यवाद देब।

अध्याय 80

1 (शोशन्नीमेदुतक प्रमुख संगीतकार कें, असफक भजन।) हे इस्राएलक चरबाह, जे यूसुफ कें झुंड जकाँ लऽ जाइत छी, कान करू। अहाँ जे करुबक बीच मे रहैत छी, चमकि जाउ।"
2 एप्रैम, बिन्यामीन आ मनश्शेक समक्ष अपन सामर्थ् य बढ़ा कऽ आबि कऽ हमरा सभ कें बचाउ।
3 हे परमेश् वर, हमरा सभ कें फेर घुमा दिअ, आ अपन मुँह चमकाउ। आ हम सभ उद्धार पाबि लेब।
4 हे सेनाक परमेश् वर, अहाँ कतेक दिन धरि अपन लोकक प्रार्थना पर क्रोधित रहब?
5 अहाँ ओकरा सभ कें नोरक रोटी सँ खुआबैत छी। आ ओकरा सभ कें बहुत रास नोर पीबय लेल देलक।
6 अहाँ हमरा सभ कें पड़ोसी सभक लेल झगड़ा बना दैत छी आ हमरा सभक शत्रु सभ आपस मे हँसैत अछि।
7 हे सेनाक परमेश् वर, हमरा सभ कें फेर घुमा दिअ, आ अपन मुँह चमकाउ। आ हम सभ उद्धार पाबि लेब।
8 अहाँ मिस्र सँ एकटा बेल निकाललहुँ, जाति-जाति सभ कें बाहर निकालि कऽ रोपलहुँ।

9 अहाँ ओकरा आगू मे जगह तैयार केलहुँ आ ओकरा गहींर जड़ि जमा लेलहुँ आ ओ देश भरि गेल।
10 पहाड़ी सभ ओकर छाहरि सँ आच्छादित छल आ ओकर डारि सभ नीक देवदारक गाछ जकाँ छल।
11 ओ अपन डारि सभ समुद्र दिस पठौलनि आ अपन डारि सभ नदी दिस पठौलनि।
12 तखन अहाँ ओकर बाड़ि सभ किएक तोड़ि देलहुँ जाहि सँ बाट पर जे सभ गुजरैत अछि से ओकरा तोड़ि दैत अछि?
13 जंगल मे सँ निकलल सुअर ओकरा उजाड़ि दैत छैक आ खेतक जंगली जानवर ओकरा खा जाइत छैक।
14 हे सेनाक परमेश् वर, हम सभ अहाँ सँ विनती करैत छी जे, स् वर्ग सँ नीचाँ देखू, आ एहि बेल गाछक दर्शन करू।
15 अहाँक दहिना हाथक अंगूरक बगीचा आ जे डारि अहाँ अपना लेल मजगूत बनौने रही।
16 ओ आगि मे जरा देल गेल अछि, ओकरा काटि देल गेल अछि, तोहर मुँहक डाँट मे ओ सभ नष्ट भऽ जाइत अछि।
17 अहाँक हाथ अपन दहिना हाथक आदमी पर, ओहि मनुष् य-पुत्र पर, जकरा अहाँ अपना लेल बलवान बनौने रही।
18 तेँ हम सभ अहाँ सँ घुरि कऽ नहि जायब।
19 हे सेनाक परमेश् वर, हमरा सभ केँ फेर घुमा दिअ, अपन मुँह चमकाउ। आ हम सभ उद्धार पाबि लेब।

अध्याय 81

1 (गित्तीतक प्रमुख संगीतकार केँ, असफ़क भजन।) हमरा सभक सामर्थ् य परमेश् वरक लेल जोर-जोर सँ गाउ।
2 एकटा भजन लऽ कऽ एतय धुन, स्तोत्रक संग सुखद वीणा आनि दियौक।
3 अमावस्या मे, निर्धारित समय मे, हमरा सभक गंभीर पावनि मे तुरही उड़ाउ।
4 इस्राएलक लेल ई नियम छल आ याकूबक परमेश् वरक नियम छल।
5 जखन ओ मिस्र देश मे घुमैत छलाह तखन ओ यूसुफ मे एहि बात केँ गवाही देबाक लेल नियुक्त कयलनि।
6 हम हुनकर कान्ह भार पर सँ हँटा देलियनि, हुनकर हाथ घैल सँ मुक्त भऽ गेलनि।
7 अहाँ विपत्ति मे बजौलहुँ आ हम अहाँ केँ उद्धार कऽ देलहुँ। हम अहाँ केँ गरजबाक गुप्त स्थान मे उत्तर देलियैक, हम अहाँ केँ मेरिबाक पानि मे परखलहुँ। सेलाह।
8 हे हमर प्रजा, सुनू, हम अहाँ केँ गवाही देब, "हे इस्राएल, जँ अहाँ हमर बात सुनब।
9 अहाँ मे कोनो परदेशी देवता नहि रहताह। आ ने कोनो परदेशी देवताक आराधना करू।
10 हम अहाँक परमेश् वर परमेश् वर छी, जे अहाँ केँ मिस्र देश सँ बाहर निकालने छी।
11 मुदा हमर लोक हमर बात नहि सुनय लागल। आ इस्राएल हमरा मे सँ कियो नहि चाहैत छल।
12 तेँ हम हुनका सभ केँ अपन हृदयक इच्छा मे छोड़ि देलियनि।
13 जँ हमर लोक हमर बात सुनितथि आ इस्राएल हमर बाट पर चलितथि!
14 हमरा जल्दिये हुनका सभक शत्रु सभ केँ वश मे कऽ कऽ हुनका सभक शत्रु सभक विरुद्ध हाथ घुमाबऽ पड़ितय।
15 परमेश् वरक घृणा करयवला सभ हुनका अधीन भऽ सकैत छलनि, मुदा हुनका सभक समय अनन्त काल धरि टिकल रहैत।
16 ओ ओकरा सभ केँ गहूम मे सँ नीक सँ खुआबैत, आ चट्टान सँ निकलल मधु सँ हम अहाँ केँ तृप्त करितहुँ।

अध्याय 82

1 (आसाफक भजन।) परमेश् वर परमेश् वर पराक्रमी सभक मंडली मे ठाढ़ छथि। देवताक बीच न्याय करैत छथि।
2 अहाँ सभ कतेक दिन धरि अन्यायपूर्वक न्याय करब आ दुष्ट सभक व्यक्ति केँ स्वीकार करब? सेलाह।
3 गरीब आ अनाथक रक्षा करू, दुखी आ गरीबक संग न्याय करू।
4 गरीब आ गरीब केँ उद्धार करू, ओकरा दुष्टक हाथ सँ मुक्त करू।
5 ओ सभ नहि जनैत अछि आ ने बुझत। ओ सभ अन्हार मे चलैत रहैत अछि, पृथ् वीक सभ नींव बेवजह भ' गेल अछि।
6 हम कहलहुँ जे, अहाँ सभ देवता छी। आ अहाँ सभ परमेश् वरक संतान छी।
7 मुदा अहाँ सभ मनुख जकाँ मरि जायब आ कोनो राजकुमार जकाँ खसि पड़ब।
8 हे परमेश् वर, उठू, पृथ् वी पर न्याय करू, किएक तँ अहाँ सभ जाति केँ उत्तराधिकारी बनब।

अध्याय 83

1 (आसाफक गीत वा भजन।) हे परमेश् वर, अहाँ चुप नहि रहू, हे परमेश् वर, चुप नहि रहू आ चुप नहि रहू।
2 देखू, अहाँक शत्रु सभ हंगामा करैत अछि, आ जे सभ अहाँ सँ घृणा करैत अछि, से सभ माथ उठौने अछि।
3 ओ सभ तोहर लोक सभक विरुद्ध धूर्त योजना बनौने अछि आ तोहर नुकायल लोक सभक विरुद्ध विचार-विमर्श केलक अछि।
4 ओ सभ कहने अछि जे, "आउ, ओकरा सभ केँ जाति सँ काटि दिअ। जाहि सँ इस्राएलक नाम आब स्मरण मे नहि रहय।
5 ओ सभ एकहि सहमति सँ विचार-विमर्श कयलनि।
6 एदोमक तम्बू आ इस्माइली सभ। मोआब आ हगारी लोकक।
7 गेबल, अम्मोन आ अमालेक। पलिस्ती सभ सोरक निवासी सभक संग।
8 अस्सूर सेहो हुनका सभक संग जुड़ल छथि, ओ सभ लूतक सन् तान सभ केँ पकड़ने छथि। सेलाह।
9 ओकरा सभक संग ओहिना करू जेना मिद्यानी सभक संग करैत अछि। जेना किसोन नदी मे सीसेरा, जेना किसोन नदी मे याबिन।
10 ओ सभ एन्दोर मे नष्ट भऽ गेल।
11 हुनका सभक कुलीन लोक केँ ओरेब आ ज़ीब जकाँ बनाउ।
12 ओ कहलथिन, "आउ, हम सभ परमेश् वरक घर-परिवार केँ अपना हाथ मे ल' ली।"
13 हे हमर परमेश् वर, ओकरा सभ केँ चक्का जकाँ बनाउ। हवाक आगूक ठूंठ जकाँ।
14 जहिना आगि लकड़ी जराबैत अछि आ जहिना लौ पहाड़ पर आगि लगा दैत अछि।
15 तेँ अपन आँधी-तूफान सँ ओकरा सभ केँ सताबैत रहू आ अपन तूफान सँ ओकरा सभ केँ भयभीत करू।

16 हुनका सभक मुँह लाज सँ भरि दियौक। जाहि सँ ओ सभ अहाँक नाम ताकथि, हे परमेश् वर।"
17 ओ सभ अनन्त काल धरि लज्जित आ परेशान रहय। हँ, ओकरा सभ केँ लज्जित कयल जाय आ नष्ट भऽ जाय।
18 लोक सभ ई जानि लेत जे अहाँ, जकर नाम मात्र यहोवा अछि, अहाँ समस्त पृथ् वी पर सर्वोच्च छी।

अध्याय 84

1 (गित्तीतक प्रमुख संगीतकार केँ, कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा भजन।) हे सेनाक परमेश् वर, अहाँक तम्बू सभ कतेक प्रिय अछि!
2 हमर प्राण परमेश् वरक आँगनक लेल तड़पैत अछि, हँ, बेहोश भऽ जाइत अछि।
3 हँ, गौरैया केँ घर भेटि गेल छैक आ निगल केँ अपना लेल खोंता, जतय ओ अपन बच्चा केँ राखि सकैत अछि, अहाँक वेदी, हे सेनाक प्रभु, हमर राजा आ हमर परमेश् वर।
4 धन्य अछि जे अहाँक घर मे रहैत अछि। सेलाह।
5 धन्य अछि ओ मनुष् य, जकर सामर्थ् य तोरा मे अछि। जिनकर हृदय मे हुनका लोकनिक बाट छनि।
6 ओ सभ बाका उपत्यका सँ गुजरैत एकरा इनार बना दैत छथि। बरखा सेहो पोखरि सभकेँ भरि दैत अछि।
7 ओ सभ एक-एकटा बल सँ दोसर बल मे जाइत अछि, सियोन मे सभ एक-एक गोटे परमेश् वरक समक्ष प्रगट होइत छथि।
8 हे सेनाक परमेश् वर, हमर प्रार्थना सुनू, हे याकूबक परमेश् वर, कान करू। सेलाह।
9 हे हमर सभक ढाल परमेश् वर, देखू, आ अपन अभिषिक्त सभक मुँह देखू।
10 अहाँक आँगन मे एक दिन हजार दिन सँ नीक अछि। हम अपन परमेश् वरक घर मे दरबज्जा बनब नीक बुझैत छलहुँ, नहि कि दुष्टताक डेरा मे रहब।
11 किएक तँ परमेश् वर परमेश् वर एकटा सूर्य आ ढाल छथि, परमेश् वर कृपा आ महिमा देथिन।
12 हे सेनाक परमेश् वर, धन्य अछि जे मनुष् य अहाँ पर भरोसा करैत अछि।

अध्याय 85

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा भजन।) प्रभु, अहाँ अपन देशक अनुकूल रहलहुँ।
2 अहाँ अपन लोकक अपराध क्षमा कऽ देलहुँ, ओकर सभ पाप झाँपि देलियैक। सेलाह।
3 अहाँ अपन सभटा क्रोध दूर कऽ लेलहुँ, अपन क्रोधक प्रकोप सँ अपना केँ मोड़ि लेलहुँ।
4 हे हमरा सभक उद्धारक परमेश् वर, हमरा सभ केँ घुमा दिअ, आ हमरा सभ पर अपन क्रोध समाप्त करू।
5 की अहाँ हमरा सभ पर अनन्त काल धरि क्रोधित रहब? की अहाँ अपन क्रोध सभ पीढ़ी धरि खींचब?
6 की अहाँ हमरा सभ केँ फेर सँ जीवित नहि करब, जाहि सँ अहाँक लोक अहाँ मे आनन्दित हो?
7 हे प्रभु, हमरा सभ पर अपन दया देखाउ, आ हमरा सभ केँ अपन उद्धार दिअ।
8 परमेश् वर परमेश् वर की कहताह से हम सुनब, किएक तँ ओ अपन प्रजा आ अपन पवित्र लोक सभ केँ शान्तिक बात कहताह।
9 निश्चित रूप सँ हुनकर उद्धार हुनका सँ डरय बला सभक लग मे अछि। जाहि सँ हमरा सभक देश मे महिमा रहय।
10 दया आ सत्य एक संग भेटैत अछि। धर्म आ शान्ति एक दोसरा के चुम्मा लेलक अछि।
11 सत् य पृथ् वी सँ निकलत। आ धर्म स् वर्ग सँ नीचाँ तकत।
12 हँ, परमेश् वर जे नीक अछि से देताह। आ हमरा सभक भूमि ओकर उपज देत।
13 हुनका आगू मे धार्मिकता चलत। आ हमरा सभ केँ अपन डेगक बाट पर ठाढ़ करत।"

अध्याय 86

1 (दाऊदक प्रार्थना।) हे प्रभु, कान झुकाउ, हमर बात सुनू, किएक तँ हम गरीब आ गरीब छी।
2 हमर आत्मा केँ बचाउ; किएक तँ हम पवित्र छी, हे हमर परमेश् वर, अहाँ पर भरोसा करऽ वला सेवक केँ बचाउ।"
3 हे प्रभु, हमरा पर दया करू, किएक तँ हम अहाँ लग नित्य पुकारैत छी।
4 अपन सेवकक प्राण केँ आनन्दित करू, कारण, हे प्रभु, हम अहाँक लेल अपन प्राण उठबैत छी।
5 हे प्रभु, अहाँ नीक छी आ क्षमा करबाक लेल तैयार छी। आ जे सभ अहाँ केँ पुकारैत अछि, तकरा पर दयाक प्रचुरता।
6 हे परमेश् वर, हमर प्रार्थना पर कान करू। आ हमर विनतीक आवाज पर ध्यान दियौक।
7 हम अपन विपत्तिक दिन अहाँ केँ पुकारब, किएक तँ अहाँ हमरा उत्तर देब।
8 हे प्रभु, देवता सभक बीच अहाँक सदृश कियो नहि अछि। आ ने अहाँक काज जकाँ कोनो काज अछि।
9 हे प्रभु, जे सभ जाति अहाँ बनौने छी, से सभ आबि कऽ अहाँक समक्ष आराधना करत। आ तोहर नामक महिमा करत।
10 अहाँ महान छी आ आश्चर्यक काज करैत छी।
11 हे प्रभु, हमरा अपन बाट सिखाउ। हम तोहर सत्य मे चलब, तोहर नाम सँ डरबाक लेल हमर मोन केँ एकजुट करू।
12 हे हमर परमेश् वर, हम अहाँक स्तुति पूरा मोन सँ करब।
13 हमरा प्रति अहाँक दया बहुत पैघ अछि, आ अहाँ हमर प्राण केँ नीचाँक नरक सँ मुक्त कऽ देलहुँ।
14 हे परमेश् वर, घमंडी लोक सभ हमरा विरुद्ध उठि गेल अछि आ हिंसक लोकक सभा हमर प्राणक खोज मे लागल अछि। आ अहाँ केँ हुनका सभक सोझाँ नहि राखि देलहुँ।"
15 मुदा, हे प्रभु, अहाँ दयालु, कृपालु, धैर्यवान आ दया आ सत्य सँ भरल परमेश् वर छी।
16 हे हमरा दिस घुमि कऽ हमरा पर दया करू। अपन दासी केँ अपन सामर्थ्य दऽ दियौक आ अपन दासीक बेटा केँ बचाउ।"
17 हमरा नीकक निशानी देखाउ। जे हमरा सँ घृणा करैत अछि, से देखि कऽ लज्जित भऽ जाय।

अध्याय 87

1 (कोराहक पुत्र सभक लेल एकटा भजन वा गीत।) हुनकर नींव पवित्र पहाड़ सभ मे अछि।

2 याकूबक सभ निवास सँ बेसी परमेश् वर सियोनक फाटक सभ सँ बेसी प्रेम करैत छथि।
3 हे परमेश् वरक नगर, अहाँक विषय मे गौरवशाली बात कहल गेल अछि। सेलाह।
4 हम हमरा चिन्हनिहार सभ केँ राहाब आ बाबुलक चर्चा करब। ई आदमी ओतहि जन्म लेलक।
5 सिय्योनक विषय मे कहल जायत, "ओकरा मे ई आ ओ आदमी जन्म लेलक।"
6 परमेश् वर जखन लोक सभ केँ लिखताह तखन ई गणना करताह जे ई आदमी ओतहि जनमल अछि। सेलाह।
7 ओतहि गायक सभ सेहो रहत आ वाद्ययंत्र बजनिहार सभ सेहो रहत।

अध्याय 88

1 (कोरहक पुत्र सभक लेल एकटा गीत वा भजन, जे एज्राही हेमनक मशिल महालथ लीननोथक प्रमुख संगीतकार केँ।) हे हमर उद्धारक परमेश् वर परमेश् वर, हम अहाँक सोझाँ दिन-राति चिचियाइत छी।
2 हमर प्रार्थना अहाँक सोझाँ आबि जाउ।
3 हमर प्राण विपत्ति सँ भरल अछि।
4 हम गड्ढा मे उतरय बला सभक संग गिनल जाइत छी।
5 मृत् युक बीच मुक्त, कबर मे पड़ल मारल गेल लोक जकाँ, जकरा अहाँ आब मोन नहि पाबि रहल छी।
6 अहाँ हमरा सबसँ नीचाँक गड्ढा मे, अन्हार मे, गहींर मे राखि देलहुँ।
7 तोहर क्रोध हमरा पर कठोर अछि, आ अहाँ हमरा अपन सभ लहरि सँ कष्ट देलहुँ। सेलाह।
8 अहाँ हमर परिचित केँ हमरा सँ दूर राखि देलहुँ। अहाँ हमरा हुनका सभक लेल घृणित बना देलियैक।
9 हमर आँखि क्लेशक कारणेँ शोक मना रहल अछि, प्रभु, हम अहाँ केँ नित्य पुकारैत रहलहुँ अछि, अहाँक दिस हाथ पसारि रहल छी।
10 की अहाँ मृत् यु केँ चमत् कार करब? की मृतक उठि कऽ तोहर स्तुति करत? सेलाह।
11 की तोहर दया कबर मे प्रचारित होयत? आकि विनाश मे तोहर विश् वास?
12 की तोहर चमत्कार अन् हार मे पता चलत? आ अहाँक धार्मिकता बिसरबाक देश मे?
13 हे परमेश् वर, हम अहाँ लग पुकारलहुँ। भोरे हमर प्रार्थना अहाँकेँ रोकत।"
14 प्रभु, अहाँ हमर प्राण केँ किएक फेकि रहल छी? अहाँ हमरासँ अपन मुँह किएक नुका रहल छी?
15 हम अपन जवानी सँ पीड़ित छी आ मरबाक लेल तैयार छी, जाबत हम अहाँक आतंक भोगैत छी ताबत हम विचलित भऽ जाइत छी।
16 अहाँक प्रचंड क्रोध हमरा पर चलि रहल अछि। तोहर आतंक हमरा काटि देलक।
17 ओ सभ पानि जकाँ हमरा चारू कात प्रतिदिन अबैत छल। दुनू गोटे हमरा एक संग घुमा लेलक।
18 प्रेमी आ मित्र केँ अहाँ हमरा सँ दूर आ हमर परिचित केँ अन्हार मे राखि देलहुँ।

अध्याय 89

1 (एज्राही एतानक मस्किल।) हम सदिखन परमेश् वरक दयाक गबैत रहब।
2 हम कहलहुँ जे, दया अनन्त काल धरि बनत।
3 हम अपन चुनल लोक सभक संग वाचा कऽ लेने छी, अपन सेवक दाऊद सँ शपथ खा लेने छी।
4 हम अहाँक वंशज केँ अनन्त काल धरि स्थापित करब, आ अहाँक सिंहासन केँ सभ पीढ़ी धरि ठाढ़ करब। सेलाह।
5 हे परमेश् वर, आकाश अहाँक आश्चर्यक स्तुति करत।
6 स् वर्ग मे के परमेश् वरक तुलना कयल जा सकैत अछि? पराक्रमी सभक पुत्र सभ मे सँ के परमेश् वरक उपमा कयल जा सकैत अछि?
7 पवित्र लोकक सभा मे परमेश् वर केँ बहुत भयभीत करबाक चाही आ हुनकर आसपासक सभ लोकक आदर करबाक चाही।
8 हे सेनाक परमेश् वर, अहाँ जकाँ बलवान परमेश् वर के छथि? आकि अहाँक चारू कात अहाँक विश्वासक प्रति?
9 अहाँ समुद्रक प्रकोप पर राज करैत छी, जखन ओकर लहरि उठैत अछि तखन ओकरा शान्त करैत छी।
10 अहाँ राहाब केँ मारल गेल आदमी जकाँ टुकड़ा-टुकड़ा कऽ देलहुँ। अहाँ अपन मजबूत बाँहि सँ अपन शत्रु सभ केँ छिड़िया देलहुँ।
11 आकाश तोहर अछि, पृथ् वी तोहर अछि।
12 उत्तर आ दक्षिण अहाँ ओकरा सभ केँ बनौने छी, ताबोर आ हरमोन अहाँक नाम पर आनन्दित होयत।
13 तोहर बाँहि पराक्रमी अछि, तोहर हाथ मजगूत अछि आ दहिना हाथ ऊँच अछि।
14 न्याय आ न्याय अहाँक सिंहासनक निवास अछि।
15 धन्य अछि ओ लोक सभ जे आनन्दक आवाज केँ जनैत अछि, ओ सभ अहाँक चेहराक इजोत मे चलत।
16 ओ सभ दिन भरि अहाँक नाम पर आनन्दित रहत आ अहाँक धार्मिकता मे ओ सभ ऊँच रहत।
17 अहाँ हुनका सभक सामर्थ्यक महिमा छी, आ अहाँक अनुग्रह मे हमरा सभक सींग ऊँच होयत।
18 किएक तँ परमेश् वर हमरा सभक रक्षा छथि। आ इस्राएलक पवित्र परमेश् वर हमरा सभक राजा छथि।
19 तखन अहाँ अपन पवित्र लोक केँ दर्शन मे कहलियनि, "हम एकटा पराक्रमी केँ सहायता देलहुँ। हम जनता मे सँ चुनल गेल एकटा केँ ऊपर उठौने छी।
20 हम अपन सेवक दाऊद केँ पाबि गेलहुँ। हम अपन पवित्र तेल सँ हुनका अभिषेक केने छी।
21 जकरा संग हमर हाथ दृढ़ होयत, हमर बाँहि सेहो ओकरा मजबूत करत।
22 शत्रु ओकरा सँ कोनो वसूली नहि करत। आ ने दुष्टताक पुत्र ओकरा कष्ट दैत छैक।
23 हम ओकर शत्रु सभ केँ ओकर मुँहक सोझाँ मारि देब आ ओकरा घृणा करयवला सभ केँ सताब।
24 मुदा हमर विश् वास आ दया हुनका संग रहत।
25 हम ओकर हाथ समुद्र मे राखब आ ओकर दहिना हाथ नदी मे।
26 ओ हमरा पुकारत, "अहाँ हमर पिता, हमर परमेश् वर आ हमर उद्धारक चट्टान छी।"

27 हम ओकरा अपन जेठ बच्चा बना देब, जे पृथ् वीक राजा सभ सँ ऊँच।
28 हम हुनका लेल अपन दया अनन्त काल धरि राखब आ हुनका संग हमर वाचा दृढ़ रहत।
29 हुनकर वंशज केँ हम अनन्त काल धरि टिकब आ हुनकर सिंहासन केँ स् वर्गक दिन जकाँ।
30 जँ ओकर सन्तान हमर व्यवस्था केँ छोड़ि कऽ हमर निर्णय मे नहि चलत।
31 जँ ओ सभ हमर नियम सभ केँ तोड़ि कऽ हमर आज्ञा सभक पालन नहि करत।
32 तखन हम हुनका सभक अपराधक दोष लाठी सँ करब, आ हुनका सभक अधर्म केँ प्रहार सँ मारि देब।
33 तैयो हम हुनका सँ हमर दया पूर्ण रूप सँ नहि छीनब आ ने अपन विश् वास केँ क्षीण होमय देब।
34 हम अपन वाचा नहि तोड़ब आ ने हमर ठोर सँ निकलल बात केँ बदलब।
35 हम एक बेर अपन पवित्रताक शपथ खा लेने छी जे हम दाऊद सँ झूठ नहि बाजब।
36 हुनकर संतान अनन्त काल धरि रहत आ हुनकर सिंहासन हमरा सोझाँ सूर्य जकाँ रहत।
37 ई चन्द्रमा जकाँ आ स् वर्ग मे विश् वासयोग् य गवाहक रूप मे अनन्त काल धरि स्थापित रहत। सेलाह।
38 मुदा अहाँ अपन अभिषिक्त पर क्रोधित भऽ गेलहुँ आ घृणा कऽ गेलहुँ।
39 अहाँ अपन नोकरक वाचा केँ अमान्य कऽ देलहुँ, ओकर मुकुट केँ जमीन पर फेकि कऽ अपवित्र कऽ देलहुँ।
40 अहाँ ओकर सभटा बाड़ि तोड़ि देलहुँ। अहाँ ओकर गढ़ केँ बर्बाद क' देलहुँ।
41 बाट मे जे सभ गुजरैत अछि से सभ ओकरा लूटि लैत अछि।
42 अहाँ ओकर विरोधी सभक दहिना हाथ ठाढ़ कऽ देलहुँ। अहाँ ओकर सभ शत्रु केँ आनन्दित कऽ देलहुँ।
43 अहाँ ओकर तलवारक धार घुमा कऽ ओकरा युद्ध मे ठाढ़ नहि कऽ देलहुँ।
44 अहाँ ओकर महिमा केँ समाप्त कऽ देलहुँ आ ओकर सिंहासन जमीन पर फेकि देलियैक।
45 अहाँ ओकर जवानीक दिन छोट कऽ देलहुँ, ओकरा लाज सँ झाँपि देलियैक। सेलाह।
46 प्रभु, कतेक दिन धरि? की अहाँ अपना केँ सदा-सदा लेल नुकायल रहब? की तोहर क्रोध आगि जकाँ जरि जायत?
47 मोन राखू जे हमर समय कतेक कम अछि।
48 ओ कोन मनुख अछि जे जीवित अछि आ मृत् यु नहि देखत? की ओ अपन प्राण केँ कबरक हाथ सँ बचाओत? सेलाह।
49 प्रभु, अहाँक पूर्वक दया कतय अछि, जे अहाँ अपन सत्य मे दाऊद केँ शपथ लेने रही?
50 हे प्रभु, अपन सेवक सभक अपमान केँ मोन पाड़ू। हम कोना अपन कोरा मे सभ पराक्रमी लोकक निन्दा सहैत छी।
51 हे परमेश् वर, अहाँक शत्रु सभ एहि बात सँ निन्दा कयलक। जाहि सँ ओ सभ अहाँक अभिषिक्त लोकक पदचिन्ह केँ निन्दा कयलनि।
52 परमेश् वर केँ सदाक लेल धन्य रहय। आमीन, आ आमीन।

अध्याय 90

1 (परमेश् वरक मनुख मूसाक प्रार्थना।) प्रभु, अहाँ सभ पीढ़ी मे हमरा सभक निवास स्थान रहलहुँ।
2 पहाड़ सभक जन्म सँ पहिने वा अहाँ पृथ् वी आ संसार केँ अनन् त सँ अनन्त काल धरि बनौने छलहुँ, अहाँ परमेश् वर छी।
3 अहाँ मनुष्य केँ विनाश दिस घुमा दैत छी। ओ कहैत छथि, "हे मनुष् यक सन् तान, घुरि जाउ।"
4 अहाँक नजरि मे हजार वर्ष धरि काल्हि जकाँ अछि आ राति मे पहरा जकाँ अछि।
5 अहाँ ओकरा सभ केँ बाढ़ि जकाँ लऽ जाइत छी। ओ सभ नींद जकाँ अछि, भोरे-भोर ओ सभ घास जकाँ अछि जे उगैत अछि।
6 भोरे-भोर ई पनपैत अछि आ बढ़ैत अछि। साँझ मे ओ काटि कऽ मुरझा जाइत अछि।
7 हम सभ अहाँक क्रोध सँ भस्म भऽ गेल छी आ अहाँक क्रोध सँ हम सभ घबरा गेल छी।
8 अहाँ हमरा सभक अधर्म केँ अपना सोझाँ राखि देलहुँ, हमर सभक गुप्त पाप केँ अपन मुखक प्रकाश मे राखि देलहुँ।
9 हम सभ अपन सभ दिन अहाँक क्रोध मे बीति गेल अछि।
10 हमरा सभक वर्षक दिन साठि वर्ष आ दस वर्ष अछि। आ जँ सामर्थ्यक कारणेँ ओ सभ चौड़ा वर्षक भ' गेल छथि तँ हुनका सभक बल श्रम आ शोक अछि। किएक तँ ओ जल्दिये काटि जाइत अछि आ हम सभ उड़ि जाइत छी।
11 अहाँक क्रोधक सामर्थ्य के जनैत अछि? तोहर भय के अनुसार तोहर क्रोध सेहो।
12 तेँ हमरा सभ केँ अपन दिनक गिनती करब सिखाउ जाहि सँ हम सभ अपन मोन केँ बुद्धि मे लगाबी।
13 हे प्रभु, कतेक दिन धरि घुरि जाउ? आ तोहर नोकर सभक विषय मे पश्चाताप करय।
14 हे अपन दया सँ हमरा सभ केँ भोरे संतुष्ट करू। जाहि सँ हम सभ दिन भरि आनन्दित आ आनन्दित रहब।
15 जाहि दिन मे अहाँ हमरा सभ केँ कष्ट देलहुँ आ जाहि वर्ष मे हम सभ अधलाह देखलहुँ, ताहि अनुसारेँ हमरा सभ केँ आनन्दित करू।
16 तोहर काज तोहर नोकर सभक सामने आ तोहर महिमा ओकरा सभक सन्तान सभ केँ देखाबए।
17 हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वरक सौन्दर्य हमरा सभ पर रहय। हँ, हमरा सभक हाथक काज अहाँ एकरा स्थापित करू।"

अध्याय 91

1 जे परमेश् वरक गुप्त स् थान मे रहैत अछि, से सर्वशक्तिमान परमेश् वरक छाया मे रहत।
2 हम परमेश् वरक विषय मे कहब जे ओ हमर शरण आ किला छथि। हम हुनका पर भरोसा करब।
3 ओ अहाँ केँ चिड़ै-चुनमुनीक जाल सँ आ शोर-शराबा सँ बचाओत।
4 ओ अहाँ केँ अपन पंख सँ झाँपि लेत आ अहाँक पाँखिक नीचाँ अहाँ भरोसा करब।
5 राति मे आतंकक कारणेँ अहाँ नहि डेरब। आ ने दिन मे उड़ैत बाणक लेल।
6 आ ने अन्हार मे चलय बला महामारीक लेल। आ ने दुपहर मे बर्बाद करय बला विनाशक लेल।

7 तोहर कात मे हजार आ दहिना कात दस हजार खसि पड़त। मुदा ई तोहर लग नहि आओत।"
8 अहाँ मात्र अपन आँखि सँ दुष् ट लोकक फल देखब आ देखब।
9 किएक तँ अहाँ परमेश् वर, जे हमर शरण छथि, परमेश् वर केँ अपन निवास बना देलहुँ।
10 अहाँ पर कोनो अधलाह नहि होयत आ ने कोनो विपत्ति अहाँक निवास लग आबि जायत।
11 किएक तँ ओ अपन स् वर्गदूत सभ केँ अहाँक सभ बाट मे अहाँ केँ रखबाक आज्ञा देथिन।
12 ओ सभ अहाँ केँ अपन हाथ मे उठा लेत, जाहि सँ अहाँ अपन पैर पाथर पर नहि ठोकि देब।
13 शेर आ गरदनि पर रौदब, सिंहक बच्चा आ अजगर केँ पएर रौदब।
14 ओ हमरा पर अपन प्रेम राखि देने छथि, तेँ हम हुनका बचा देबनि।
15 ओ हमरा बजाओत आ हम हुनका उत्तर देबनि, हम विपत्ति मे हुनका संग रहब। हम ओकरा उद्धार करब आ ओकर आदर करब।
16 हम ओकरा दीर्घायु सँ तृप्त करब आ ओकरा अपन उद्धार देखायब।

अध्याय 92

1 (विश्राम-दिनक लेल एकटा भजन वा गीत।) हे परमेश् वर, परमेश् वर केँ धन्यवाद देब आ अपन नामक स्तुति गाबय नीक काज अछि।
2 भोरे-भोर अपन दया आ सभ राति अपन विश् वास करबाक लेल।
3 दस तारक वाद्ययंत्र पर आ भजन पर। वीणा पर गंभीर आवाजक संग।
4 हे परमेश् वर, अहाँ अपन काज सँ हमरा आनन्दित केलहुँ।
5 हे प्रभु, अहाँक काज कतेक पैघ अछि! आ तोहर विचार बहुत गहींर अछि।
6 क्रूर आदमी नहि जनैत अछि। आ ने मूर्ख ई बात बुझैत अछि।
7 जखन दुष्ट घास जकाँ उगैत अछि आ जखन सभ अधर्मक काज करयवला पनपैत अछि। ई अछि जे ओ सभ अनन्त काल धरि नष्ट भऽ जायत।
8 मुदा, हे परमेश् वर, अहाँ अनन्त काल धरि सर्वोच्च छी।
9 हे परमेश् वर, देखू, अहाँक शत्रु सभ नाश भऽ जायत। सब अधर्मक काज करयवला छिड़िया जायत।
10 मुदा अहाँ हमर सींग केँ एकशृंगक सींग जकाँ ऊँच करब।
11 हमर आँखि सेहो हमर शत्रु सभ पर हमर इच्छा देखत आ हमर कान हमरा विरुद्ध उठय बला दुष्ट सभक इच्छा सुनत।
12 धर्मी लोक ताड़क गाछ जकाँ पनपत, ओ लेबनान मे देवदार जकाँ उगत।
13 जे सभ परमेश् वरक घर मे रोपल जायत से हमरा सभक परमेश् वरक आँगन मे पनपत।
14 बुढ़ापा मे सेहो ओ सभ फल देत। ओ सभ मोटगर आ पनपैत रहत।
15 ई देखाबय लेल जे परमेश् वर सोझ छथि, ओ हमर चट्टान छथि आ हुनका मे कोनो अधर्म नहि छनि।

अध्याय 93

1 प्रभु राज करैत छथि, ओ महिमा सँ वस्त्र पहिरने छथि। परमेश् वर सामर्थ् य पहिरने छथि, जाहि सँ ओ अपना केँ कमरबंद कऽ लेने छथि।
2 तोहर सिंहासन पहिने सँ स्थापित अछि, अहाँ अनन्त काल सँ छी।
3 हे परमेश् वर, बाढ़ि उठि गेल अछि, बाढ़ि अपन आवाज उठौलक। बाढ़ि अपन लहरि उठबैत अछि।
4 ऊँच परमेश् वर बहुत पानिक शोर-शराबा सँ, हँ, समुद्रक प्रबल लहरि सँ बेसी पराक्रमी छथि।
5 अहाँक गवाही बहुत पक्का अछि, हे प्रभु, अहाँक घरक पवित्रता अनन्त काल धरि बनैत अछि।

अध्याय 94

1 हे परमेश् वर परमेश् वर, जिनका प्रतिशोध अछि। हे परमेश् वर, जिनका प्रतिशोध अछि, अहाँ अपना केँ देखाउ।
2 हे पृथ् वीक न्यायाधीश, अपना केँ उठू, घमंडी केँ इनाम दिअ।
3 प्रभु, दुष्ट कतेक दिन धरि, दुष्ट कतेक दिन धरि जीतत?
4 ओ सभ कतेक दिन धरि कठोर बात बाजत आ बाजत? आ सभ अधर्मक घमंड करैत अछि?
5 हे परमेश् वर, ओ सभ तोहर लोक केँ तोड़ि-टुटि कऽ तोहर धरोहर केँ कष्ट दैत अछि।
6 ओ सभ विधवा आ परदेशी केँ मारि दैत छथिन, आ पितामह केँ मारि दैत छथिन।
7 तैयो ओ सभ कहैत अछि जे, "परमेश् वर नहि देखताह आ ने याकूबक परमेश् वर एकरा परवाह करत।"
8 हे लोक सभक बीच मे क्रूर लोक सभ, बुझू, आ हे मूर्ख सभ, अहाँ सभ कहिया बुद्धिमान बनब?
9 जे कान रोपने अछि, से नहि सुनत? जे आँखि बनौने छल, से नहि देखत?
10 जे गैर-यहूदी सभ केँ दंडित करैत अछि, से की ओ सुधारि नहि सकैत अछि? जे मनुष्य केँ ज्ञान सिखाबैत अछि, से नहि जानि?
11 परमेश् वर मनुष् यक विचार केँ जनैत छथि जे ओ सभ व्यर्थ अछि।
12 हे परमेश् वर, जकरा अहाँ दण्डित करैत छी आ ओकरा अपन व्यवस्थाक आधार पर सिखाबैत छी, से धन्य अछि।
13 अहाँ ओकरा विपत्तिक दिन सँ विश्राम दऽ दियौक जाबत धरि दुष्टक लेल गड्ढा नहि खोदल जायत।
14 किएक तँ परमेश् वर अपन लोक केँ नहि छोड़ताह आ ने अपन उत्तराधिकार केँ छोड़ि देताह।
15 मुदा न् याय धार्मिकता मे घुरि कऽ आओत।
16 दुष्कर्मी सभक विरुद्ध हमरा लेल के उठत? आकि अधर्मक काज करयवला सभक विरुद्ध हमरा लेल के ठाढ़ होयत?
17 जाबत परमेश् वर हमर सहायक नहि रहितथि तँ हमर प्राण लगभग चुप भऽ गेल रहितथि।
18 जखन हम कहलियनि, "हमर पएर फिसलैत अछि।" हे परमेश् वर, तोहर दया हमरा ठाढ़ कऽ देलक।
19 हमरा भीतर हमर विचारक बहुलता मे अहाँक सुख-सुविधा हमर प्राण केँ आनन्दित करैत अछि।

20 की अधर्मक सिंहासन अहाँक संगति राखत जे कोनो कानून द्वारा दुष् टताक निर्माण करैत अछि?
21 ओ सभ धर्मी लोकक आत् माक विरुद्ध एक ठाम जमा भऽ जाइत अछि आ निर्दोष खूनक दोषी ठहरबैत अछि।
22 मुदा परमेश् वर हमर रक्षा छथि। आ हमर परमेश् वर हमर शरणक चट्टान छथि।
23 ओ ओकरा सभ पर अपन अधर्म आनि देत आ ओकरा सभ कैँ अपन दुष् टता मे काटि देत। हँ, हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वर हुनका सभ कैँ काटि देताह।"

अध्याय 95

1 हे आऊ, हम सभ परमेश् वरक लेल गाबी, अपन उद्धारक चट्टान पर हर्षक हल्ला करू।
2 आउ, हम सभ धन्यवादक संग हुनकर सोझाँ आबि जाउ, आ भजन-सभक संग हुनका लेल हर्षक हल्ला करू।
3 किएक तँ परमेश् वर एकटा पैघ परमेश् वर छथि आ सभ देवता सँ पैघ राजा छथि।
4 पृथ् वीक गहींर स् थान सभ हुनके हाथ मे छनि, पहाड़ी सभक सामर्थ् य हुनकर सेहो छनि।
5 समुद्र ओकरे अछि, आ ओ ओकरा बनौलक, आ ओकर हाथ शुष्क भूमि कैँ बनौलक।
6 हे आऊ, हम सभ आराधना करी आ प्रणाम करी।
7 किएक तँ ओ हमरा सभक परमेश् वर छथि। हम सभ ओकर चारागाहक लोक आ ओकर हाथक भेँड़ा छी। आइ जँ अहाँ सभ हुनकर आवाज सुनब।
8 अपन मोन कैँ ओहिना कठोर नहि करू जेना उन्माद मे आ प्रलोभनक दिन जंगल मे होइत अछि।
9 जखन अहाँक पूर्वज सभ हमरा परीक्षा देलनि, हमरा परखलनि आ हमर काज देखलनि।
10 चालीस वर्ष धरि हम एहि पीढ़ीक संग दुखी भऽ कऽ कहलियनि, "ई एहन लोक अछि जे अपन मोन मे गलती करैत अछि, मुदा ओ सभ हमर बाट नहि जनैत अछि।
11 हम हुनका सभ कैँ अपन क्रोध मे शपथ खयलहुँ जे ओ सभ हमर विश्राम मे नहि प्रवेश करथि।

अध्याय 96

1 हे समस्त पृथ् वी, परमेश् वरक लेल नव गीत गाउ।
2 परमेश् वरक लेल गाउ, हुनकर नामक आशीष करू। दिन-प्रतिदिन ओकर उद्धार देखाबैत रहू।
3 हुनकर महिमा अनजान मे, हुनकर चमत्कार सभ लोकक बीच सुनाउ।
4 किएक तँ परमेश् वर महान छथि आ बहुत स्तुति करबाक चाही।
5 जाति-जातिक सभ देवता मूर्ति छथि, मुदा परमेश् वर स् वर्ग कैँ बनौलनि।
6 हुनका सामने आदर आ महिमा छनि, हुनकर पवित्र स्थान मे सामर्थ्य आ सौन्दर्य छनि।
7 हे प्रजासभ, प्रभु कैँ महिमा आ सामर्थ्य दिअ।
8 परमेश् वर कैँ हुनकर नामक महिमा दिअ।
9 हे पवित्रताक सौन्दर्य मे परमेश् वरक आराधना करू।
10 जाति-जाति सभक बीच कहू जे परमेश् वर राज् य करैत छथि, संसार सेहो स् थिर होयत जे ओ नहि हिलत।
11 आकाश आनन्दित हो, आ पृथ् वी आनन्दित हो। समुद्र गर्जय आ ओकर पूर्णता।
12 खेत आ ओहि मे जे किछु अछि से सभ आनन्दित रहय, तखन जंगलक सभ गाछ आनन्दित होयत
13 परमेश् वरक समक्ष, किएक तँ ओ आबि रहल छथि, किएक तँ ओ पृथ् वी पर न्याय करऽ अबैत छथि, ओ संसारक न्याय धार्मिकताक संग करताह आ लोक सभक न् याय अपन सत् य सँ करताह।

अध्याय 97

1 प्रभु राज करैत छथि। पृथ्वी आनन्दित होअय। द्वीपक भीड़ एहि बात पर प्रसन्न होथि।
2 हुनका चारू कात मेघ आ अन्हार अछि, धर्म आ न्याय हुनकर सिंहासनक निवास अछि।
3 आगि ओकरा आगू जा कऽ चारू कात शत्रु सभ कैँ जरा दैत छैक।
4 हुनकर बिजली संसार कैँ रोशन कयलक, पृथ्वी देखलक आ काँपि उठल।
5 परमेश् वरक सान्निध मे, समस्त पृथ् वीक प्रभुक सान्निध्य मे पहाड़ी सभ मोम जकाँ पिघलि गेल।
6 आकाश हुनकर धार्मिकताक प्रचार करैत अछि आ सभ लोक हुनकर महिमा देखैत अछि।
7 जे सभ मूर्तिक सेवा करैत छथि आ मूर्तिक घमंड करैत छथि, से सभ लज्जित भ' जाउ।
8 सियोन सुनलक आ प्रसन्न भेल। हे परमेश् वर, तोहर न् याय सभक कारणेँ यहूदाक बेटी सभ आनन्दित भऽ गेल।
9 हे परमेश् वर, अहाँ समस्त पृथ् वी सँ ऊपर छी, अहाँ सभ देवता सँ बहुत ऊपर ऊँच छी।
10 अहाँ सभ जे परमेश् वर सँ प्रेम करैत छी, अधलाह सँ घृणा करू। ओ ओकरा सभ कैँ दुष्टक हाथ सँ मुक्त करैत अछि।
11 धर्मी लोकक लेल इजोत बोओल जाइत अछि, आ सोझ हृदयक लेल आनन्दक बीज।
12 हे धर्मी लोकनि, प्रभु मे आनन्दित रहू। आ हुनकर पवित्रताक स्मरण मे धन्यवाद दियौक।

अध्याय 98

1 (एकटा भजन) हे प्रभुक लेल एकटा नव गीत गाउ। कारण, ओ अद्भुत काज केने छथि, हुनकर दहिना हाथ आ पवित्र बाँहि हुनका विजय प्राप्त क' देलकनि।
2 परमेश् वर अपन उद्धारक प्रगट कयलनि।
3 ओ इस्राएलक घरानाक प्रति अपन दया आ सत् य कैँ मोन पाड़लनि।
4, समस्त पृथ् वी, परमेश् वरक हल्ला करू।
5 वीणा बजा कऽ परमेश् वरक गाबय। वीणा आ भजन के आवाज के संग।
6 तुरही आ गुंजाइशक आवाज सँ राजा परमेश् वरक समक्ष आनन्दक आवाज करू।
7 समुद्र आ ओकर पूर्णता गर्जैत रहय। संसार आ ओहि मे रहनिहार सभ।

8 बाढ़ि ताली बजाबय, पहाड़ी सभ एक संग आनन्दित रहय
9 प्रभुक समक्ष। किएक तँ ओ पृथ् वी पर न् याय करबाक लेल अबैत अछि।

अध्याय 99

1 प्रभु राज करैत छथि। लोक सभ काँपि जाय। धरती हिलैत रहय।
2 परमेश् वर सियोन मे महान छथि। आ ओ सभ लोक सँ ऊपर ऊँच छथि।
3 ओ सभ तोहर महान आ भयावह नामक स्तुति करथि। किएक तँ ई पवित्र अछि।
4 राजाक सामर्थ्य सेहो न्याय सँ प्रेम करैत अछि। अहाँ समता स्थापित करैत छी, याकूब मे न्याय आ धार्मिकता करैत छी।
5 अहाँ सभ हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वर केँ उदात्त करू आ हुनकर पएर पर ठाढ़ भऽ कऽ आराधना करू। किएक तँ ओ पवित्र छथि।
6 मूसा आ हारून हुनकर पुरोहित सभक बीच आ शमूएल हुनकर नाम बजौनिहार सभक बीच। ओ सभ परमेश् वर केँ पुकारलनि आ ओ हुनका सभ केँ उत्तर देलनि।
7 ओ मेघक खंभा मे हुनका सभ सँ बात कयलनि, ओ सभ हुनकर गवाही आ हुनकर देल नियमक पालन करैत छलाह।
8 अहाँ हुनका सभ केँ उत्तर देलियैक, हे हमर सभक परमेश् वर, अहाँ हुनका सभ केँ माफ करयवला परमेश् वर छलहुँ, यद्यपि अहाँ हुनका सभक आविष्कारक बदला लेलहुँ।
9 हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वर केँ उदात्त करू आ हुनकर पवित्र पहाड़ पर आराधना करू। कारण, हमरा सभक परमेश् वर यहोवा पवित्र छथि।"

अध्याय 100 के अनुसार

1 (प्रशंसाक भजन।) अहाँ सभ देश, प्रभुक लेल हर्षक हल्ला करू।
2 हर्षित भऽ प्रभुक सेवा करू।
3 अहाँ सभ ई जानि लिअ जे परमेश् वर परमेश् वर छथि। हम सभ ओकर लोक छी आ ओकर चारागाहक बरद।
4 धन्यवादक संग हुनकर फाटक मे जाउ आ स्तुति कऽ हुनकर आँगन मे जाउ।
5 किएक तँ परमेश् वर नीक छथि। ओकर दया अनन्त अछि। ओकर सत्य सभ पीढ़ी धरि टिकैत छैक।

अध्याय 101 के अनुसार

1 (दाऊदक भजन।) हम दया आ न्यायक गबैत रहब।
2 हम अपना केँ सिद्ध तरीका सँ बुद्धिमानी सँ व्यवहार करब। हे अहाँ हमरा लग कहिया आबि जायब? हम अपन घरक भीतर सिद्ध हृदय सँ चलब।
3 हम अपन नजरि मे कोनो दुष् ट बात नहि राखब। हमरासँ नहि चिपकत।
4 हमरा सँ कनखी मोन चलि जायत, हम कोनो दुष्ट केँ नहि चिन्हब।
5 जे केओ गुप्त रूप सँ अपन पड़ोसीक निन्दा करैत अछि, ओकरा हम काटि देब।
6 हमर नजरि देशक विश्वासी लोक सभ पर रहत जे ओ सभ हमरा संग रहय।
7 जे धोखा-धोखा करैत अछि से हमर घरक भीतर नहि रहत, जे झूठ बाजैत अछि से हमरा नजरि मे नहि रहत।
8 हम देशक सभ दुष्ट केँ भोरे नष्ट कऽ देब। जाहि सँ हम परमेश् वरक नगर सँ सभ दुष् ट करऽ वला केँ काटि दिअ।"

अध्याय 102 के अनुसार

1 (पीड़ित लोकक प्रार्थना, जखन ओ अभिभूत भ' क' अपन शिकायत परमेश् वरक समक्ष राखि दैत अछि।) हे प्रभु, हमर प्रार्थना सुनू, आ हमर पुकार अहाँ लग आबि जाउ।
2 जखन हम विपत्ति मे पड़ब तखन हमरा सँ अपन मुँह नहि नुकाउ। हमरा दिस कान झुकाउ।
3 हमर जीवन धुँआ जकाँ भस्म भऽ गेल अछि आ हमर हड्डी सभ चूल्हा जकाँ जरि गेल अछि।
4 हमर मोन चोट खा गेल अछि आ घास जकाँ मुरझा गेल अछि। जइसँ हम अपन रोटी खाएब बिसरि जाइत छी।
5 हमर कुहरबाक आवाज सँ हमर हड्डी हमर त्वचा सँ चिपकल अछि।
6 हम जंगलक पेलिकन जकाँ छी, मरुभूमिक उल्लू जकाँ छी।
7 हम देखैत छी आ घरक चोटी पर असगर गौरैया जकाँ छी।
8 हमर शत्रु सभ दिन भरि हमरा डाँटैत रहैत अछि। जे हमरा पर पागल अछि, से हमरा विरुद्ध शपथ खा रहल अछि।
9 हम रोटी जकाँ राख खा गेलहुँ आ कानब मे अपन पेय मिला देलियैक।
10 अहाँक क्रोध आ क्रोधक कारणेँ, अहाँ हमरा ऊपर उठा कऽ नीचाँ फेकि देलहुँ।
11 हमर दिन एकटा छाया जकाँ अछि जे क्षीण होइत अछि। आ हम घास जकाँ मुरझा गेल छी।
12 मुदा, हे परमेश् वर, अहाँ अनन्त काल धरि टिकब। आ अहाँक स्मरण सभ पीढ़ी धरि।
13 अहाँ उठि कऽ सियोन पर दया करब, किएक तँ ओकरा पर अनुग्रह करबाक समय आबि गेल अछि।
14 अहाँक नोकर सभ ओकर पाथर पर प्रसन्न होइत अछि आ ओकर धूरा पर अनुग्रह करैत अछि।
15 एहि तरहेँ जाति-जाति सभ परमेश् वरक नाम सँ डेरात आ पृथ् वीक सभ राजा अहाँक महिमा सँ डेरात।
16 जखन परमेश् वर सियोनक निर्माण करताह तखन ओ अपन महिमा मे प्रकट हेताह।
17 ओ निर्धन लोकक प्रार्थना केँ ध्यान मे राखत, आ ओकर प्रार्थना केँ तिरस्कार नहि करत।
18 ई बात आबै बला पीढ़ीक लेल लिखल जायत, आ जे लोक सृष्टि होयत से परमेश् वरक स्तुति करत।
19 ओ अपन पवित्र स्थानक ऊँचाई सँ नीचाँ तकैत छथि। परमेश् वर स् वर्ग सँ पृथ् वी केँ देखलनि।
20 कैदीक कुहरब सुनबाक लेल। जे मृत्युक लेल नियुक्त अछि ओकरा ढीला करब।
21 सियोन मे परमेश् वरक नाम आ यरूशलेम मे हुनकर स्तुति प्रचार करब।
22 जखन लोक आ राज्य सभ एक ठाम परमेश् वरक सेवा करबाक लेल जमा भऽ जायत।

23 ओ हमर सामर्थ् य बाट मे कमजोर कऽ देलनि। ओ हमर दिन छोट क' देलनि।
24 हम कहलियनि, "हे हमर परमेश् वर, हमर जीवनक बीच हमरा नहि लऽ जाउ।"
25 अहाँ पहिने सँ पृथ् वीक नींव रखने छी, आ आकाश अहाँक हाथक काज अछि।
26 ओ सभ नाश भऽ जायत, मुदा अहाँ सहन करब। अहाँ ओकरा सभ केँ वस्त्र जकाँ बदलब आ ओ सभ बदलि जायत।
27 मुदा अहाँ ओहिना छी, आ अहाँक वर्षक अंत नहि होयत।
28 तोहर नोकर सभक सन् तान सभ टिकल रहत आ ओकर वंशज तोहर सोझाँ सुदृढ़ भऽ जायत।

अध्याय 103

1 (दाऊदक भजन।) हे हमर प्राण, परमेश् वरक आशीष करू।
2 हे हमर प्राण, परमेश् वरक आशीष करू, आ हुनकर सभटा लाभ नहि बिसरि जाउ।
3 ओ अहाँक सभटा अपराध क्षमा करैत छथि। जे तोहर सभ रोग केँ ठीक करैत अछि।
4 जे तोहर प्राण केँ विनाश सँ मुक्त करैत अछि। जे अहाँ पर दया आ कोमल दयाक मुकुट पहिरबैत छथि।
5 जे अहाँक मुँह नीक बात सँ तृप्त करैत अछि। जाहि सँ तोहर जवानी गरुड़ जकाँ नव भ' जाइत अछि।
6 परमेश् वर सभ उत्पीड़ित लोकक लेल धार्मिकता आ न्याय करैत छथि।
7 ओ मूसा केँ अपन बाट-बाट, इस्राएलक सन् तान सभ केँ अपन काजक जानकारी देलनि।
8 परमेश् वर दयालु आ कृपालु छथि, क्रोध मे मंद छथि आ दया मे प्रचुर छथि।
9 ओ सदिखन डाँटत नहि, आ ने अपन क्रोध केँ सदाक लेल राखत।
10 ओ हमरा सभक पापक बाद हमरा सभक संग व्यवहार नहि कयलनि। आ ने हमरा सभक अधर्मक अनुसार फल देलनि।
11 जहिना पृथ् वी सँ ऊपर स् वर्ग ऊँच अछि, तहिना हुनका डरय बला लोक सभक प्रति हुनकर दया ओतबे पैघ अछि।
12 पूब पश्चिम सँ जतेक दूर अछि, ओ हमरा सभक अपराध केँ हमरा सभ सँ दूर कयलनि।
13 जहिना पिता अपन संतान पर दया करैत अछि, तहिना परमेश् वर हुनका डरय बला सभ पर दया करैत छथि।
14 किएक तँ ओ हमरा सभक फ्रेम केँ जनैत छथि। ओकरा मोन पड़ैत छैक जे हम सभ धूरा छी।
15 मनुखक जीवन घास जकाँ होइत छैक, खेतक फूल जकाँ फलैत-फूलैत अछि।
16 किएक तँ हवा ओकरा ऊपर सँ गुजरैत अछि आ ओ चलि गेल अछि। ओकर स्थान आब ओकरा नहि चिन्हत।"
17 मुदा परमेश् वरक दया अनन्त सँ अनन्त धरि हुनका सँ डरय बला सभ पर रहैत छनि आ हुनकर धार्मिकता सन्तान सभक सन् तान सभ पर रहैत छनि।
18 जे सभ हुनकर वाचा केँ पालन करैत छथि आ जे हुनकर आज्ञा सभ केँ मनन करैत छथि, हुनका सभ केँ पूरा करबाक लेल।
19 परमेश् वर स् वर्ग मे अपन सिंहासन तैयार कयलनि। ओकर राज्य सभ पर राज करैत अछि।
20 हे हुनकर स् वर्गदूत सभ, जे सभ सामर्थ् य मे उत्कृष्ट छी आ हुनकर आज्ञाक पालन करैत छी आ हुनकर वचनक आवाज सुनैत छी, प्रभुक आशीष करू।
21 अहाँ सभ हुनकर सभ सेना, अहाँ सभ परमेश् वरक आशीष करू। अहाँ सभ हुनकर सेवक सभ, जे हुनकर मन मे काज करैत छी।
22 हे हमर प्राण, परमेश् वरक आशीष करू, हुनकर सभटा काज, हुनकर सभटा काज।

अध्याय 104 के अनुसार

1 हे हमर प्राण, प्रभुक आशीष करू। हे हमर परमेश् वर, अहाँ बहुत पैघ छी। अहाँ आदर आ महिमा सँ वस्त्र पहिरने छी।
2 ओ अपना केँ वस्त्र जकाँ इजोत सँ झाँपि लैत छी।
3 जे अपन कोठलीक छाँव पानि मे राखैत अछि, जे मेघ केँ अपन रथ बना दैत अछि, जे हवाक पाँखि पर चलैत अछि।
4 जे अपन स् वर्गदूत सभ केँ आत् मा बना दैत छथि। ओकर मंत्री सभ एकटा ज्वालामुखी आगि।
5 ओ पृथ्वीक नींव रखलनि जाहि सँ ओ अनन्त काल धरि नहि हटि जाय।
6 अहाँ ओकरा गहींर मे वस्त्र जकाँ झाँपि देलियैक।
7 अहाँक डाँट पर ओ सभ भागि गेल। तोहर गरजबाक आवाज सुनि ओ सभ जल्दबाजी मे चलि गेलाह।
8 ओ सभ पहाड़क कात मे चढ़ैत छथि। ओ सभ घाटी सभक कात मे ओहि ठाम जाइत अछि जकर नींव अहाँ ओकरा सभक लेल बनौने छी।
9 अहाँ एकटा सीमा लगा देने छी जे ओ सभ ओहि पार नहि जाथि। कि ओ सभ फेर घुमि कऽ पृथ्वी केँ झाँपि नहि लेथि।
10 ओ झरना सभ केँ उपत्यका मे पठा दैत छथि, जे पहाड़ी सभक बीच मे बहैत अछि।
11 ओ सभ खेतक हरेक जानवर केँ पीबैत अछि, जंगली गदहा सभ ओकर प्यास बुझबैत अछि।
12 ओकरा सभक द्वारा स् वर्गक चिड़ै सभक निवास होयत जे डारि सभक बीच गाबैत अछि।
13 ओ अपन कोठली सँ पहाड़ी सभ केँ पानि दैत छथि, अहाँक काजक फल सँ धरती तृप्त भऽ जाइत अछि।
14 ओ मवेशीक लेल घास आ मनुखक सेवाक लेल जड़ी-बूटी उगाबैत छथि, जाहि सँ ओ पृथ्वी सँ भोजन निकालि सकथि।
15 मनुष् यक हृदय केँ आनन्दित करयवला शराब, ओकर मुँह चमकाबय लेल तेल आ मनुष् यक हृदय केँ मजबूत करयवला रोटी।
16 परमेश् वरक गाछ सभ रस सँ भरल अछि। लेबनानक देवदारक गाछ जे ओ रोपने छथि।
17 जतऽ चिड़ै सभ अपन खोंता बनबैत अछि, तँ सारसक गाछ ओकर घर अछि।
18 ऊँच पहाड़ी सभ जंगली बकरी सभक आश्रय स्थल अछि। आ शंकु सभक लेल चट्टान।
19 ओ चान केँ ऋतु-ऋतुक लेल निर्धारित कयलनि, सूर्य अपन अस्त होयबाक बात जनैत अछि।
20 अहाँ अन्हार बना दैत छी आ राति अछि, जाहि मे जंगलक सभ जानवर रेंगैत अछि।
21 सिंहक बच्चा सभ अपन शिकारक पाछाँ गर्जैत अछि आ परमेश् वर सँ अपन भोजन तकैत अछि।

22 सूर्य उगैत अछि, ओ सभ एक ठाम जमा भ' क' अपन-अपन मांद मे सुता दैत अछि।
23 मनुष् य साँझ धरि अपन काज आ परिश्रमक लेल आगू बढ़ैत अछि।
24 हे प्रभु, अहाँक काज कतेक तरहक अछि! अहाँ ओकरा सभ केँ बुद्धि सँ बनौने छी, पृथ् वी तोहर धन सँ भरल अछि।
25 तहिना ई पैघ आ चौड़ा समुद्र अछि, जाहि मे छोट-पैघ प्राणी असंख्य रेंगैत अछि।
26 ओतहि नाव सभ जाइत अछि, ओतहि ओ लेवियथन अछि, जकरा अहाँ ओहि मे खेलाइत बनौने छी।
27 ई सभ अहाँक प्रतीक्षा मे अछि। जाहि सँ अहाँ हुनका सभक भोजन उचित समय पर दऽ सकब।"
28 अहाँ ओकरा सभ केँ दऽ दैत छी, ओ सभ अपन हाथ खोलैत छी, ओ सभ नीक सँ भरल अछि।
29 अहाँ अपन मुँह नुका लैत छी, ओ सभ घबराहटि मे अछि, अहाँ हुनका सभक साँस छीनि लैत छी, ओ सभ मरि जाइत अछि आ अपन धूरा मे घुरि जाइत अछि।
30 अहाँ अपन आत् मा केँ पठा दैत छी, ओ सभ सृजित अछि।
31 परमेश् वरक महिमा अनन्तकाल धरि रहत, परमेश् वर अपन काज मे आनन्दित रहताह।
32 ओ पृथ्वी दिस तकैत अछि आ ओ काँपि उठैत अछि, पहाड़ी सभ केँ छूबैत अछि आ ओ सभ धुँआ उड़ैत अछि।
33 हम जाबत जीवित रहब ताबत धरि परमेश् वरक स्तुति गाबब।
34 हुनका प्रति हमर मनन मधुर होयत, हम परमेश् वर मे आनन्दित रहब।
35 पापी सभ पृथ् वी सँ समाप्त भऽ जाय आ दुष्ट सभ आब नहि रहय। हे हमर प्राण, प्रभुक आशीष करू। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 105

1 हे परमेश् वर केँ धन् यवाद करू। ओकर नाम पुकारू, ओकर कर्म लोकक बीच बताउ।
2 हुनका गाओ, भजन गाबय, हुनकर सभ आश्चर्यक काजक गप्प करू।
3 अहाँ सभ हुनकर पवित्र नाम पर महिमा करू।
4 परमेश् वर आ हुनकर सामर्थ् य ताकू, हुनकर मुँह सदा-दाद तकैत रहू।
5 हुनकर अद्‌भुत काज सभ मोन राखू जे ओ केने छथि। ओकर चमत्कार आ ओकर मुँहक न्याय।
6 हे हुनकर सेवक अब्राहमक वंशज, हुनकर चुनल याकूबक सन् तान।
7 ओ हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वर छथि।
8 ओ अपन वाचा केँ अनन्त काल धरि मोन पाड़ैत रहलाह, जे वचन ओ हजार पीढ़ी धरि आज्ञा देने छलाह।
9 ई वाचा ओ अब्राहमक संग कयलनि आ इसहाकक संग अपन शपथ।
10 ओहि बात केँ याकूब केँ धर्म-नियमक रूप मे आ इस्राएल केँ अनन्त वाचा लेल पुष्ट कयलनि।
11 ओ कहलनि, "हम अहाँ केँ कनान देश केँ देबनि, जे अहाँक उत्तराधिकारक भाग अछि।
12 जखन ओ सभ किछुए लोक छल। हँ, बहुत कम, आ एहि मे परदेशी।
13 जखन ओ सभ एक जाति सँ दोसर जाति मे, एक राज्य सँ दोसर जाति मे जाइत छलाह।
14 ओ ककरो हुनका सभ केँ दुष् ट करय नहि देलनि।
15 ओ कहलनि, "हमर अभिषिक्त केँ हाथ नहि लगाउ आ हमर प्रवक् ता सभक कोनो अधलाह नहि करू।"
16 ओ देश मे अकाल पड़बाक आह्वान कयलनि।
17 ओ हुनका सभक आगाँ यूसुफ नामक एक आदमी पठौलनि, जे नोकरक बदला मे बेचल गेल छल।
18 ओकर पएर बेड़ीसँ चोट पहुँचबैत छल।
19 जाबत धरि हुनकर वचन नहि आबि गेलनि ता धरि परमेश् वरक वचन हुनका परखैत रहलाह।
20 राजा हुनका पठा कऽ पठा देलथिन। लोकक शासक सेहो, आ ओकरा मुक्त छोड़ि दियौक।
21 ओ हुनका अपन घरक मालिक आ अपन समस्त सम्पत्तिक मालिक बनौलनि।
22 अपन इच्छानुसार अपन राजकुमार सभ केँ बान्हि देबाक लेल। आ अपन सीनेटर सभकेँ बुद्धि सिखाउ।
23 इस्राएल सेहो मिस्र मे आबि गेलाह। याकूब हाम देश मे प्रवास कयलनि।
24 ओ अपन लोक केँ बहुत बढ़ौलनि। आ ओकरा सभ केँ अपन शत्रु सँ बेसी बलवान बना देलक।
25 ओ हुनका सभक मोन घुमा देलनि जे ओ अपन लोक सभ सँ घृणा करथि आ अपन सेवक सभक संग धूर्त व्यवहार करथि।
26 ओ अपन सेवक मूसा केँ पठौलनि। आ हारून जकरा ओ चुनने छलाह।
27 ओ सभ हाम देश मे हुनकर चिन् त्र आ चमत् कार देखौलनि।
28 ओ अन्हार पठौलनि आ ओकरा अन्हार कऽ देलनि। ओ सभ हुनकर वचनक विद्रोह नहि केलक।
29 ओ हुनका सभक पानि केँ खून मे बदलि देलनि आ हुनका सभक माछ मारि देलनि।
30 हुनका लोकनिक देश मे, हुनका लोकनिक राजा सभक कोठली मे, प्रचुर मात्रा मे बेंग उत्पन्न होइत छलनि।
31 ओ बजलाह, आ चारू कात मे तरह-तरह के मक्खी आ जूं आबि गेल।
32 ओ ओकरा सभ केँ बरखाक बदला मे ओला आ ज्वालामुखी आगि देलक।
33 ओ हुनका सभक बेल आ अंजीरक गाछ सभ केँ मारि देलनि। आ अपन तटक गाछ-बिरिछ केँ तोड़ि दियौक।
34 ओ बाजल, टिड्डी आ कड़क आ अगणित लोक सभ आबि गेल।
35 ओ सभ अपन देशक सभटा जड़ी-बूटी खा गेल आ अपन जमीनक फल खा गेल।
36 ओ अपन देशक सभ जेठ बच्चा सभ केँ मारि देलथिन, जे ओकर सभक सामर्थ्यक प्रमुख छल।
37 ओ चानी आ सोना लऽ कऽ ओकरा सभ केँ सेहो बाहर अनलनि।
38 जखन ओ सभ विदा भेलाह तखन मिस्र केँ खुशी भेलनि, किएक तँ हुनका सभ केँ भय भऽ गेलनि।
39 ओ ढकबाक लेल मेघ पसारि देलनि। आ राति मे इजोत देबाक लेल आगि।

40 लोक सभ पुछलक आ ओ बटेर आनि कऽ ओकरा सभ केँ स्
वर्गक रोटी सँ तृप्त कऽ देलक।
41 ओ पाथर खोललनि आ पानि बहरा गेल। नदी जकाँ सूखल
जगह पर दौड़ैत छल।
42 ओ अपन पवित्र प्रतिज्ञा आ अपन सेवक अब्राहम केँ मोन
पाड़लनि।
43 ओ अपन लोक केँ हर्ष मे आ अपन चुनल लोक केँ हर्ष सँ
बाहर अनलनि।
44 ओ हुनका सभ केँ जाति-जाति सभक देश दऽ देलथिन।
45 जाहि सँ ओ सभ हुनकर नियमक पालन करथि आ हुनकर
नियमक पालन करथि। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 106

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। हे प्रभु केँ धन्यवाद दियौक।
किएक तँ ओ नीक छथि, किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि
रहैत छनि।
2 परमेश् वरक पराक्रमक काज के कहि सकैत अछि? ओकर
सभटा प्रशंसा के क' सकैत अछि?
3 धन्य अछि जे सभ न् याय केँ पालन करैत अछि आ जे सभ
समय मे धार्मिकता करैत अछि।
4 हे परमेश् वर, अपन प्रजा पर जे अनुग्रह करैत छी, ताहि सँ
हमरा मोन पाड़ू।
5 हम अहाँक चुनल लोक सभक भलाई देखब, जाहि सँ हम
अहाँक जातिक आनन्द मे आनन्दित होयब, जाहि सँ हम अहाँक
उत्तराधिकारक संग गौरव करब।
6 हम सभ अपन पूर्वज सभक संग पाप केलहुँ, अधर्म केलहुँ,
अधलाह काज केलहुँ।
7 हमरा सभक पूर्वज मिस्र मे अहाँक चमत्कार नहि बुझलनि। ओ
सभ अहाँक दयाक भरमार केँ मोन नहि पाड़लनि। मुदा समुद्र मे,
लाल समुद्र मे सेहो ओकरा उकसा देलक।
8 तैयो ओ अपन नामक कारणेँ ओकरा सभ केँ बचा लेलक, जाहि
सँ ओ अपन पराक्रमी सामर्थ्यक लोक सभ केँ ज्ञात करथि।
9 ओ लाल समुद्र केँ सेहो डाँटि देलथिन आ ओ सुखा गेलनि।
10 ओ ओकरा सभ केँ घृणा करनिहारक हाथ सँ बचा लेलक आ
शत्रु सभक हाथ सँ मुक्त कऽ लेलक।
11 पानि हुनका सभक शत्रु सभ केँ झाँपि देलक।
12 तखन ओ सभ हुनकर बात पर विश् वास कयलनि। हुनकर
गुणगान गबैत छलाह।
13 ओ सभ जल्दिये हुनकर काज बिसरि गेल। ओ सभ हुनकर
सलाहक प्रतीक्षा नहि कयलनि।
14 मुदा मरुभूमि मे परमेश् वर केँ बहुत वासना कयलनि।
15 ओ हुनका सभ केँ हुनकर सभक आग्रह दऽ देलथिन। मुदा
हुनका लोकनिक आत्मा मे दुबलापन पठौलनि।
16 ओ सभ डेरा मे मूसा आ परमेश् वरक संत हारून केँ सेहो
ईर्ष्या केलक।
17 पृथ्वी खुजि कऽ दाथन केँ निगल गेल आ अबीरामक दल केँ
झाँपि देलक।
18 हुनका लोकनिक संग आगि जरि गेलनि। लौ दुष्ट केँ जरा
देलक।
19 ओ सभ होरेब मे एकटा बछड़ा बनौलनि आ पिघलल मूर्तिक
पूजा कयलनि।
20 एहि तरहेँ ओ सभ अपन महिमा केँ घास खाय बला बैल जकाँ
बदलि लेलक।
21 ओ सभ अपन उद्धारकर्ता परमेश् वर केँ बिसरि गेलाह जे
मिस्र मे बहुत पैघ काज केने छलाह।
22 हाम देश मे अद्भुत काज आ लाल समुद्रक कात मे भयंकर
काज।
23 तेँ ओ कहलनि जे, जँ हुनकर चुनल गेल मूसा हुनका सभ केँ
नष्ट कऽ देबनि, जँ हुनकर क्रोध केँ दूर करबाक लेल हुनका
सभक सोझाँ नहि ठाढ़ रहितथि।
24 हँ, ओ सभ सुखद देश केँ तिरस्कृत कयलनि, हुनकर वचन
पर विश्वास नहि कयलनि।
25 मुदा अपन डेरा मे बड़बड़ाइत रहलाह आ परमेश् वरक
आवाज नहि सुनलनि।
26 तेँ ओ ओकरा सभ केँ जंगल मे उखाड़ि फेकबाक लेल अपन
हाथ उठौलनि।
27 अपन वंशज केँ जाति-जाति मे उखाड़ि कऽ ओकरा सभ केँ
देश मे छिड़िया देब।
28 ओ सभ बालपेओर मे मिलि कऽ मृत् युक बलिदान खा
गेलाह।
29 एहि तरहेँ ओ सभ अपन आविष्कार सँ हुनका क्रोधित
कयलनि आ विपत्ति हुनका सभ पर आबि गेलनि।
30 तखन फिनहास ठाढ़ भऽ कऽ न्याय कयलनि।
31 ई बात हुनका लेल सभ पीढ़ी धरि अनन्त काल धरि
धार्मिकताक रूप मे गिनल गेलनि।
32 ओ सभ झगड़ाक पानि पर हुनका क्रोधित कयलनि, जाहि सँ
ओ सभ हुनका सभक लेल मूसा केँ बीमार भऽ गेलनि।
33 किएक तँ ओ सभ हुनकर आत्मा केँ क्रोधित कयलनि, जाहि
सँ ओ अपन ठोर सँ अनवधान मे बजैत छलाह।
34 ओ सभ ओहि जाति सभक नाश नहि कयलक, जकरा विषय
मे परमेश् वर हुनका सभ केँ आज्ञा देने छलाह।
35 मुदा ओ सभ जाति-जाति मे घुलि-मिलि गेलाह आ ओकर
सभक काज सीखलनि।
36 ओ सभ अपन मूर्ति सभक सेवा करैत छलाह।
37 हँ, ओ सभ अपन बेटा-बेटी केँ दुष्टात्मा सभक बलिदान
देलक।
38 ओ सभ निर्दोष खून बहौलनि, जे ओ सभ अपन बेटा आ बेटी
सभक खून बहौलनि, जकरा ओ सभ कनानक मूर्ति सभक लेल
बलिदान कयलनि।
39 एहि तरहेँ ओ सभ अपन काज सँ अशुद्ध भऽ गेलाह।
40 तेँ परमेश् वरक क्रोध अपन प्रजा पर प्रज्वलित भऽ गेलनि जे
ओ अपन उत्तराधिकार सँ घृणा कयलनि।
41 ओ ओकरा सभ केँ जाति-जाति सभक हाथ मे दऽ देलथिन।
जे ओकरा सभ सँ घृणा करैत छल, ओकरा सभ पर राज करैत
छल।
42 हुनका सभक शत्रु सभ सेहो हुनका सभ केँ अत्याचार
कयलनि आ हुनका सभ केँ हुनका सभक अधीन कयल गेलनि।
43 ओ कतेको बेर हुनका सभ केँ उद्धार कयलनि। मुदा ओ सभ
अपन विश् वास सँ हुनका क्रोधित कयलनि आ अपन अधर्मक
कारणेँ नीचाँ कयल गेलाह।
44 तैयो हुनका सभक चीत्कार सुनि हुनका सभक कष् ट पर
नजरि पड़लनि।
45 ओ हुनका सभक लेल अपन वाचा केँ मोन पाड़लनि आ अपन
दयाक प्रचुरताक अनुसार पश्चाताप कयलनि।

46 ओ ओकरा सभ कैँ बंदी बना कऽ लऽ गेल सभ लोक पर सेहो दया करौलनि।
47 हे हमर परमेश् वर परमेश् वर, हमरा सभ कैँ बचाउ, आ हमरा सभ कैँ जाति-जाति मे सँ जमा करू, जाहि सँ हम सभ अपन पवित्र नामक धन्यवाद देब आ अहाँक स्तुति मे विजयी भऽ सकब।
48 इस्राएलक परमेश् वर परमेश् वर कैँ अनन्त सँ अनन्त धरि धन्य होउ। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 107 के अनुसार

1 हे परमेश् वर कैँ धन् यवाद करू, किएक तँ ओ नीक छथि, किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।
2 परमेश् वरक उद्धार कयल गेल लोक सभ एना कहथि जे ओ शत्रु सभक हाथ सँ मुक्त कयलनि।
3 ओ सभ ओकरा सभ कैँ पूब आ पश्चिम, उत्तर आ दक्षिण सँ ओहि देश सभ मे सँ जमा कऽ लेलक।
4 ओ सभ एकांत मे जंगल मे भटकैत रहलाह। हुनका सभ कैँ कोनो शहर नहि भेटलनि जाहि मे रहबाक लेल।
5 भूखल आ प्यासल, हुनका लोकनिक प्राण हुनका सभ मे बेहोश भ' गेलनि।
6 तखन ओ सभ अपन विपत्ति मे परमेश् वर सँ पुकारलनि आ ओ हुनका सभ कैँ विपत्ति सँ मुक्त कऽ देलनि।
7 ओ ओकरा सभ कैँ सही बाट पर लऽ गेलाह, जाहि सँ ओ सभ कोनो आवासक नगर मे जाथि।
8 जँ लोक सभ परमेश् वरक भलाई आ मनुष् यक सन् तान सभक प्रति हुनकर अद्भुत काज सभक स्तुति करितथि!
9 किएक तँ ओ आकांक्षी प्राणी कैँ तृप्त करैत अछि आ भूखल प्राणी कैँ भलाई सँ भरैत अछि।
10 जे सभ अन्हार आ मृत्युक छाया मे बैसल छथि आ कष्ट आ लोहा मे बान्हल रहैत छथि।
11 किएक तँ ओ सभ परमेश् वरक वचनक विरुद्ध विद्रोह कयलनि आ परमेश् वरक सलाह कैँ तिरस्कृत कयलनि।
12 तेँ ओ श्रम सँ हुनका सभक मोन कैँ नीचाँ खसा देलनि। ओ सभ खसि पड़लाह, आ कियो मददि करयवला नहि छल।
13 तखन ओ सभ अपन विपत्ति मे परमेश् वर सँ पुकारलनि आ ओ हुनका सभ कैँ विपत्ति सँ बचा लेलनि।
14 ओ ओकरा सभ कैँ अन्हार आ मृत्युक छाया सँ बाहर निकालि कऽ ओकरा सभक पट्टी तोड़ि देलक।
15 जँ लोक सभ परमेश् वरक भलाई आ मनुष् यक सन् तान सभक प्रति हुनकर अद्भुत काज सभक स्तुति करितथि।
16 किएक तँ ओ पीतलक फाटक तोड़ि कऽ लोहाक सलाख सभकैँ काटि देलक।
17 मूर्ख सभ अपन अपराध आ अधर्मक कारणेँ दुखित होइत अछि।
18 हुनका सभक प्राणी सभ तरहक भोजन सँ घृणा करैत अछि। ओ सभ मृत्युक फाटक लग आबि जाइत छथि।
19 तखन ओ सभ अपन विपत्ति मे परमेश् वर सँ पुकारैत छथि आ ओ हुनका सभ कैँ विपत्ति सँ बचाबैत छथि।
20 ओ अपन वचन पठौलनि आ ओकरा सभ कैँ ठीक कयलनि आ ओकरा सभ कैँ विनाश सँ मुक्त कयलनि।
21 जँ लोक सभ परमेश् वरक भलाई आ मनुष् यक सन् तान सभक प्रति हुनकर अद्भुत काज सभक स्तुति करितथि।
22 ओ सभ धन्यवादक बलिदानक बलिदान करथि आ हर्षित भऽ हुनकर काज सभक प्रचार करथि।
23 जे सभ नाव मे समुद्र मे उतरैत अछि आ पैघ पानि मे कारोबार करैत अछि।
24 ई सभ परमेश् वरक काज आ हुनकर आश्चर्य गहींर मे देखैत छथि।
25 किएक तँ ओ आज्ञा दैत अछि आ ओहि तूफानी हवा कैँ उठबैत अछि जे ओकर लहरि कैँ ऊपर उठबैत अछि।
26 ओ सभ स् वर्ग पर चढ़ैत अछि, फेर गहींर मे उतरि जाइत अछि।
27 ओ सभ एम्हर-ओम्हर घुमैत अछि, नशा मे धुत्त आदमी जकाँ डगमगाइत अछि आ अपन बुद्धिक अंत मे रहैत अछि।
28 तखन ओ सभ अपन विपत्ति मे परमेश् वर सँ पुकारैत छथि आ ओ हुनका सभ कैँ विपत्ति सँ बाहर निकालि दैत छथि।
29 ओ तूफान कैँ शान्त कऽ दैत छथिन जे ओकर लहरि शान्त भऽ जाइत अछि।
30 तखन ओ सभ चुप रहबाक कारणेँ प्रसन्न होइत छथि। तेँ ओ ओकरा सभ कैँ अपन मनचाहा ठिकाना पर पहुँचा दैत छथि।
31 जँ लोक सभ परमेश् वरक भलाई आ मनुष् यक सन् तान सभक प्रति हुनकर अद्भुत काज सभक स्तुति करितथि।
32 ओ सभ लोकक मंडली मे हुनका ऊपर उठाबथि आ बूढ़-पुरान सभक जमात मे हुनकर स्तुति करथि।
33 ओ नदी सभ कैँ जंगल मे बदलि दैत अछि आ जलस्रोत कैँ शुष्क जमीन मे बदलि दैत अछि।
34 ओहि मे रहनिहार सभक दुष्टताक कारणेँ एकटा फलदार देश बंजरता मे बदलि गेल।
35 ओ मरुभूमि कैँ ठाढ़ पानि मे बदलि दैत छथि आ शुष्क जमीन कैँ जलक झरना मे बदलि दैत छथि।
36 भूखल लोक सभ कैँ ओतहि रहय दैत छथिन जाहि सँ ओ सभ रहबाक लेल एकटा नगर तैयार करथि।
37 खेत मे बोउ आ अंगूरक बगीचा लगाउ, जाहि सँ बढ़बाक फल भेटय।
38 ओ हुनका सभ कैँ सेहो आशीष दैत छथिन, जाहि सँ ओ सभ बहुत बढ़ि जाइत छथि। आ ओकरा सभक माल-जाल कैँ कम नहि होबय दैत छैक।
39 फेर ओ सभ अत्याचार, क्लेश आ दुखक कारणेँ ओकरा सभ कैँ कम कयल जाइत अछि आ नीचाँ कयल जाइत अछि।
40 ओ राजकुमार सभ पर तिरस्कार बरसैत अछि आ ओकरा सभ कैँ जंगल मे भटकबैत अछि, जतय कोनो बाट नहि अछि।
41 तैयो गरीब सभ कैँ कष्ट सँ ऊँच कऽ दैत छथिन आ ओकरा भैँड़ा जकाँ कुल बना दैत छथिन।
42 धर्मी लोक सभ ओकरा देखि कऽ आनन्दित हेताह, आ सभ अधर्म ओकर मुँह रोकत।
43 जे बुद्धिमान अछि आ एहि बात सभक पालन करत, ओ परमेश् वरक दया कैँ बुझत।

अध्याय 108

1 (दाऊदक गीत वा भजन।) हे परमेश् वर, हमर मोन स्थिर अछि। हम गाबि कऽ स्तुति करब, अपन महिमा सँ सेहो।
2 जागू, भजन आ वीणा, हम स्वयं भोरे जागब।
3 हे परमेश् वर, हम लोकक बीच अहाँक स्तुति करब, आ जाति सभक बीच अहाँक स्तुति गाबब।

4 अहाँक दया आकाश सँ बेसी अछि, आ अहाँक सत् य मेघ धरि पहुँचि जाइत अछि।
5 हे परमेश् वर, अहाँ आकाश सँ ऊपर उठू, आ अहाँक महिमा समस्त पृथ्वी सँ ऊपर।
6 जाहि सँ अहाँक प्रियजन उद्धार पाबि सकय, अपन दहिना हाथ सँ बचाउ आ हमरा उत्तर दिअ।
7 परमेश् वर अपन पवित्रता मे बाजि रहल छथि। हम आनन्दित रहब, शेकेम केँ बाँटि देब आ सुक्कोतक घाटी केँ मेटायब।
8 गिलिआद हमर अछि। मनश्शे हमर अछि। एफ्राइम सेहो हमर माथक बल अछि। यहूदा हमर व्यवस्था देनिहार छथि।
9 मोआब हमर धोखा अछि। हम एदोम पर अपन जूता निकालब। पलिष्टिया पर हम विजय प्राप्त करब।
10 हमरा मजगूत नगर मे के अनत? हमरा एदोम मे के लऽ जायत?
11 हे परमेश् वर, जे हमरा सभ केँ फेकि देलहुँ, की अहाँ नहि चाहैत छी? हे परमेश् वर, की अहाँ हमरा सभक सेनाक संग नहि जायब?
12 हमरा सभ केँ विपत्ति सँ सहायता दिअ, कारण मनुष्यक सहायता व्यर्थ अछि।
13 परमेश् वरक द्वारा हम सभ वीरतापूर्वक काज करब, किएक तँ वैह छथि जे हमरा सभक शत्रु सभ केँ रौदत।

अध्याय 109

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे हमर स्तुतिक परमेश् वर, चुप नहि रहू।
2 किएक तँ हमरा विरुद्ध दुष् ट आ ठगक मुँह खुजल अछि।
3 ओ सभ घृणाक बात सभ हमरा चारू कात घुमि रहल छल। आ हमरासँ बिना कोनो कारणसँ लड़ल।
4 हमर प्रेमक कारणेँ ओ सभ हमर विरोधी छथि।
5 ओ सभ हमरा नीकक बदला मे अधलाह आ हमर प्रेमक प्रति घृणा देलक।
6 ओकरा पर एकटा दुष्ट केँ राखू, आ शैतान केँ ओकर दहिना कात ठाढ़ रहय।
7 जखन ओकर न् याय होयत तखन ओकरा दोषी ठहराओल जाय, आ ओकर प्रार्थना पाप बनि जाय।
8 ओकर दिन कम रहय। आ दोसर अपन पद सम्हारय दियौक।
9 ओकर संतान सभ पिताहीन होथि आ पत्नी विधवा।
10 ओकर बच्चा सभ नित्य भटकैत रहय आ भीख माँगय।
11 लुटेरा अपन सभ किछु पकड़ि लेत। आ परदेशी सभ ओकर श्रम बिगाड़य।
12 ओकरा पर दया करयवला केओ नहि हो, आ ने ओकर अनाथ संतान पर अनुग्रह करय बला कियो नहि हो।
13 ओकर वंशज कटैत रहय। आ बादक पीढ़ी मे हुनका सभक नाम मेटा देल जाय।
14 ओकर पूर्वज सभक अधर्म परमेश् वरक सामने स्मरण कयल जाय। आ मायक पाप नहि मेटा जाय।
15 ओ सभ सदिखन परमेश् वरक समक्ष रहय, जाहि सँ ओ पृथ् वी सँ हुनका सभक स्मृति केँ काटि सकय।
16 किएक तँ ओ दया करबाक स्मरण नहि कयलनि, बल् कि गरीब आ गरीब लोक सभ केँ सताबैत रहलाह, जाहि सँ ओ टूटल-फूटल हृदय केँ सेहो मारि सकथि।
17 जहिना हुनका गारि पढ़ब नीक लगैत छलनि, तहिना हुनका लग आओत।
18 जेना ओ अपन वस्त्र जकाँ गारि-गरौबलि पहिरने छल, तहिना ओ पानि जकाँ आंत मे आओत आ हड्डी मे तेल जकाँ आबि जाय।
19 ओकरा लेल ई ओहि वस्त्र जकाँ होअय जे ओकरा झाँपि दैत छैक आ ओहि पट्टीक लेल जकरा सँ ओ नित्य बान्हल रहैत छैक।
20 परमेश् वरक प्रति हमर शत्रु सभक आ हमर आत् मा पर अधलाह बजनिहार सभक प्रतिफल ई होअय।
21 मुदा, हे परमेश् वर परमेश् वर, अहाँ अपन नामक लेल हमरा लेल करू।
22 हम गरीब आ गरीब छी, आ हमर मोन हमरा भीतर घायल अछि।
23 हम छाहरि जेकाँ चलि गेल छी जखन ओ खसैत अछि।
24 उपवासक कारणेँ हमर ठेहुन कमजोर भऽ गेल अछि। हमर शरीर मोटाई सँ क्षीण भ' गेल अछि।
25 हम हुनका सभक लेल सेहो निन्दा बनि गेलहुँ।
26 हे हमर परमेश् वर, हमर सहायता करू।
27 जाहि सँ ओ सभ ई जानि लेथि जे ई अहाँक हाथ अछि। कि अहाँ, प्रभु, ई काज केलहुँ।"
28 ओ सभ गारि पढ़य, मुदा अहाँ आशीष दिअ। मुदा अहाँक सेवक आनन्दित होअय।"
29 हमर विरोधी सभ लाजक वस्त्र पहिरि कऽ अपना केँ अपन गड़बड़ी सँ झाँपय, जेना वस्त्र पहिरने रहय।
30 हम अपन मुँह सँ परमेश् वरक बहुत स्तुति करब। हँ, हम भीड़क बीच हुनकर प्रशंसा करब।
31 किएक तँ ओ गरीबक दहिना कात ठाढ़ भऽ कऽ ओकरा अपन आत् मा केँ दोषी ठहराबऽ वला लोक सभ सँ बचाओत।

अध्याय 110 के अनुसार

1 (दाऊदक भजन।) परमेश् वर हमर प्रभु केँ कहलथिन, "हमर दहिना कात बैसल रहू जाबत धरि हम अहाँक शत्रु सभ केँ अहाँक पैरक ठेहुन नहि बना देब।"
2 परमेश् वर सियोन सँ अहाँक सामर्थ् यक लाठी पठौताह, अहाँ अपन शत्रु सभक बीच राज करू।
3 तोहर लोक अहाँक सामर्थ्यक दिन, भोरका गर्भ सँ पवित्रताक सौन्दर्य मे इच्छुक रहत।
4 परमेश् वर शपथ केने छथि आ पश्चाताप नहि करताह, "अहाँ मल्कीसेदेकक क्रम मे अनन्त काल धरि पुरोहित छी।"
5 अहाँक दहिना कातक प्रभु अपन क्रोधक दिन राजा सभ केँ मारि देताह।
6 ओ जाति-जाति सभक बीच न्याय करत, ओहि स्थान सभ केँ मृत शरीर सँ भरत। ओ कतेको देश पर माथ घायल करत।
7 ओ बाट मे धार मे पीबि लेत, तेँ ओ माथ उठौत।

अध्याय 111 के अनुसार

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। हम अपन पूरा मोन सँ, सोझ लोकक सभा मे आ सभा मे परमेश् वरक स्तुति करब।
2 परमेश् वरक काज बहुत पैघ अछि, जे सभ ओहि मे प्रसन्नता करैत अछि।
3 हुनकर काज गौरवशाली आ गौरवशाली अछि।
4 ओ अपन अद्भुत काज सभ केँ मोन पाड़ि लेलनि।

5 ओ अपना सँ डरय बला सभ केँ भोजन दऽ देलथिन।
6 ओ अपन लोक सभ केँ अपन काजक सामर्थ् य देखौलनि, जाहि सँ ओ ओकरा सभ केँ जाति-जाति सभक उत्तराधिकार दऽ सकथि।
7 हुनकर हाथक काज सत् य आ न् याय अछि। ओकर सभ आज्ञा पक्का अछि।
8 ओ सभ अनन्त काल धरि दृढ़तापूर्वक ठाढ़ रहैत अछि आ सत्य आ सोझता मे कयल जाइत अछि।
9 ओ अपन लोक सभ केँ मोक्ष पठौलनि।
10 प्रभुक भय बुद्धिक प्रारंभ होइत छैक, हुनकर आज्ञाक पालन करयवला सभ केँ नीक बुझल छनि।

अध्याय 112 के अनुसार

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। धन्य अछि ओ मनुष् य जे परमेश् वर सँ डरैत अछि आ हुनकर आज्ञा मे बहुत आनन्दित होइत अछि।
2 हुनकर वंशज पृथ् वी पर पराक्रमी होयत, सोझ लोकक पीढ़ी धन्य होयत।
3 ओकर घर मे धन आ धन-सम्पत्ति रहतैक।
4 सोझ लोकक लेल अन्हार मे इजोत उठैत अछि, ओ कृपालु, दया सँ भरल आ धर्मी छथि।
5 नीक लोक कृपा करैत अछि आ उधार दैत अछि।
6 निश्चित रूप सँ ओ अनन्त काल धरि नहि हिलत, धार्मिक लोक सभ अनन्त काल धरि स्मरण कयल जायत।
7 ओ अशुभ समाचार सँ नहि डेराओत, ओकर हृदय टिकल अछि आ परमेश् वर पर भरोसा करैत अछि।
8 ओकर हृदय स्थिर भऽ गेल छैक, जाबत धरि ओ अपन शत्रु सभ पर अपन इच्छा नहि देखि ता धरि नहि डरत।
9 ओ तितर-बितर भऽ गेल अछि, गरीब सभ केँ दऽ देलक। ओकर धार्मिकता अनन्त काल धरि टिकैत छैक। ओकर सींग आदरक संग ऊँच कयल जायत।
10 दुष्ट सभ एकरा देखि कऽ दुखी होयत। ओ दाँत कटैत आ पिघलि जायत, दुष्टक इच्छा नाश भ' जायत।

अध्याय 113 के अनुसार

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। हे परमेश् वरक सेवक सभ, स्तुति करू, परमेश् वरक नामक स्तुति करू।
2 परमेश् वरक नाम एखन धरि आ अनन्त काल धरि धन्य हो।
3 सूर्योदय सँ लऽ कऽ अस्तन धरि परमेश् वरक नामक स्तुति करबाक चाही।
4 परमेश् वर सभ जाति सँ ऊपर छथि आ स् वर्ग सँ ऊपर हुनकर महिमा।
5 ओ हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वरक समान छथि, जे ऊँच पर रहैत छथि।
6 जे स् वर्ग आ पृथ् वी मे जे किछु अछि, तकरा देखबाक लेल अपना केँ नम्र करैत छथि!
7 गरीब सभ केँ धूरा सँ उठबैत अछि आ गरीब केँ गोबर मे सँ उठा लैत अछि।
8 जाहि सँ ओ हुनका अपन प्रजाक मुखिया सभक संग राजपुत्र सभक संग राखि सकथि।
9 ओ बांझ स्त्री केँ घरक रखवाली आ सन् तानक आनन्दित माय बनबैत छथि। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 114 के अनुसार

1 जखन इस्राएल मिस्र सँ बाहर निकलल छल, याकूबक घराना परदेशी भाषाक लोक सँ।
2 यहूदा ओकर पवित्र स्थान छल आ इस्राएल ओकर प्रभु।
3 समुद्र ओकरा देखि कऽ भागि गेल।
4 पहाड़ मेढ़क जकाँ उछलैत छल आ छोट-छोट पहाड़ी सभ मेमना जकाँ।
5 हे समुद्र, तोरा की बीमार भेलै जे भागि गेलहुँ? अहाँ यरदन, जे अहाँ पाछू भगा देल गेलहुँ?
6 हे पहाड़ सभ, जे मेढ़क जकाँ कूदि गेलहुँ। आ अहाँ सभ छोट-छोट पहाड़ी सभ मेमना जकाँ?
7 हे धरती, प्रभुक सान्निध्य मे आ याकूबक परमेश् वरक सान्निध्य मे काँपि जाउ।
8 जे पाथर केँ ठाढ़ पानि मे बदलि देलक, चकमक पत्थर केँ पानिक फव्वारा मे बदलि देलक।

अध्याय 115 के अनुसार

1 हे प्रभु, हमरा सभ केँ नहि, हमरा सभ केँ नहि, बल् कि अपन दया आ अपन सत्यक लेल अपन नाम केँ महिमा दिअ।
2 जाति-जाति सभ किएक कहत जे, "आब हुनका सभक परमेश् वर कतय छथि?"
3 मुदा हमरा सभक परमेश् वर स् वर्ग मे छथि।
4 हुनका सभक मूर्ति चानी आ सोनाक अछि, जे मनुष् यक हाथक काज अछि।
5 हुनका सभक मुँह छनि, मुदा ओ सभ नहि बजैत छथि, आँखि छनि, मुदा ओ सभ नहि देखैत छथि।
6 कान अछि, मुदा सुनैत नहि अछि, नाक मे अछि, मुदा गंध नहि अबैत अछि।
7 ओकरा सभक हाथ छैक, मुदा ओकरा सभक हाथ नहि छैक, पएर छैक, मुदा ओ सभ नहि चलैत छैक, आ ने कंठ सँ बजैत छैक।
8 जे सभ ओकरा सभ केँ बनबैत अछि, से सभ ओकरा सभक समान अछि। तहिना जे कियो हुनका सभ पर भरोसा करैत अछि।
9 हे इस्राएल, अहाँ परमेश् वर पर भरोसा करू, ओ हुनका सभक सहायक आ ढाल छथि।
10 हे हारूनक घराना, परमेश् वर पर भरोसा करू, ओ हुनका सभक सहायक आ ढाल छथि।
11 अहाँ सभ जे सभ परमेश् वरक भय मानैत छी, परमेश् वर पर भरोसा करू, ओ हुनका सभक सहायक आ ढाल छथि।
12 परमेश् वर हमरा सभक मोन मे रहलाह, ओ हमरा सभ केँ आशीर्वाद देथिन। ओ इस्राएलक घराना केँ आशीर्वाद देत। ओ हारूनक घर केँ आशीर्वाद देत।
13 छोट-पैघ, परमेश् वरक भय जे सभ परमेश् वरक भय मानैत अछि, तकरा सभ केँ ओ आशीर्वाद देथिन।
14 परमेश् वर अहाँ सभ केँ आ अहाँ सभक सन् तान सभ केँ बेसी सँ बेसी बढ़ौताह।

15 अहाँ सभ परमेश् वरक आशीष अछि जे स् वर्ग आ पृथ् वी केँ बनौलनि।
16 आकाश, आकाश, परमेश् वरक अछि।
17 मृतक सभ परमेश् वरक स्तुति नहि करैत अछि आ ने केओ जे चुप भऽ जाइत अछि।
18 मुदा हम सभ एखन आ अनन्त काल धरि परमेश् वरक आशीष करब। प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 116

1 हम परमेश् वर सँ प्रेम करैत छी, किएक तँ ओ हमर आवाज आ हमर विनती सुनने छथि।
2 ओ हमरा दिस कान झुकौने छथि, तेँ हम जाबत जीवित रहब, हुनका पुकारब।
3 मृत्युक दुख हमरा घेरने छल, आ नरकक पीड़ा हमरा पकड़ि लेलक।
4 तखन हम परमेश् वरक नाम पुकारलहुँ। हे प्रभु, हम अहाँ सँ विनती करैत छी जे हमर प्राण केँ बचाउ।
5 प्रभु कृपालु छथि आ धर्मी छथि। हँ, हमर सभक परमेश् वर दयालु छथि।
6 परमेश् वर सहज लोकक रक्षा करैत छथि, हम नीचाँ कयल गेलहुँ आ ओ हमरा सहायता कयलनि।
7 हे हमर प्राण, अपन विश्राम मे घुरि जाउ। किएक तँ परमेश् वर तोरा संग प्रखर व्यवहार कयलनि।
8 अहाँ हमर प्राण केँ मृत्यु सँ, हमर आँखि केँ नोर सँ आ हमर पएर खसबा सँ बचा लेलहुँ।
9 हम जीवित लोकक देश मे परमेश् वरक समक्ष चलब।
10 हम विश् वास केलहुँ, तेँ हम बजलहुँ।
11 हम हड़बड़ा कऽ कहलियनि, “सब लोक झूठ बाजैत अछि।”
12 हम परमेश् वर केँ हुनकर सभ लाभक प्रति की देब?
13 हम उद्धारक प्याला लऽ कऽ परमेश् वरक नाम पुकारब।
14 हम आब परमेश् वरक समक्ष हुनकर समस्त लोकक समक्ष मे अपन प्रतिज्ञा पूरा करब।
15 परमेश् वरक नजरि मे हुनकर पवित्र लोकक मृत्यु अनमोल अछि।
16 हे प्रभु, हम सत्ते अहाँक सेवक छी। हम तोहर नोकर आ तोहर दासीक बेटा छी।
17 हम अहाँ केँ धन्यवादक बलि चढ़ा देब आ परमेश् वरक नाम पुकारब।
18 हम आब परमेश् वरक समस्त लोकक समक्ष परमेश् वरक प्रति अपन प्रतिज्ञा पूरा करब।
19 हे यरूशलेम, परमेश् वरक घरक आँगन मे, अहाँक बीच मे। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 117 के अनुसार

1 हे सभ जाति, प्रभुक स्तुति करू।
2 किएक तँ हुनकर दयालु दया हमरा सभ पर बहुत बेसी अछि, आ परमेश् वरक सत् य अनन् त काल धरि टिकैत अछि। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 118 के अनुसार

1 हे परमेश् वर केँ धन् यवाद करू। किएक तँ ओ नीक छथि, किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।
2 इस्राएल आब कहय जे ओकर दया अनन्त काल धरि रहत।
3 हारूनक घराना आब कहय जे हुनकर दया अनन्त काल धरि रहत।
4 आब जे सभ परमेश् वरक भयभीत करैत छथि, से कहथिन जे हुनकर दया अनन्त काल धरि रहत।
5 हम विपत्ति मे परमेश् वर केँ पुकारलहुँ, परमेश् वर हमरा उत्तर देलनि आ हमरा एकटा पैघ जगह पर बैसा देलनि।
6 परमेश् वर हमर पक्ष मे छथि। हम डरब नहि, मनुष्य हमरा की कऽ सकैत अछि?
7 परमेश् वर हमर सहायता करनिहार सभक संग हमर भाग लैत छथि।
8 मनुष् य पर भरोसा करबा सँ नीक जे परमेश् वर पर भरोसा करी।
9 राजकुमार सभ पर भरोसा करबा सँ नीक जे परमेश् वर पर भरोसा करी।
10 सभ जाति हमरा चारू कात घेरने छल, मुदा हम परमेश् वरक नाम सँ ओकरा सभ केँ नष्ट कऽ देब।
11 ओ सभ हमरा चारू कात घुमि गेल। हँ, ओ सभ हमरा चारू कात घेरने छल।
12 ओ सभ मधुमाछी जकाँ हमरा चारू कात घुमि रहल छल। ओ सभ काँटक आगि जकाँ बुझा गेल अछि, किएक तँ हम परमेश् वरक नाम सँ ओकरा सभ केँ नष्ट कऽ देब।”
13 अहाँ हमरा खसबाक लेल जोर-जोर सँ मारि देलहुँ, मुदा परमेश् वर हमरा सहायता कयलनि।
14 परमेश् वर हमर सामर्थ् य आ गीत छथि आ हमर उद्धारक बनि गेलाह।
15 धर्मी लोकक तम्बू मे आनन्द आ उद्धारक आवाज होइत अछि।
16 परमेश् वरक दहिना हाथ ऊँच कयल गेल अछि, परमेश् वरक दहिना हाथ वीरतापूर्वक काज करैत अछि।
17 हम नहि मरब, बल् कि जीवित रहब आ परमेश् वरक काज सभक प्रचार करब।
18 परमेश् वर हमरा बहुत सजा देलथिन, मुदा ओ हमरा मृत्युक लेल नहि सौंपलनि।
19 हमरा लेल धार्मिकताक द्वार खोलब, हम ओहि मे जायब आ परमेश् वरक स्तुति करब।
20 परमेश् वरक ई फाटक, जाहि मे धर्मी लोक प्रवेश करत।
21 हम अहाँक प्रशंसा करब, किएक तँ अहाँ हमर बात सुनलहुँ आ हमर उद्धारक बनि गेलहुँ।
22 जे पाथर बनौनिहार सभ अस्वीकार कऽ देलक से कोनाक सिरक पाथर बनि गेल अछि।
23 प्रभुक ई काज अछि। हमरा सभक नजरि मे ई अद्‌भुत अछि।
24 ई ओ दिन अछि जे परमेश् वर बनौने छथि। हम सभ एहि मे आनन्दित होयब आ प्रसन्न होयब।
25 हे परमेश् वर, हम अहाँ सँ विनती करैत छी, आब बचाउ।
26 जे परमेश् वरक नाम सँ अबैत अछि, तकरा धन्य होअय।
27 परमेश् वर परमेश् वर छथि जे हमरा सभ केँ इजोत देखौलनि।
28 अहाँ हमर परमेश् वर छी, हम अहाँक स्तुति करब।

29 हे परमेश् वर कैँ धन् यवाद करू। किएक तँ ओ नीक छथि, किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।

अध्याय 119

१ अलेफ। धन्य अछि बाट मे अशुद्ध लोक, जे परमेश् वरक नियम मे चलैत अछि।
2 धन्य छथि ओ सभ जे हुनकर गवाही सभक पालन करैत छथि आ जे हुनका पूरा मोन सँ तकैत छथि।
3 ओ सभ सेहो कोनो अधर्म नहि करैत छथि, हुनकर बाट पर चलैत छथि।
4 अहाँ हमरा सभ कैँ अपन आज्ञा सभक पालन करबाक आज्ञा देलहुँ अछि।
5 जँ हमर बाट अहाँक नियमक पालन करबाक लेल निर्देशित रहैत!
6 तखन हम लाज नहि करब, जखन हम अहाँक सभ आज्ञाक आदर करब।
7 जखन हम अहाँक धार्मिक न् याय सभ कैँ सीखब तखन हम अहाँक स्तुति सोझ हृदय सँ करब।
8 हम अहाँक नियमक पालन करब।
९ बेथ। युवक कोन तरहेँ अपन बाट शुद्ध करत? अहाँक वचनक अनुसार सावधान रहू।"
10 हम अपन पूरा मोन सँ अहाँ कैँ तकलहुँ।
11 हम अहाँक वचन अपन हृदय मे नुका कऽ रखने छी जाहि सँ हम अहाँक विरुद्ध पाप नहि कऽ सकब।
12 हे परमेश् वर, अहाँ धन्य छी, हमरा अपन नियम सिखाउ।
13 हम अपन ठोर सँ अहाँक मुँहक सभ न्याय कैँ सुनौने छी।
14 हम अहाँक गवाही सभक बाट मे ओतबे आनन्दित छी जतेक सभ धन-सम्पत्ति मे।
15 हम तोहर उपदेश पर चिंतन करब आ तोहर बाट पर आदर करब।
16 हम अहाँक नियम मे प्रसन्न रहब, अहाँक वचन कैँ हम नहि बिसरब।
17 गिमेल। अपन सेवक संग भरपूर व्यवहार करू जाहि सँ हम जीबि सकब आ अहाँक वचनक पालन करी।
18 अहाँ हमर आँखि खोलू, जाहि सँ हम अहाँक व्यवस्था मे सँ आश्चर्यक बात देखि सकब।
19 हम पृथ् वी पर परदेशी छी।
20 हमर प्राण अहाँक न् याय सभक लेल जे लालसा रखैत अछि, तकरा सभ दिन टूटि जाइत अछि।
21 अहाँ घमंडी लोक सभ कैँ डाँटि देलहुँ जे शापित अछि, जे अहाँक आज्ञा सँ भटकैत अछि।
22 हमरा सँ अपमान आ तिरस्कार दूर करू। कारण, हम अहाँक गवाही कैँ पालन केलहुँ।"
23 राजकुमार सभ सेहो बैसि कऽ हमरा विरोध मे बाजि रहल छल, मुदा तोहर सेवक तोहर नियम पर चिंतन करैत छल।
24 अहाँक गवाही सेहो हमरा प्रसन्नता अछि आ हमर सलाहकार अछि।
25 दालेथ। हमर प्राण धूरा सँ चिपकल अछि, अहाँ हमरा अपन वचनक अनुसार जीवित करू।
26 हम अपन बाट-बाट सुनौने छी आ अहाँ हमर बात सुनलहुँ।
27 हमरा अपन उपदेशक बाट बुझा दिअ।
28 हमर प्राण भारीपनक कारणेँ पिघलि जाइत अछि, अहाँ हमरा अपन वचनक अनुसार बल दिअ।
29 हमरा सँ झूठ बाजबाक बाट हटा दिअ, आ कृपापूर्वक अपन व्यवस्था हमरा प्रदान करू।
30 हम सत् यक बाट चुनने छी।
31 हम अहाँक गवाही पर अडिग छी, हे प्रभु, हमरा लज्जित नहि करू।
32 हम अहाँक आज्ञाक बाट पर दौड़ब, जखन अहाँ हमर मोन कैँ पैघ करब।
33 हे। हे प्रभु, हमरा अपन नियमक बाट सिखाउ। हम एकरा अंत धरि राखब।"
34 हमरा समझ दिअ, हम अहाँक व्यवस्थाक पालन करब। हँ, हम एकरा पूरा मोन सँ पालन करब।
35 हमरा अपन आज्ञाक बाट पर चलय दियौक। किएक तँ हम ओहि मे प्रसन्न छी।
36 हमर मोन अहाँक गवाही दिस झुकाउ, लोभ दिस नहि।
37 हमर आँखि कैँ आडंबर देखबा सँ मोड़ि दिअ। आ हमरा अपन बाट मे जीवित करू।"
38 अपन सेवकक प्रति अपन वचन कैँ स्थिर करू, जे अहाँक भय मे समर्पित अछि।
39 हमर ओहि निन्दा कैँ मोड़ू, जकरा सँ हम डरैत छी, किएक तँ अहाँक निर्णय नीक अछि।
40 देखू, हम अहाँक उपदेशक लेल तरसैत छी, हमरा अपन धार्मिकता मे जीवित करू।
41 वीएयू। हे परमेश् वर, तोहर दया हमरा पर सेहो आबि जाउ, जे अहाँक वचनक अनुसार अहाँक उद्धार अछि।
42 तेँ हमरा निन्दा करयवला कैँ उत्तर देबऽ सकब, किएक तँ हम अहाँक वचन पर भरोसा करैत छी।
43 हमर मुँह सँ सत्यक वचन कैँ एकदम सँ नहि निकालू। किएक तँ हम अहाँक न् याय पर आशा रखने छी।"
44 तहिना हम अहाँक व्यवस्था कैँ अनन्त काल धरि पालन करब।
45 हम स्वतंत्र रूपेँ चलब, किएक तँ हम अहाँक उपदेशक खोज मे छी।
46 हम राजा सभक समक्ष सेहो अहाँक गवाही सभक बात कहब आ लाज नहि करब।
47 हम अहाँक आज्ञा मे आनन्दित रहब, जकरा हम प्रेम केने छी।
48 हम अपन हाथ सेहो तोहर आज्ञा पर उठबैत रहब, जकरा हम प्रेम करैत छी। हम तोहर विधान पर चिंतन करब।
४९ ज़ैन। अपन सेवक कैँ ओहि वचन कैँ मोन पाड़ू, जाहि पर अहाँ हमरा आशा देलहुँ।
50 हमर दुख मे ई हमर सान्त्वना अछि, किएक तँ अहाँक वचन हमरा जीवित कयलक।
51 घमंडी लोक सभ हमरा बहुत उपहास करैत अछि, मुदा हम अहाँक व्यवस्था सँ हटि नहि गेलहुँ।
52 हे परमेश् वर, हम अहाँक पुरान न् याय सभ कैँ मोन पाड़लहुँ। आ अपनाकैँ सान्त्वना देने छी।
53 अहाँक नियम छोड़निहार दुष्ट सभक कारणेँ हमरा पर भयावहता आबि गेल अछि।
54 हमर तीर्थक घर मे अहाँक विधान हमर गीत रहल अछि।
55 हे परमेश् वर, हम राति मे अहाँक नाम मोन पाड़लहुँ आ अहाँक नियमक पालन कयलहुँ।
56 ई हमरा लग छल, कारण हम अहाँक आज्ञाक पालन करैत छलहुँ।

57 चेठ। हे प्रभु, अहाँ हमर भाग छी, हम कहलहुँ जे हम अहाँक वचनक पालन करब।
58 हम पूरा मोन सँ अहाँक अनुग्रहक आग्रह केलहुँ, अहाँक वचनक अनुसार हमरा पर दया करू।
59 हम अपन बाट पर सोचैत छलहुँ आ अहाँक गवाही दिस अपन पएर घुमा देलहुँ।
60 हम जल्दी-जल्दी अहाँक आज्ञाक पालन करबा मे देरी नहि केलहुँ।
61 दुष्टक पट्टी हमरा लूटि लेलक, मुदा हम अहाँक नियम केँ नहि बिसरलहुँ।
62 आधा राति मे हम अहाँक धार्मिक न्यायक कारणेँ अहाँक धन्यवाद देबाक लेल उठब।
63 हम ओहि सभ लोकक संगी छी जे अहाँ सँ डरैत अछि आ जे अहाँक उपदेशक पालन करैत अछि।
64 हे परमेश् वर, पृथ् वी अहाँक दया सँ भरल अछि।
65 दसम। हे प्रभु, अहाँ अपन वचनक अनुसार अपन सेवक संग नीक व्यवहार केलहुँ।
66 हमरा सद्विचार आ ज्ञान सिखाउ, किएक तँ हम अहाँक आज्ञा पर विश् वास कएने छी।
67 हम कष्ट सँ पहिने भटकल छलहुँ, मुदा आब हम अहाँक वचनक पालन कयलहुँ।
68 अहाँ नीक छी आ नीक करैत छी। हमरा अपन नियम सिखाउ।
69 घमंडी लोक सभ हमरा पर झूठ बाजि देलक, मुदा हम अहाँक आज्ञा सभ केँ पूरा मोन सँ पालन करब।
70 हुनका सभक हृदय चिकनाई जकाँ मोटगर अछि। मुदा हम अहाँक व्यवस्था मे आनन्दित छी।
71 हमरा लेल ई नीक अछि जे हम दुखी भऽ गेलहुँ। जाहि सँ हम अहाँक नियम-नियम सीख सकब।"
72 हजारो सोना-चानी सँ अहाँक मुँहक नियम हमरा लेल नीक अछि।
73 जोड। तोहर हाथ हमरा बनौने अछि आ हमरा बनौने अछि, हमरा समझ दिअ, जाहि सँ हम अहाँक आज्ञा सभ सीख सकब।
74 जे सभ अहाँ सँ डरैत अछि, हमरा देखि प्रसन्न हेताह। किएक तँ हम अहाँक वचन पर आशा केने छी।
75 हे परमेश् वर, हम जनैत छी जे अहाँक न् याय ठीक अछि आ अहाँ विश् वास मे हमरा कष्ट देलहुँ।
76 अहाँक दयालु दया हमरा सान्त्वनाक लेल होअय, जेना अहाँक सेवक केँ कहल गेल अछि।
77 अहाँक कोमल दया हमरा पर आबि जाउ, जाहि सँ हम जीवित रहब, किएक तँ अहाँक व्यवस्था हमरा प्रसन्नता अछि।
78 घमंडी लोक लज्जित होथि। किएक तँ ओ सभ हमरा संग बेवजह विकृत व्यवहार कयलनि, मुदा हम अहाँक उपदेशक मनन करब।"
79 जे सभ अहाँ सँ डरैत अछि आ जे सभ अहाँक गवाही केँ जनैत अछि, हमरा दिस घुरय।
80 हमर मोन अहाँक नियम मे सत् य रहू। कि हमरा लाज नहि हो।
81 कैफ। हमर प्राण अहाँक उद्धारक लेल बेहोश भऽ गेल अछि, मुदा हम अहाँक वचन पर आशा रखैत छी।
82 अहाँक वचन पर हमर आँखि फीका पड़ि जाइत अछि जे अहाँ हमरा कहिया सान्त्वना देब?
83 हम धुँआ मे एकटा बोतल जकाँ बनि गेल छी। तैयो हम अहाँक नियम-नियम केँ नहि बिसरैत छी।
84 तोहर नोकरक कतेक दिन अछि? जे हमरा सताबैत अछि, तकरा पर अहाँ कहिया न् याय करब?
85 घमंडी लोक हमरा लेल गड्ढा खोदने अछि, जे अहाँक नियमक अनुसार नहि अछि।
86 अहाँक सभ आज्ञा विश् वासपूर्ण अछि। अहाँ हमर सहायता करू।
87 ओ सभ हमरा पृथ्वी पर लगभग समाप्त कऽ देने छल। मुदा हम अहाँक उपदेश नहि छोड़लहुँ।
88 अपन दयाक अनुसरण मे हमरा जीवित करू। तहिना हम अहाँक मुँहक गवाही केँ पालन करब।"
89 लंगड़ा। हे परमेश् वर, सदाक लेल अहाँक वचन स् वर्ग मे स्थिर अछि।
90 अहाँक विश् वास सभ पीढ़ी धरि अछि, अहाँ पृथ् वी केँ स् थापित कयलहुँ आ ओ टिकैत अछि।
91 ओ सभ आइयो अहाँक नियमक अनुसार चलैत अछि, किएक तँ सभ अहाँक सेवक अछि।
92 जाबत तोहर व्यवस्था हमरा रमणीय नहि होइत, तखन हम अपन दुख मे नष्ट भऽ सकितहुँ।
93 हम तोहर उपदेश सभ केँ कहियो नहि बिसरब, किएक तँ ओकरा सँ अहाँ हमरा जीवित कयलहुँ।
94 हम तोहर छी, हमरा बचाउ। किएक तँ हम अहाँक उपदेश तकलहुँ।"
95 दुष्ट सभ हमरा नष्ट करबाक प्रतीक्षा करैत अछि, मुदा हम अहाँक गवाही पर विचार करब।
96 हम सभ पूर्णताक अंत देखलहुँ, मुदा अहाँक आज्ञा बहुत व्यापक अछि।
97 मेम। हे हम अहाँक नियम सँ कतेक प्रेम करैत छी! भरि दिन हमर ध्यान अछि।
98 अहाँ अपन आज्ञा सभक द्वारा हमरा अपन शत्रु सभ सँ बेसी बुद्धिमान बना देलहुँ, कारण ओ सभ सदिखन हमरा संग रहैत अछि।
99 हमरा अपन सभ गुरु सभ सँ बेसी बुद्धि अछि, कारण अहाँक गवाही हमर ध्यान अछि।
100 हम प्राचीन लोक सँ बेसी बुझैत छी, कारण हम अहाँक आज्ञाक पालन करैत छी।
101 हम अपन पएर सभ अधलाह बाट सँ परहेज कऽ लेने छी, जाहि सँ हम अहाँक वचनक पालन कऽ सकब।
102 हम अहाँक न् याय सँ नहि हटि गेल छी, किएक तँ अहाँ हमरा सिखबैत छी।
103 अहाँक वचन हमर रुचि लेल कतेक मधुर अछि! हँ, हमर मुँह मे मधु सँ बेसी मीठ!
104 तोहर उपदेशक द्वारा हमरा बुझना जाइत अछि, तेँ हम सभ झूठ बाट सँ घृणा करैत छी।
105 एनयूएन। तोहर वचन हमर पएरक लेल दीप अछि आ हमर बाट लेल इजोत अछि।
106 हम शपथ खा लेने छी, आ ओकरा पूरा करब जे हम अहाँक धार्मिक न्यायक पालन करब।
107 हम बहुत दुखित छी, हे प्रभु, हमरा अपन वचनक अनुसार जीवित करू।

108 हे परमेश् वर, हम अहाँ सँ विनती करैत छी, हमर मुँहक स्वेच्छा सँ बलिदान कैँ स्वीकार करू आ हमरा अपन निर्णय सिखाउ।
109 हमर प्राण सदिखन हमर हाथ मे अछि, तइयो हम अहाँक व्यवस्था कैँ नहि बिसरैत छी।
110 दुष्ट सभ हमरा लेल जाल लगा देलक, मुदा हम अहाँक आज्ञा सँ भटकल नहि।
111 तोहर गवाही कैँ हम सदाक लेल धरोहर बना लेने छी, कारण ओ सभ हमर हृदयक आनन्दित करयवला अछि।
112 हम अपन हृदय कैँ अहाँक नियम कैँ सदिखन पूरा करबाक लेल झुका देने छी, अंत धरि।
113 समान। हम व्यर्थ विचार सँ घृणा करैत छी, मुदा अहाँक नियम सँ हम प्रेम करैत छी।
114 अहाँ हमर नुकायल आ हमर ढाल छी, हम अहाँक वचन पर आशा करैत छी।
115 हे दुष्कर्मी सभ, हमरा सँ हटि जाउ, किएक तँ हम अपन परमेश् वरक आज्ञाक पालन करब।
116 हमरा अपन वचनक अनुसार सहन करू, जाहि सँ हम जीवित रहब।
117 अहाँ हमरा पकड़ि लिअ, तखन हम सुरक्षित रहब।
118 अहाँ अपन नियम सँ भटकल सभ कैँ दबा देलियैक, किएक तँ ओकर छल-कपट झूठ अछि।
119 अहाँ पृथ् वीक सभ दुष्ट कैँ कचरा जकाँ दूर कऽ दैत छी, तैँ हम अहाँक गवाही सभ सँ प्रेम करैत छी।
120 अहाँक डर सँ हमर शरीर काँपि रहल अछि। आ हम अहाँक न् याय सँ डरैत छी।
१२१ ऐन। हम न्याय आ न्याय केलहुँ, हमरा अपन अत्याचारी सभक हाथ मे नहि छोड़ू।
122 अपन नोकरक लेल भलाईक लेल निश्चय राखू, घमंडी हमरा पर अत्याचार नहि करय।
123 अहाँक उद्धार आ अहाँक धार्मिकताक वचनक लेल हमर आँखि क्षीण भऽ गेल अछि।
124 अपन दयाक अनुसार अपन सेवक संग व्यवहार करू आ हमरा अपन नियम सिखाउ।
125 हम तोहर सेवक छी। हमरा समझ दिअ, जाहि सँ हम अहाँक गवाही कैँ जानि सकब।"
126 हे प्रभु, अहाँक काज करबाक समय आबि गेल अछि, किएक तँ ओ सभ अहाँक व्यवस्था कैँ अमान्य कऽ देलक।
127 तैँ हम सोना सँ बेसी अहाँक आज्ञा सभ सँ प्रेम करैत छी। हँ, महीन सोनाक ऊपर।
128 तैँ हम अहाँक सभ बातक सभ आज्ञा कैँ सही मानैत छी। आ हम हर झूठ बाट स घृणा करैत छी।
129 पीई। अहाँक गवाही अद्भुत अछि, तैँ हमर प्राण ओकरा सभ कैँ पालन करैत अछि।
130 तोहर वचनक प्रवेश इजोत दैत अछि। ई सरल लोक के समझ दैत अछि।
131 हम मुँह खोलि कऽ हांफैत छलहुँ, किएक तँ हम अहाँक आज्ञा सभक लेल तरसैत छलहुँ।
132 अहाँ हमरा दिस देखू आ हमरा पर दया करू, जेना अहाँ अपन नाम सँ प्रेम करयवला सभक प्रति करैत छी।
133 हमर डेग कैँ अपन वचन मे व्यवस्थित करू, आ हमरा पर कोनो अधर्मक प्रभुत्व नहि हो।
134 हमरा मनुष् यक अत्याचार सँ बचाउ, तेना हम अहाँक उपदेशक पालन करब।
135 अपन नोकर पर अपन मुँह चमकाउ। आ हमरा अपन नियम सिखाउ।"
136 हमर आँखि सँ पानिक नदी बहैत अछि, कारण ओ सभ अहाँक नियमक पालन नहि करैत अछि।
137 त्जड्डी। हे परमेश् वर, अहाँ धर्मी छी, आ अहाँक न् याय सोझ अछि।
138 अहाँक जे गवाही अहाँ आज्ञा देने छी से धार्मिक आ बहुत विश् वासपूर्ण अछि।
139 हमर उत्साह हमरा भस्म कऽ देलक, कारण हमर शत्रु अहाँक बात बिसरि गेल अछि।
140 तोहर वचन बहुत शुद्ध अछि, तैँ तोहर सेवक ओकरा प्रेम करैत अछि।
141 हम छोट छी आ तिरस्कृत छी, तइयो हम अहाँक उपदेश कैँ नहि बिसरब।
142 तोहर धार्मिकता अनन्त धार्मिकता अछि आ तोहर व्यवस्था सत्य अछि।
143 हमरा पर विपत्ति आ क्लेश आबि गेल अछि, तइयो अहाँक आज्ञा हमरा प्रसन्नता अछि।
144 अहाँक गवाही सभक धार्मिकता अनन्त अछि।
145 कोफ। हम मोन सँ कानलहुँ; हे प्रभु, हमर बात सुनू, हम अहाँक नियमक पालन करब।
146 हम अहाँकैँ पुकारलहुँ। हमरा बचाउ, हम अहाँक गवाही कैँ पालन करब।"
147 हम भोरका भोर रोकि कऽ चिचिया उठलहुँ, अहाँक वचन पर आशा केलहुँ।
148 हमर आँखि रातिक प्रहर कैँ रोकैत अछि, जाहि सँ हम अहाँक वचन पर मनन करी।
149 अपन दयाक अनुसार हमर आवाज सुनू, हे प्रभु, हमरा अपन निर्णयक अनुसार जीवित करू।
150 ओ सभ दुष्टताक पाछाँ चलयवला सभ लग आबि जाइत अछि, ओ सभ अहाँक नियम सँ दूर अछि।
151 हे प्रभु, अहाँ लग मे छी। आ तोहर सभ आज्ञा सत्य अछि।
152 अहाँक गवाही सभक विषय मे हम पहिने सँ जनैत छी जे अहाँ ओकरा सभ कैँ अनन्त काल धरि स्थापित कयलहुँ।
153 रेश। हमर दुख पर विचार करू आ हमरा बचाउ, किएक तँ हम अहाँक व्यवस्था नहि बिसरैत छी।
154 हमर बातक गुहार लगाउ आ हमरा बचाउ, हमरा अपन वचनक अनुसार जीवित करू।
155 दुष्ट सभ सँ उद्धार दूर अछि, किएक तँ ओ सभ अहाँक नियमक खोज नहि करैत अछि।
156 हे प्रभु, तोहर कोमल दया पैघ अछि, हमरा अपन निर्णयक अनुसार जीवित करू।
157 हमर सतौनिहार आ शत्रु बहुतो अछि। तैयो हम अहाँक गवाही सँ नहि हटैत छी।
158 हम अपराधी सभ कैँ देखलहुँ आ दुखी भऽ गेलहुँ। किएक तँ ओ सभ अहाँक वचनक पालन नहि कयलनि।
159 विचार करू जे हम अहाँक उपदेश सभ सँ कोना प्रेम करैत छी, हे प्रभु, हमरा अपन दयाक अनुसार जीवित करू।
160 तोहर वचन शुरूए सँ सत्य अछि, आ तोहर एक-एकटा धार्मिक न् याय अनन्त काल धरि टिकैत अछि।

161 स्किन। राजकुमार सभ हमरा बेवजह सताबैत अछि, मुदा हमर मोन अहाँक वचन पर भयभीत अछि।
162 हम अहाँक वचन पर आनन्दित छी, जेना कि केओ बहुत लूट पाबि लैत अछि।
163 हम झूठ सँ घृणा करैत छी आ घृणा करैत छी, मुदा अहाँक नियम सँ हम प्रेम करैत छी।
164 हम अहाँक धार्मिक न्यायक कारणेँ दिन मे सात बेर अहाँक स्तुति करैत छी।
165 जे अहाँक व्यवस्था सँ प्रेम करैत अछि, हुनका सभ केँ बहुत शान्ति छनि, आ हुनका सभ केँ किछुओ ठेस नहि पहुँचाओत।
166 प्रभु, हम अहाँक उद्धारक आशा रखने छी आ अहाँक आज्ञाक पालन केलहुँ।
167 हमर प्राण अहाँक गवाही केँ पालन केलक। आ हम हुनका सभसँ बेसी प्रेम करैत छी।
168 हम अहाँक उपदेश आ गवाही सभक पालन केलहुँ, कारण हमर सभ बाट अहाँक सोझाँ अछि।
169 ताऊ। हे परमेश् वर, हमर पुकार अहाँक सोझाँ लग आबि जाउ।
170 हमर विनती अहाँक सोझाँ आबि जाय, अहाँक वचनक अनुसार हमरा बचाउ।
171 हमर ठोर प्रशंसा करत, जखन अहाँ हमरा अपन नियम सिखा देब।
172 हमर जीह अहाँक वचन पर बाजत, कारण अहाँक सभ आज्ञा धार्मिकता अछि।
173 तोहर हाथ हमरा सहायता करय। किएक तँ हम अहाँक उपदेश चुनने छी।"
174 हे प्रभु, हम अहाँक उद्धारक लेल तरसैत छी। आ तोहर नियम हमरा प्रसन्नता अछि।
175 हमर प्राण जीवित रहय, ओ अहाँक स्तुति करत। आ तोहर निर्णय हमरा सहायक होअय।"
176 हम हेरायल बरद जकाँ भटकल छी। अपन नोकर के खोजू। किएक तँ हम अहाँक आज्ञा नहि बिसरैत छी।

अध्याय 120 के अनुसार

1 (एकटा गीत।) हम अपन विपत्ति मे परमेश् वर सँ पुकारलहुँ आ ओ हमर बात सुनलनि।
2 हे प्रभु, हमर प्राण केँ झूठ बाजऽ वला ठोर सँ आ ठक जीह सँ बचाउ।
3 अहाँ केँ की देल जायत? हे झूठ जीभ, तोरा की कयल जायत?
4 पराक्रमी सभक तीक्ष्ण तीर, जुनिपरक कोयला।
5 धिक्कार अछि जे हम मेसेक मे प्रवास करैत छी आ केदारक डेरा मे रहैत छी!
6 हमर प्राण बहुत दिन सँ ओहि लोकक संग रहैत अछि जे शान्ति सँ घृणा करैत अछि।
7 हम शान्तिक लेल छी, मुदा जखन हम बजैत छी तँ ओ सभ युद्धक लेल अछि।

अध्याय 121 के अनुसार

1 (एकटा गीत।) हम अपन नजरि पहाड़ी दिस उठा लेब, जतय सँ हमर सहायता अबैत अछि।
2 हमर सहायता परमेश् वरक दिस सँ अबैत अछि जे स् वर्ग आ पृथ् वी केँ बनौलनि।
3 ओ अहाँक पएर हिलब नहि देथिन, जे अहाँ केँ राखत, तकरा नींद नहि होयत।
4 देखू, जे इस्राएलक रक्षा करैत अछि, से नहि सुतत आ ने सुतत।
5 परमेश् वर तोहर पालक छथि, परमेश् वर तोहर दहिना हाथ पर छाहरि छथि।
6 दिन मे सूर्य अहाँ केँ नहि मारत आ राति मे चान।
7 परमेश् वर तोरा सभ तरहक अधलाह सँ बचाओत, ओ तोहर प्राण केँ बचाओत।
8 परमेश् वर अहाँक बाहर निकलब आ अहाँक आगमन केँ एखन धरि आ अनन्त काल धरि सुरक्षित रखताह।

अध्याय 122 के अनुसार

1 (दाऊदक एकटा गीत।) जखन ओ सभ हमरा कहलथिन, "हमरा सभ परमेश् वरक घर मे जाउ।"
2 हे यरूशलेम, हमरा सभक पएर तोहर फाटकक भीतर ठाढ़ रहत।
3 यरूशलेम एकटा एहन नगरक रूप मे बनल अछि जे एक संग संकुचित अछि।
4 जाहि ठाम परमेश् वरक गोत्र सभ इस्राएलक गवाही मे परमेश् वरक नामक धन् यवाद देबाक लेल चढ़ैत अछि।
5 किएक तँ न्यायक सिंहासन सभ राखल अछि, जे दाऊदक घरानाक सिंहासन अछि।
6 यरूशलेमक शान्तिक लेल प्रार्थना करू।
7 तोहर देबाल मे शान्ति हो आ तोहर महल मे समृद्धि हो।
8 हमर भाइ सभ आ संगी सभक लेल हम आब कहब जे, "अहाँक भीतर शान्ति हो।"
9 हम अपन परमेश् वर परमेश् वरक घरक कारणेँ अहाँक भलाईक खोज करब।

अध्याय 123

1 (एकटा गीत।) हे आकाश मे रहनिहार, हम अहाँक नजरि उठबैत छी।
2 देखू, जहिना नोकर सभक नजरि अपन मालिकक हाथ दिस तकैत अछि आ जेना कन्याक आँखि अपन मालकिनक हाथ दिस तकैत अछि। तेँ हमरा सभक नजरि हमरा सभक परमेश् वर परमेश् वर पर ताबत धरि प्रतीक्षा करैत अछि जाबत धरि ओ हमरा सभ पर दया नहि करथि।
3 हे परमेश् वर, हमरा सभ पर दया करू, हमरा सभ पर दया करू।
4 हमरा सभक प्राण आराम सँ रहनिहार सभक तिरस्कार आ घमंडी सभक तिरस्कार सँ बहुत भरल अछि।

अध्याय 124

1 (दाऊदक एकटा गीत।) जँ हमरा सभक पक्ष मे परमेश् वर नहि रहितथि तँ आब इस्राएल कहथिन।
2 जँ हमरा सभक पक्ष मे परमेश् वर नहि रहितथि।
3 तखन ओ सभ हमरा सभ केँ जल्दी-जल्दी निगल गेल छल, जखन हुनका सभक क्रोध हमरा सभ पर प्रज्वलित भ' गेल छल।

4 तखन पानि हमरा सभ पर भारी पड़ि गेल छल, धार हमरा सभक प्राण पर चलि गेल छल।
5 तखन घमंडी पानि हमरा सभक प्राण पर चलि गेल छल।
6 परमेश् वरक धन्य होउ, जे हमरा सभ केँ हुनका सभक दाँतक शिकार नहि बनौलनि।
7 चिड़ै-चुनमुनीक जाल सँ चिड़ै जकाँ बचि गेल अछि, जाल टूटि गेल अछि आ हम सभ बचि गेल छी।
8 हमरा सभक सहायता परमेश् वरक नाम सँ अछि, जे स् वर्ग आ पृथ् वी केँ बनौलनि।

अध्याय 125 के अनुसार

1 (एकटा गीत।) जे सभ परमेश् वर पर भरोसा करैत अछि, ओ सियोन पहाड़ जकाँ होयत, जे दूर नहि भऽ सकैत अछि, बल् कि अनन्त काल धरि रहत।
2 जहिना यरूशलेमक चारू कात पहाड़ सभ अछि, तहिना परमेश् वर अपन प्रजा सभक चारूकात आब सँ अनन् त काल धरि अछि।
3 किएक तँ दुष्टक लाठी धर्मी लोकक भाग्य पर नहि रहत। कहीं धर्मी लोकनि अधर्मक लेल हाथ नहि बढ़ाबथि।
4 हे परमेश् वर, जे सभ नीक छथि आ जे सभ मोन मे सोझ छथि, हुनका सभक लेल नीक करू।
5 जे सभ अपन कुटिल बाट पर चलि जायत, तकरा परमेश् वर हुनका सभ केँ अधर्मक काज करयवला सभक संग आगू बढ़बैत छथि, मुदा इस्राएल पर शान्ति रहत।

अध्याय 126

1 (एकटा गीत।) जखन परमेश् वर सियोनक बंदी केँ फेर सँ घुमा देलनि, तखन हम सभ सपना देखनिहार सभ जकाँ छलहुँ।
2 तखन हमरा सभक मुँह हँसी आ जीह गान सँ भरि गेल।
3 परमेश् वर हमरा सभक लेल बहुत पैघ काज कयलनि। जाहि सँ हम सभ प्रसन्न छी।
4 हे परमेश् वर, हमरा सभक बंदी केँ दक्षिण दिसक धार जकाँ फेर घुमा दिअ।
5 जे नोर बोनि कऽ बोनि रहल अछि, ओ सभ हर्ष मे फसल काटि लेत।
6 जे केओ अनमोल बीया लऽ कऽ जा कऽ कानैत अछि, से निस्संदेह हर्षित भऽ कऽ अपन गुच्छा लऽ कऽ फेर आबि जायत।

अध्याय 127

1 (सुलेमानक लेल एकटा गीत।) जाबत धरि परमेश् वर घर नहि बनौताह, ताबत तक ओकरा बनबैत लोक सभ व्यर्थ मेहनति करैत छथि।
2 अहाँ सभक लेल भोरे उठब, देर धरि उठब आ दुखक रोटी खाएब व्यर्थ अछि, किएक तँ ओ अपन प्रियजन केँ एहि तरहेँ नींद दैत अछि।
3 देखू, संतान परमेश् वरक धरोहर अछि, आ गर्भक फल हुनकर इनाम अछि।
4 जेना पराक्रमी आदमीक हाथ मे बाण होइत छैक। तहिना युवाक बच्चा सेहो।
5 धन्य अछि जे मनुष् य ओकरा सभ सँ भरल अछि, ओ सभ लाज नहि करत, बल् कि ओ सभ फाटक मे शत्रु सभक संग गप्प करत।

अध्याय 128

1 (एकटा गीत।) धन्य अछि जे सभ परमेश् वर सँ डरैत अछि। जे अपन बाट पर चलैत अछि।
2 अहाँ अपन हाथक परिश्रम खाएब।
3 अहाँक पत्नी अहाँक घरक कात मे फलदार बेल जकाँ होयत, अहाँक बच्चा सभ अहाँक टेबुलक चारू कात जैतूनक पौधा जकाँ होयत।
4 देखू, जे मनुष् यक परमेश् वर सँ डरैत अछि, तकरा एहि तरहेँ धन्य होयत।
5 परमेश् वर अहाँ केँ सियोन सँ आशीर्वाद देथिन, आ अहाँ यरूशलेमक भलाई सभ जीवन भरि देखब।
6 हँ, अहाँ अपन सन् तान सभक सन् तान सभ केँ देखब आ इस्राएल पर शान्ति।

अध्याय 129

1 (एकटा गीत।) हमरा जवानी सँ बहुत बेर ओ सभ हमरा कष्ट दैत रहलाह, इस्राएल आब कहथि।
2 ओ सभ हमरा जवानी सँ बहुत बेर कष्ट दैत रहलाह, तैयो हमरा पर विजय नहि पाबि सकलाह।
3 जोतनिहार सभ हमर पीठ पर जोतैत छल, अपन खाधि नमहर बनबैत छल।
4 परमेश् वर धर्मी छथि, ओ दुष् ट लोकक डोरी केँ काटि देलनि।
5 जे सभ सियोन सँ घृणा करैत अछि, से सभ भ्रमित भऽ कऽ पाछू हटि जाय।
6 ओ सभ घरक चोटी पर घास जकाँ होअय जे बढ़ला सँ पहिने मुरझा जाइत अछि।
7 जाहि सँ घास काटनिहार हाथ नहि भरैत अछि। आ ने जे बान्हैत अछि से अपन छाती केँ गुच्छा करैत अछि।
8 आ ओहि ठाम सँ गुजरय बला सभ नहि कहैत अछि जे, 'परमेश् वरक आशीर्वाद अहाँ सभ पर हो।' हम सभ अहाँ सभ केँ परमेश् वरक नाम सँ आशीर्वाद दैत छी।

अध्याय 130

1 (एकटा डिग्री के गीत।) हे प्रभु, हम गहींर मे सँ अहाँ केँ पुकारलहुँ।
2 प्रभु, हमर आवाज सुनू, अहाँक कान हमर विनतीक आवाज पर ध्यान राखय।
3 हे प्रभु, जँ अहाँ अधर्मक निशानी लगाबी तँ के ठाढ़ होयत?
4 मुदा अहाँक संग क्षमा अछि जाहि सँ अहाँ डरि जायब।
5 हम प्रभुक प्रतीक्षा करैत छी, हमर प्राण प्रतीक्षा करैत अछि, आ हुनकर वचन पर आशा करैत छी।
6 हमर प्राण भोर मे जागल लोक सँ बेसी प्रभुक प्रतीक्षा करैत अछि।
7 इस्राएल परमेश् वर पर आशा राखू, किएक तँ परमेश् वरक दया अछि आ हुनका संग प्रचुर मोक्ष भेटैत अछि।
8 ओ इस्राएल केँ अपन सभ पाप सँ मुक्त करत।

अध्याय 131 के अनुसार

1 (दाऊदक पदक गीत।) प्रभु, हमर हृदय घमंडी नहि अछि आ ने हमर आँखि ऊँच अछि, ने हम पैघ काज मे आ ने हमरा लेल बहुत ऊँच काज मे अपना कैँ व्यायाम करैत छी।
2 हम अपन माय सँ दुध छुड़ाओल बच्चा जकाँ व्यवहार आ शान्त कऽ लेलहुँ।
3 इस्राएल आब सँ अनन्त काल धरि परमेश् वर पर आशा करथि।

अध्याय 132 के अनुसार

१ डिग्री के एक गीत। प्रभु, दाऊद आ ओकर सभ दुःखक स्मरण करू।
2 ओ कोना परमेश् वरक शपथ लेलनि आ याकूबक पराक्रमी परमेश् वरक प्रति प्रण कयलनि।
3 हम अपन घरक तम्बू मे नहि जायब आ ने अपन ओछाओन पर चढ़ब।
4 हम अपन आँखि कैँ नींद नहि देब आ ने पलक कैँ नींद देब।
5 जाबत धरि हम परमेश् वरक लेल एकटा स् थान नहि पाबि लेब, जे याकूबक पराक्रमी परमेश् वरक लेल रहब।
6 देखू, हम सभ एफ्राता मे सुनलहुँ।
7 हम सभ हुनकर तम्बू मे जायब आ हुनकर पैरक अथाह पर आराधना करब।
8 हे प्रभु, उठू, अपन विश्राम मे। अहाँ, आ अहाँक सामर्थ्यक सन्दूक।
9 तोहर पुरोहित सभ धार्मिकताक वस्त्र पहिरि कऽ रहथि। आ तोहर संत सभ हर्ष सँ चिचियाबथि।
10 अपन सेवक दाऊदक कारणेँ अपन अभिषिक्तक मुँह नहि घुमाउ।
11 परमेश् वर दाऊद कैँ सत् य शपथ कयलनि। ओ एहि सँ नहि घुरत। तोहर शरीरक फल सँ हम तोहर सिंहासन पर बैसा देब।
12 जँ अहाँक सन्तान सभ हमर वाचा आ हमर गवाही कैँ पालन करत जे हम ओकरा सभ कैँ सिखबैत छी, तँ ओकर बच्चा सभ सेहो अहाँक सिंहासन पर अनन्त काल धरि बैसत।
13 किएक तँ परमेश् वर सियोन कैँ चुनने छथि। ओकरा अपन आवासक लेल चाहने अछि।
14 ई हमर अनन्त काल धरि विश्राम अछि, हम एतहि रहब। किएक तँ हम एकर इच्छा केने छी।
15 हम ओकर भोजनक भरण-पोषण करब, ओकर गरीब कैँ रोटी सँ तृप्त करब।
16 हम ओकर पुरोहित सभ कैँ सेहो उद्धारक कपड़ा पहिरा देब, आ ओकर पवित्र लोक सभ हर्ष मे जोर-जोर सँ चिचियाओत।
17 हम ओतहि दाऊदक सींग कैँ अंकुरित करब, हम अपन अभिषिक्त सभक लेल दीप लगा देलहुँ।
18 हम ओकर शत्रु सभ कैँ लाजक वस्त्र पहिरा देब, मुदा ओकर मुकुट अपना पर पनपत।

अध्याय 133

1 (दाऊदक एकटा गीत।) देखू, भाइ सभक एक संग रहब कतेक नीक आ कतेक सुखद अछि!
2 ई माथ पर जे अनमोल मरहम दाढ़ी पर दौड़ैत छल, हारूनक दाढ़ी जकाँ अछि।
3 हरमोनक ओस जकाँ आ सियोनक पहाड़ पर उतरैत ओस जकाँ, किएक तँ परमेश् वर ओतहि आशीष देबाक आज्ञा देने छलाह, जे अनन्त काल धरि जीवन अछि।

अध्याय 134

1 (एकटा गीत।) देखू, अहाँ सभ परमेश् वरक सेवक, जे राति मे परमेश् वरक घर मे ठाढ़ छी, अहाँ सभ परमेश् वरक आशीष करू।
2 पवित्र स्थान मे हाथ उठा कऽ परमेश् वरक आशीष करू।
3 जे परमेश् वर स् वर्ग आ पृथ् वी कैँ बनौलनि, ओ अहाँ कैँ सियोन सँ आशीर्वाद देथिन।

अध्याय 135

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। अहाँ सभ परमेश् वरक नामक स्तुति करू। हे परमेश् वरक सेवक सभ, हुनकर स्तुति करू।
2 अहाँ सभ जे सभ परमेश् वरक घर मे ठाढ़ छी, हमरा सभक परमेश् वरक घरक आँगन मे।
3 प्रभुक स्तुति करू। कारण, परमेश् वर नीक छथि, हुनकर नामक स्तुति गाउ। किएक तँ ई सुखद अछि।
4 किएक तँ परमेश् वर याकूब कैँ अपना लेल चुनने छथि आ इस्राएल कैँ अपन विशिष्ट धनक लेल चुनने छथि।
5 हम जनैत छी जे परमेश् वर महान छथि आ हमरा सभक प्रभु सभ देवता सँ ऊपर छथि।
6 परमेश् वर जे किछु चाहैत छलाह, से स् वर्ग मे, पृथ् वी मे, समुद्र मे आ सभ गहींर स्थान मे कयलनि।
7 ओ पृथ्वीक छोर सँ वाष्प कैँ चढ़बैत छथि। बरखाक लेल बिजली बनबैत अछि। ओ अपन खजाना मे सँ हवा निकालैत अछि।
8 ओ मिस्र देशक जेठ बच्चा सभ कैँ मारि देलक, जे मनुष् यक आ पशु-पक्ष मे छल।
9 हे मिस्र, फारो आ ओकर सभ सेवक पर ओ अहाँ सभक बीच मे चिन्ह आ चमत्कार पठौलनि।
10 ओ पैघ-पैघ जाति सभ कैँ मारि देलक आ पराक्रमी राजा सभ कैँ मारि देलक।
11 अमोरीक राजा सीहोन, बाशानक राजा ओग आ कनानक समस्त राज्य।
12 ओ अपन देश इस्राएल कैँ धरोहरक रूप मे दऽ देलथिन।
13 हे परमेश् वर, अहाँक नाम अनन्त काल धरि टिकैत अछि। आ हे परमेश् वर, सभ पीढ़ी-दर-पीढ़ी अहाँक स्मारक।
14 किएक तँ परमेश् वर अपन लोक सभक न् याय करताह आ ओ अपन सेवक सभक विषय मे अपना कैँ पश्चाताप करताह।
15 गैर-यहूदी सभक मूर्ति चानी आ सोना अछि, जे मनुष् यक हाथक काज अछि।
16 हुनका सभक मुँह छनि, मुदा ओ सभ नहि बजैत छथि। आँखि अछि, मुदा नहि देखैत अछि।
17 हुनका सभक कान छनि, मुदा ओ सभ नहि सुनैत छथि। आ ने मुँह मे कोनो साँस।
18 जे सभ ओकरा सभ कैँ बनबैत अछि, से सभ ओकरा सभक समान अछि।

19 हे इस्राएलक वंशज, परमेश् वरक आशीष करू।
20 हे लेवीक वंशज, प्रभुक आशीष करू।
21 यरूशलेम मे रहनिहार सियोन सँ निकलि कऽ परमेश् वरक
धन्य हो। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 136

1 हे परमेश् वर केँ धन् यवाद करू। किएक तँ ओ नीक छथि,
किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।
2 हे देवता सभक परमेश् वर केँ धन् यवाद करू, किएक तँ
हुनकर दया अनन् त काल धरि रहत।
3 प्रभु सभक प्रभु केँ धन्यवाद दियौक, किएक तँ हुनकर दया
अनन्तकाल धरि रहैत छनि।
4 जे असगरे बड़का चमत्कार करैत अछि, ओकरा लेल, किएक
तँ ओकर दया अनन्त काल धरि रहैत छैक।
5 जे बुद्धि सँ आकाश बनौने छथि, हुनका लेल, किएक तँ हुनकर
दया अनन्त काल धरि रहत।
6 पृथ् वी केँ पानि सँ ऊपर पसारि देनिहार केँ, किएक तँ ओकर
दया अनन्त काल धरि रहत।
7 बड़का-बड़का इजोत बनौनिहार केँ।
8 सूर्य दिन मे राज करबाक लेल, किएक तँ ओकर दया अनन्त
काल धरि रहैत छैक।
9 चान आ तारा राति मे राज करबाक लेल, किएक तँ ओकर दया
अनन्त काल धरि रहैत छैक।
10 जे मिस्त्री केँ अपन जेठ बच्चा मे मारि देलकनि, ओकरा लेल,
किएक तँ ओकर दया अनन्त काल धरि रहत।
11 ओ इस्राएल केँ हुनका सभक बीच सँ बाहर निकालि देलनि,
किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहत।
12 बलशाली हाथ आ पसरल बाँहि सँ, किएक तँ ओकर दया
अनन्त काल धरि रहैत छैक।
13 जे लाल सागर केँ भाग मे बाँटि देलनि, हुनका लेल, किएक तँ
हुनकर दया अनन्त काल धरि रहत।
14 ओ इस्राएल केँ ओहि बीच सँ गुजरय लेलनि, किएक तँ ओकर
दया अनन्त काल धरि रहत।
15 मुदा फिरौन आ ओकर सेना केँ लाल समुद्र मे उखाड़ि
देलक।
16 जे अपन लोक केँ निर्जन मे लऽ गेल छल, ओकरा लेल,
किएक तँ ओकर दया अनन्त काल धरि रहत।
17 जे महान राजा सभ केँ मारि देलकनि, हुनका लेल, किएक तँ
हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।
18 ओ प्रसिद्ध राजा सभ केँ मारि देलनि, किएक तँ हुनकर दया
अनन्त काल धरि रहैत छनि।
19 अमोरी सभक राजा सीहोन, किएक तँ हुनकर दया अनन्त
काल धरि रहैत छनि।
20 बाशानक राजा ओग, किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि
रहैत छनि।
21 ओ सभ अपन जमीन धरोहरक रूप मे दऽ देलथिन, किएक
तँ हुनकर दया अनन्तकाल धरि रहत।
22 ओकर दास इस्राएलक लेल धरोहर अछि, किएक तँ ओकर
दया अनन्त काल धरि रहत।
23 ओ हमरा सभक नीचता मे हमरा सभक स्मरण कयलनि,
किएक तँ हुनकर दया अनन्त काल धरि रहैत छनि।
24 ओ हमरा सभ केँ शत्रु सभ सँ मुक्त कऽ लेलक, किएक तँ
हुनकर दया अनन्त काल धरि रहत।
25 ओ सभ प्राणी केँ भोजन दैत छथिन, किएक तँ हुनकर दया
अनन्त काल धरि रहैत छनि।
26 हे स् वर्गक परमेश् वर केँ धन् यवाद करू, किएक तँ हुनकर
दया अनन्त काल धरि रहत।

अध्याय 137

1 बाबुलक नदी सभक कात मे हम सभ बैसल रही, हँ, सिय्योनक
स्मरण कयला पर कानलहुँ।
2 हम सभ ओकर बीच मे विलो गाछ पर अपन वीणा टाँगि
देलियैक।
3 ओतऽ जे हमरा सभ केँ बंदी बना कऽ लऽ गेल छल, से सभ
हमरा सभ सँ गीत माँगैत छल। हमरा सभ केँ बर्बाद करऽ वला
सभ हमरा सभ सँ हँसी-मजाक माँगैत छल जे, "हमरा सभ केँ
सियोनक गीत मे सँ एकटा गीत गाउ।"
4 हम सभ परदेश मे कोना परमेश् वरक गीत गाबय?
5 हे यरूशलेम, जँ हम तोरा बिसरि जाइ तँ हमर दहिना हाथ
ओकर धूर्तता बिसरि जाउ।
6 जँ हम अहाँक स्मरण नहि करब तँ हमर जीह मुँहक छत पर
चिपकय। जँ हम अपन मुख्य आनन्द सँ यरूशलेम नहि पसिन
करैत छी।
7 हे परमेश् वर, यरूशलेमक दिन मे एदोमक सन् तान सभ केँ
मोन पाड़ू। ओ कहलथिन, "एकरा उठाउ, ओकरा नींव धरि
उठाउ।"
8 हे बाबुलक बेटी, जे नष्ट होबय बला छी। ओ सुखी हेताह जे
अहाँ केँ ओहिना पुरस्कृत करत जेना अहाँ हमरा सभक सेवा
केलहुँ।
9 जे तोहर छोट-छोट बच्चा सभ केँ पाथर पर लऽ कऽ ठोकि दैत
अछि, से धन्य होयत।

अध्याय 138

1 (दाऊदक भजन।) हम अहाँक पूरा मोन सँ स्तुति करब।
2 हम अहाँक पवित्र मन् दिर दिस आराधना करब आ अहाँक प्रेम
आ सत्यक लेल अहाँक नामक स्तुति करब।
3 जाहि दिन हम चिचिया उठलहुँ तहिया अहाँ हमरा उत्तर
देलियैक आ हमर प्राण मे बल दऽ कऽ बल देलहुँ।
4 हे परमेश् वर, पृथ् वीक सभ राजा अहाँक मुँहक बात सुनि कऽ
अहाँक स्तुति करताह।
5 हँ, ओ सभ परमेश् वरक बाट मे गाबय, किएक तँ परमेश् वरक
महिमा बहुत पैघ अछि।
6 प्रभु भले ऊँच होथि, मुदा नीच लोकक आदर करैत छथि, मुदा
घमंडी केँ ओ दूर सँ जनैत छथि।
7 जँ हम विपत्तिक बीच चलब तँ अहाँ हमरा पुनर्जीवित करब।
8 परमेश् वर हमरा जे किछु अछि तकरा सिद्ध करताह।

अध्याय 139

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे प्रभु, अहाँ हमरा
खोजि कऽ हमरा चिन्हलहुँ।

2 अहाँ हमर नीचाँ आ हमर विद्रोह केँ जनैत छी, हमर विचार केँ दूर सँ बुझैत छी।
3 अहाँ हमर बाट आ हमर लेटब केँ घेरने छी आ हमर सभ बाट सँ परिचित छी।
4 हमर भाषा मे एकोटा शब्द नहि अछि, मुदा देखू, हे परमेश् वर, अहाँ एकरा एकदम सँ जनैत छी।
5 अहाँ हमरा पाछू-पाछू घेरने छी आ हमरा पर हाथ राखि देलहुँ।
6 एहन ज्ञान हमरा लेल बहुत अद्‌भुत अछि। ई ऊँच अछि, हम एकरा प्राप्त नहि क' सकैत छी।
7 तोहर आत् मा सँ हम कतऽ जायब? आकि हम अहाँक सोझाँ सँ कतय भागब?
8 जँ हम स् वर्ग मे चढ़ब तँ अहाँ ओतहि छी।
9 जँ हम भोरक पाँखि लऽ कऽ समुद्रक अन्त मे रहब।
10 ओतहि अहाँक हाथ हमरा लऽ जायत आ अहाँक दहिना हाथ हमरा पकड़ि लेत।
11 जँ हम कहब जे अन्हार हमरा झाँपि देत। हमरा चारू कात राति सेहो इजोत होयत।
12 हँ, अन्हार अहाँ सँ नुकायल नहि अछि। मुदा राति दिन जकाँ चमकैत अछि, अन्हार आ इजोत दुनू अहाँक लेल एक समान अछि।
13 अहाँ हमर बागडोर सम्हारने छी, हमरा मायक कोखि मे झाँपि देलहुँ।
14 हम अहाँक प्रशंसा करब। हम भयावह आ आश्चर्यक रूप मे बनल छी। आ जे हमर प्राण नीक जकाँ जनैत अछि।
15 हमर सम्पत्ति अहाँ सँ नुकायल नहि छल, जखन हम गुप्त रूप सँ बनल रही आ पृथ् वीक निचला भाग मे कौतुहल सँ काज कयल गेल रही।
16 तोहर आँखि हमर सम्पत्ति देखि रहल छल, मुदा अपूर्ण छल। तोहर किताब मे हमर सभ अंग लिखल अछि, जे अखन धरि ओहि मे सँ कोनो अंग नहि छल।
17 हे परमेश् वर, अहाँक विचार हमरा लेल कतेक कीमती अछि! कतेक पैघ अछि हुनका सभक योग!
18 जँ हम ओकरा सभ केँ गिनब तँ बालु सँ बेसी ओकर संख्या अछि।
19 हे परमेश् वर, अहाँ दुष् ट लोक केँ अवश्य मारि देब।
20 किएक तँ ओ सभ अहाँक विरुद्ध दुष् ट बजैत अछि आ अहाँक शत्रु सभ अहाँक नाम व्यर्थ लऽ लैत अछि।
21 हे प्रभु, की हम ओकरा सभ सँ घृणा नहि करैत छी जे अहाँ सँ घृणा करैत अछि? की हम अहाँक विरुद्ध उठयवला सभक संग दुखी नहि छी?
22 हम ओकरा सभ सँ पूर्ण घृणा करैत छी, हम ओकरा सभ केँ अपन शत्रु मानैत छी।
23 हे परमेश् वर, हमरा जाँच करू आ हमर मोन केँ जानि लिअ।
24 आ देखू जे हमरा मे कोनो दुष् ट बाट अछि आ हमरा अनन्त बाट पर लऽ जाउ।

अध्याय 140

1 (प्रमुख संगीतकार केँ, दाऊदक भजन।) हे परमेश् वर, हमरा दुष् ट लोक सँ बचाउ।
2 जे सभ अपन हृदय मे अधलाहक कल्पना करैत छथि। निरंतर युद्धक लेल एकत्रित रहैत छथि।
3 ओ सभ साँप जकाँ जीह तेज कएने अछि। एडर्स के जहर ठोर के नीचा छै। सेलाह।
4 हे परमेश् वर, हमरा दुष् ट लोकक हाथ सँ बचाउ। हमरा हिंसक आदमीसँ बचाउ; जे हमर जाइत-जान के उखाड़ि फेकबाक उद्देश्य रखने छथि।
5 घमंडी लोक हमरा लेल जाल आ डोरी नुका देने अछि। रस्ताक कात मे जाल पसारि देने छथि। हमरा लेल जिन सेट कएने छथि। सेलाह।
6 हम परमेश् वर केँ कहलियनि, 'अहाँ हमर परमेश् वर छी।
7 हे परमेश् वर प्रभु, हमर उद्धारक सामर्थ् य, अहाँ युद्धक दिन हमर माथ झाँपि देलहुँ।
8 हे प्रभु, दुष्टक इच्छा नहि दियौक। कहीं ओ सभ अपना केँ ऊपर नहि उठाबय। सेलाह।
9 जे हमरा चारू कात घुमैत अछि, ओकर माथक बात, ओकर सभक ठोरक दुष् टता ओकरा सभ केँ झाँपि दियौक।
10 जरैत कोयला ओकरा सभ पर खसय। गहींर गड्ढा मे, जे फेर उठि नहि जाय।
11 कोनो दुष्ट बजनिहार पृथ् वी पर स् थापित नहि होअय, अधलाह हिंसक केँ उखाड़ि फेकबाक लेल शिकार करत।
12 हम जनैत छी जे परमेश् वर दुखी सभक काज आ गरीबक अधिकारक रक्षा करताह।
13 धर्मी लोक अहाँक नामक धन् यवाद करताह।

अध्याय 141

1 (दाऊदक भजन।) प्रभु, हम अहाँ सँ पुकारैत छी। जखन हम अहाँ केँ पुकारब तखन हमर आवाज पर कान करू।
2 हमर प्रार्थना धूप जकाँ अहाँक सोझाँ राखल जाय। आ साँझक बलि जकाँ हमर हाथ उठब।
3 हे परमेश् वर, हमर मुँहक सोझाँ पहरा राखू। हमर ठोर के दरबज्जा राखू।
4 हमर मोन केँ कोनो अधलाह काज मे नहि झुकाउ आ अधलाह काज करयवला लोकक संग दुष्कर्म नहि करू।
5 धर्मी लोकनि हमरा मारि देथिन। ई दया होयत। ई एकटा उत्तम तेल होयत जे हमर माथ नहि तोड़त, किएक तँ हमर प्रार्थना सेहो हुनका सभक विपत्ति मे होयत।
6 जखन हुनका सभक न्यायाधीश सभ पाथरक स्थान पर उखाड़ि देल जायत तखन ओ सभ हमर बात सुनत। किएक तँ ओ सभ मधुर होइत अछि।
7 हमरा सभक हड्डी चबरक मुँह पर छिड़िया गेल अछि, जेना पृथ्वी पर लकड़ी काटि कऽ फाड़ैत अछि।
8 हे परमेश् वर, हमर नजरि अहाँ दिस अछि। हमर आत्मा केँ निराश नहि छोड़ू।
9 हमरा ओहि जाल सँ बचाउ जे ओ सभ हमरा लेल राखि देने छथि आ अधर्मक काज करयवला सभक जिनका सँ।
10 दुष्ट सभ अपन जाल मे खसि पड़य, जाबत हम ओहि सँ बचब।

अध्याय 142 के अनुसार

1 (दाऊदक मस्चिल; गुफा मे रहला पर एकटा प्रार्थना।) हम अपन आवाज सँ प्रभु सँ पुकारलहुँ। हम अपन आवाज सँ प्रभु सँ विनती केलहुँ।

2 हम हुनका सामने अपन शिकायत उझलि देलियनि। हम हुनका सोझाँ अपन परेशानी देखौलियनि।
3 जखन हमर आत् मा हमरा भीतर अभिभूत भऽ गेल तखन अहाँ हमर बाट बुझि गेलहुँ। जाहि बाट मे हम चललहुँ, ओहि मे ओ सभ गुप्त रूप सँ हमरा लेल जाल लगा देने छथि।
4 हम अपन दहिना हाथ दिस तकलहुँ आ देखलहुँ, मुदा हमरा चिन्हय बला केओ नहि छल। हमर आत्माक कोनो आदमी परवाह नहि केलक।
5 हे परमेश् वर, हम अहाँ कैँ पुकारलहुँ, हम कहलियनि, “अहाँ हमर शरण आ जीवित लोकक देश मे हमर भाग छी।”
6 हमर पुकार पर ध्यान दियौक। किएक तँ हम बहुत नीचाँ आनल गेल छी। किएक तँ ओ सभ हमरासँ बेसी बलशाली छथि।
7 हमर प्राण कैँ जेल सँ बाहर निकालू, जाहि सँ हम अहाँक नामक स्तुति कऽ सकब। कारण, अहाँ हमरा संग भरपूर व्यवहार करब।”

अध्याय 143

1 (दाऊदक भजन।) हे प्रभु, हमर प्रार्थना सुनू, हमर विनती पर कान करू।
2 आ अपन नोकरक संग न्याय मे नहि जाउ, किएक तँ अहाँक नजरि मे जीवित केओ धर्मी नहि ठहराओल जायत।
3 शत्रु हमर प्राण कैँ सताबैत अछि। ओ हमर प्राण कैँ जमीन पर मारि देलक। ओ हमरा अन्हार मे रहय देलनि, जेना बहुत दिन सँ मरि गेल अछि।
4 तेँ हमर आत् मा हमरा भीतर अभिभूत अछि। हमर भीतरक हृदय उजाड़ अछि।
5 हमरा पुरान दिन मोन पड़ैत अछि। हम तोहर सभ काजक मनन करैत छी; हम तोहर हाथक काज पर मनन करैत छी।
6 हम अहाँक दिस हाथ पसारि रहल छी, हमर प्राण अहाँक पाछाँ प्यासल अछि, जेना प्यासल देश। सेलाह।
7 हे प्रभु, जल्दी-जल्दी हमर बात सुनू।
8 भोरे-भोर हमरा अहाँक प्रेमक बात सुनाउ। हम अहाँ पर भरोसा करैत छी। किएक तँ हम अपन प्राण अहाँ लग उठबैत छी।”
9 हे परमेश् वर, हमरा शत्रु सभ सँ बचाउ, हम हमरा नुकाबय लेल अहाँक लग भागि रहल छी।
10 हमरा अपन इच्छा पूरा करबाक सिखा दिअ। अहाँ हमर परमेश् वर छी, अहाँक आत् मा नीक अछि। हमरा सोझताक देश मे लऽ जाउ।
11 हे परमेश् वर, अपन नामक कारणेँ हमरा जीवित करू, अहाँक धार्मिकताक कारणेँ हमर प्राण कैँ विपत्ति सँ बाहर निकालू।
12 अपन दया सँ हमर शत्रु सभ कैँ काटि दिअ आ जे सभ हमर प्राण कैँ दुखी करैत अछि, तकरा सभ कैँ नष्ट कऽ दिअ, किएक तँ हम अहाँक सेवक छी।

अध्याय 144

1 (दाऊदक भजन।) हमर सामर्थ् य परमेश् वर कैँ धन्यवाद देल जाय, जे हमर हाथ कैँ युद्ध करबाक लेल सिखाबैत छथि आ हमर आँगुर कैँ लड़बाक लेल सिखाबैत छथि।
2 हमर भलाई आ हमर किला। हमर ऊँच बुर्ज आ हमर उद्धारकर्ता। हमर ढाल, आ जकरा पर हम भरोसा करैत छी। जे हमर लोक कैँ हमरा अधीन करैत अछि।
3 परमेश् वर, मनुष् य की होइत अछि, जे अहाँ ओकरा चिन्हैत छी! वा मनुष्यक बेटा, जे अहाँ ओकर हिसाब-किताब करू!
4 मनुष् य व्यर्थ जकाँ अछि, ओकर दिन बीतैत छाया जकाँ अछि।
5 हे परमेश् वर, अपन आकाश कैँ प्रणाम करू आ नीचाँ उतरू।
6 बिजली फेकि कऽ ओकरा सभ कैँ छिड़िया दियौक।
7 ऊपर सँ अपन हाथ पठाउ। हमरा मुक्त करू आ हमरा परदेशी बच्चा सभक हाथ सँ पैघ पानि सँ मुक्त करू।
8 ओकर मुँह व्यर्थ बजैत अछि आ ओकर दहिना हाथ झूठक दहिना हाथ अछि।
9 हे परमेश् वर, हम अहाँक लेल एकटा नव गीत गाबयब।
10 ओ राजा सभ कैँ उद्धार दैत अछि।
11 हमरा मुक्त करू आ हमरा परदेशी बच्चा सभक हाथ सँ बचाउ, जकर मुँह व्यर्थ बजैत अछि आ ओकर दहिना हाथ झूठक दहिना हाथ अछि।
12 हमरा सभक बेटा सभ जवानी मे पलल-बढ़ल पौधा जकाँ हो। जाहि सँ हमर सभक बेटी सभ कोन-कोनक पाथर जकाँ हो, जे महल जकाँ पालिश कयल जाय।
”
14 जाहि सँ हमर सभक बैल सभ श्रम करबाक लेल बलवान हो। जे कोनो तरहक भीतर घुसब आ ने बाहर निकलब। कि हमरा सभक गली-गली मे कोनो शिकायत नहि हो।
15 धन्य अछि ओ लोक, जे एहन स्थिति मे अछि।

अध्याय 145

1 (दाऊदक स्तुति भजन।) हे राजा, हमर परमेश् वर, हम अहाँक प्रशंसा करब। आ हम तोहर नाम कैँ अनन्त काल धरि आशीर्वाद देब।”
2 हम अहाँकैँ सभ दिन आशीर्वाद देब। हम तोहर नामक स्तुति अनन्त काल धरि करब।”
3 परमेश् वर पैघ छथि, आ बहुत प्रशंसा करबाक चाही। आ ओकर महानता अनजान अछि।
4 एक पीढ़ी दोसर पीढ़ी अहाँक काजक स्तुति करत आ अहाँक पराक्रमी काजक प्रचार करत।
5 हम अहाँक महिमा आ अहाँक अद्भुत काजक गौरवशाली आदरक गप्प करब।
6 लोक अहाँक भयंकर काजक पराक्रमक बात करत।
7 ओ सभ अहाँक पैघ भलाईक स्मरण प्रचुर मात्रा मे बाजत आ अहाँक धार्मिकताक गाबय।
8 परमेश् वर कृपालु छथि आ दया सँ भरल छथि। क्रोध मे मंद, आ बहुत दयालु।
9 परमेश् वर सभक प्रति नीक छथि, आ हुनकर सभ काज पर हुनकर कोमल दया छनि।
10 हे प्रभु, तोहर सभ काज तोहर स्तुति करत। आ तोहर संत सभ तोरा आशीर्वाद देथिन।”
11 ओ सभ अहाँक राज्यक महिमाक गप्प करत आ अहाँक सामर्थ्यक गप्प करत।
12 मनुष् यक पुत्र सभ कैँ हुनकर पराक्रम आ अपन राज् यक गौरवशाली महिमा कैँ प्रगट करबाक लेल।

13 तोहर राज्य अनन्त राज्य अछि, आ तोहर प्रभु सभ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अछि।
14 परमेश् वर सभ खसला केँ सहारा दैत छथि आ प्रणाम कयल सभ केँ ठाढ़ करैत छथि।
15 सभक नजरि अहाँक प्रतीक्षा मे अछि। आ अहाँ ओकरा सभक भोजन उचित समय पर दS दैत छी।
16 अहाँ अपन हाथ खोलैत छी आ सभ जीवक इच्छा केँ पूरा करैत छी।
17 परमेश् वर अपन सभ काज मे धार्मिक आ सभ काज मे पवित्र छथि।
18 परमेश् वर जे सभ हुनका पुकारैत छथि आ जे सभ हुनका सत् य पुकारैत छथि, तकरा लग मे छथि।
19 ओ ओकरा सभ केँ डरय बला सभक इच्छा केँ पूरा करत।
20 परमेश् वर अपना सँ प्रेम करयवला सभ केँ सुरक्षित रखैत छथि, मुदा सभ दुष् ट केँ ओ नष्ट कS देताह।
21 हमर मुँह परमेश् वरक स्तुति करत, आ सभ प्राणी हुनकर पवित्र नाम केँ अनन्त काल धरि आशीर्वाद दैत रहथि।

अध्याय 146

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। हे हमर प्राण, प्रभुक स्तुति करू।
2 जाबत हम जीवित रहब ताबत हम परमेश् वरक स्तुति करब।
3 ओ सभ राजपुत्र पर भरोसा नहि करू आ ने मनुष् यक पुत्र पर, जिनका मे कोनो सहायता नहि अछि।
4 ओकर साँस निकलैत छैक, ओ अपन धरती पर घुरि जाइत छैक। ओही दिन ओकर विचार नष्ट भ' जाइत छैक।
5 धन्य अछि जे याकूबक परमेश् वर अपन सहायताक लेल रखैत अछि, जकर आशा अपन परमेश् वर परमेश् वर पर अछि।
6 ओ स् वर्ग, पृथ् वी, समुद्र आ ओहि मे जे किछु अछि, तकरा बनौलक।
7 ओ दबल-कुचलल लोकक लेल न् याय करैत अछि आ भूखल केँ भोजन दैत अछि। परमेश् वर कैदी सभ केँ ढीला करैत छथि।
8 परमेश् वर आन्हर सभक आँखि खोलैत छथि, परमेश् वर झुकल लोक सभ केँ उठबैत छथि।
9 परमेश् वर परदेशी सभक रक्षा करैत छथि। ओ अनाथ आ विधवा केँ मुक्ति दैत अछि, मुदा दुष्टक बाट उल्टा-पुल्टा करैत अछि।
10 हे सियोन, अहाँक परमेश् वर, परमेश् वर सभ पीढ़ी-दर-पीढ़ी धरि राज्य करताह। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 147 के अनुसार

1 अहाँ सभ परमेश् वरक स्तुति करू। किएक तँ ई सुखद अछि। आ प्रशंसा सुन्दर होइत छैक।
2 परमेश् वर यरूशलेमक निर्माण करैत छथि आ इस्राएलक निर्वासित लोक सभ केँ एक ठाम जमा करैत छथि।
3 ओ टूटल-फूटल हृदय केँ ठीक करैत अछि आ ओकर घाव केँ बान्हि दैत अछि।
4 ओ तारा सभक संख्या कहैत छथि। ओ सभ केँ नाम सँ बजबैत छथि।
5 हमरा सभक प्रभु महान छथि आ बहुत सामर्थ्यक छथि, हुनकर बुद्धि अनंत अछि।
6 परमेश् वर नम्र लोक केँ ऊपर उठबैत छथि, दुष्ट केँ जमीन पर फेकि दैत छथि।
7 परमेश् वर केँ धन्यवादक संग गाबय। हमरा सभक परमेश् वरक वीणा पर स्तुति गाउ।
8 ओ आकाश केँ मेघ सँ झाँपि दैत छथि, पृथ् वीक लेल बरखा तैयार करैत छथि, पहाड़ पर घास उगबैत छथि।
9 ओ पशु केँ अपन भोजन दैत अछि आ कानय बला काग केँ।
10 ओ घोड़ाक बल मे प्रसन्न नहि होइत अछि, मनुष् यक टांग मे प्रसन्न नहि होइत अछि।
11 परमेश् वर केँ ओहि सभ मे प्रसन्नता होइत छनि जे हुनका सँ डरैत छथि आ जे हुनकर दयाक आशा रखैत छथि।
12 हे यरूशलेम, परमेश् वरक स्तुति करू। हे सियोन, अपन परमेश् वरक स्तुति करू।
13 किएक तँ ओ तोहर फाटक सभक सलाख सभ केँ मजगूत कS देने छथि। ओ अहाँक भीतर अहाँक सन्तान सभ केँ आशीर्वाद देने छथि।
14 ओ अहाँक सीमा मे शान्ति करैत छथि आ अहाँ केँ नीक सँ नीक गहूम सँ भरैत छथि।
15 ओ अपन आज्ञा पृथ्वी पर पठबैत छथि, हुनकर वचन बहुत तेजी सँ दौड़ैत अछि।
16 ओ ऊन जकाँ बर्फ दैत अछि, छाँव जकाँ ठंढा केँ छिड़िया दैत अछि।
17 ओ अपन बर्फ केँ टुकड़ी जकाँ फेकि दैत अछि।
18 ओ अपन वचन पठा कS ओकरा सभ केँ पिघलाबैत अछि, अपन हवा बहबैत अछि आ पानि बहबैत अछि।
19 ओ याकूब केँ अपन वचन, अपन नियम आ न्याय इस्राएल केँ देखाबैत छथि।
20 ओ कोनो जाति के संग एहन व्यवहार नहि केने छथि, आ हुनकर न् याय के बात ओ सभ ओकरा नहि चिन्हलनि। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 148

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। स्वर्ग सँ प्रभुक स्तुति करू, ऊँच-ऊँच पर हुनकर स्तुति करू।
2 हे ओकर सभ स् वर्गदूत, ओकर स्तुति करू।
3 हे सूर्य आ चान, ओकर स्तुति करू।
4 हे आकाशक आकाश आ आकाश सँ ऊपरक पानि, हुनकर स्तुति करू।
5 ओ सभ परमेश् वरक नामक स्तुति करथि, किएक तँ ओ सभ आज्ञा देलनि आ ओ सभ सृजित भेलाह।
6 ओ ओकरा सभ केँ अनन्त काल धरि स्थिर कयलनि।
7 हे अजगर आ सभ गहींर मे, पृथ् वी सँ परमेश् वरक स्तुति करू।
8 आगि, आ ओला। बर्फ, आ वाष्प; तूफानी हवा ओकर वचन पूरा करैत:
9 पहाड़ आ सभ पहाड़ी। फलदार गाछ आ सभ देवदार।
10 जानवर आ सभ पशु-पक्षी। रेंगैत चीज आ उड़ैत चिड़ै।
11 पृथ्वीक राजा आ सभ लोक। राजकुमार आ पृथ् वीक सभ न्यायाधीश।
12 युवक आ कुमारि दुनू। बूढ़-पुरान, आ बच्चा सभ:

13 ओ सभ परमेश् वरक नामक स्तुति करथि, किएक तँ हुनकर नाम मात्र उत्तम अछि। ओकर महिमा पृथ्वी आ स्वर्ग सँ ऊपर अछि।
14 ओ अपन प्रजाक सींग कें सेहो ऊपर उठबैत छथि, जे अपन सभ पवित्र लोकक स्तुति अछि। इस्राएलक सन् तान मे सँ जे हुनका लगक लोक छल। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 149

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। पवित्र लोकक मंडली मे परमेश् वर कें नव गीत गाउ आ हुनकर स्तुति करू।
2 इस्राएल हुनका बनौनिहार मे आनन्दित होथि, सिय्योनक लोक सभ अपन राजा मे आनन्दित होथि।
3 ओ सभ नाच मे हुनकर नामक स्तुति करथि, आ वीणा बजा कऽ हुनकर स्तुति गाबय।
4 किएक तँ परमेश् वर अपन प्रजा मे प्रसन्न होइत छथि, ओ नम्र लोक कें उद्धारक संग शोभित करताह।
5 पवित्र लोक सभ महिमा मे आनन्दित होथि, ओ सभ अपन बिछाओन पर जोर-जोर सँ गाबय।
6 हुनका सभक मुँह मे परमेश् वरक ऊँच-ऊँच स्तुति आ हाथ मे दूधारी तलवार रहय।
7 जाति-जाति सभक प्रतिशोध आ लोक सभ कें सजाय देब।
8 अपन राजा सभ कें जंजीर सँ बान्हि कऽ बान्हि कऽ अपन कुलीन लोक सभ कें लोहाक बेड़ी सँ बान्हि देथिन।
9 हुनका सभ पर लिखल गेल न् याय कें पूरा करबाक लेल। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।

अध्याय 150

1 अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू। हुनकर पवित्र स्थान मे परमेश् वरक स्तुति करू, हुनकर सामर्थ् यक आकाश मे हुनकर स्तुति करू।
2 ओकर पराक्रमक कारणेँ ओकर स्तुति करू।
3 तुरहीक आवाज सँ ओकर स्तुति करू।
4 घनघोर आ नाच सँ ओकर स्तुति करू।
5 जोर-जोर सँ झाँग पर ओकर स्तुति करू।
6 जे किछु साँस रखैत अछि, से परमेश् वरक स्तुति करऽ। अहाँ सभ प्रभुक स्तुति करू।